आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

वर्ष 6 अंक 12
सितम्बर 2016 पृष्ठ 84

साधना

विशेष

उपन्यासिका

आयुर्वेद

योग

ज्योतिष

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
अभिनव प्रिन्टर्स-K-37,
उद्योग नगर, इण्डस्ट्रियल एरिया
रोहतक रोड, दिल्ली-41
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय
हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रतिः 30/-
वार्षिकः 315/-

:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-27352248, 011-27356700
नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन : 0291-2433623, 2432209, 2432010
WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 315/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण मानें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

☆ प्रार्थना ☆

श्री बीजरूपमपरां जगदैक हेतुं,
ऐश्वर्यभावभरितं निखिलं नमामि।
गं गणपतिं परिनमन् सुमुखैकदन्तं;
लाभं शुभं ननु करोतु च दीपमाला।।

'श्री' बीज जिनका मूल स्वरूप है, संसार की एक मात्र जननी, भगवती लक्ष्मी को एवं मंगलमूर्ति एकदन्त 'गं' बीज युक्त गणपति को तथा समस्त ऐश्वर्य से पूर्ण भगवान निखिल को भावपूर्ण नमन करता हूँ। ये तीनों महाशक्ति इस दीप माला को शुभ तथा लाभ से अविघ्न करें।

✸ चित्तं रखेय्य मेधावी ✸

बौद्ध धर्म, जिसकी धर्म–पताका केवल भारतवर्ष में ही नहीं, एक काल में लगभग आधे विश्व पर फहराई और जो आज भी चीन, जापान व दक्षिण पूर्व के देशों की जीवन शैली है, उसका मर्म केवल उसके दर्शन में ही नहीं, वरन् उन व्यक्तित्वों की कार्यशैली में भी छिपा है, जिन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार में अपने जीवन को उत्सर्ग कर दिया। ऐसे ही व्यक्तियों में भगवान बुद्ध के शिष्य आनन्द का नाम आता है।

...एक अवसर का प्रसंग है, कि राजा प्रसेनजित ने विहार (बौद्ध संघ) के लिए पाँच सौ रेशमी चादरें भेंट की, जिन्हें आनन्द ने स्वीकार कर लिया। इसका ज्ञान होने पर भगवान बुद्ध ने आनन्द से कारण जानना चाहा। भगवान बुद्ध ने पूछा – "इन नई चादरों का क्या करोगे आनन्द?"

"इन्हें भिक्षुओं को बाँट दूँगा भन्ते।" आनन्द का उत्तर था।

"किन्तु पुरानी चादरों का क्या करोगे आनन्द?"

"उनसे भिक्षुओं के चीवर (पहनने के वस्त्र) बनवाऊंगा भन्ते!"

"पुराने चीवरों का क्या करोगे आनन्द?"

"उनसे परदे बनवा दूँगा भन्ते!"

"किन्तु पुराने परदों का क्या उपयोग होगा?"

"उनसे झाड़न बन जायेंगे भन्ते!"

"और पुराने झाड़नों का क्या उपयोग होगा?"

"उन्हें मिट्टी के साथ कूट–पीस कर दीवारों पर लेप में प्रयोग ले लूँगा भन्ते!"

...इतनी सूक्ष्म दृष्टि रखने वाले शिष्यों के कारण ही बौद्ध धर्म ने जन–जन के हृदय में अपना स्थान बना लिया था। भगवान बुद्ध ने जिस संयम और शीलता का उपदेश दिया था, उसी के जीवित प्रतीक बनने की चेष्टा की थी उनके शिष्यों ने। इसी कारणवश आज प्राय: तीन हजार वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद भी बौद्ध धर्म एक सुदृढ़ स्तम्भ की भांति स्थिर है, जबकि इस अवधि में पता नहीं कितने सम्प्रदाय बने और मिट गए। यही संघ निर्माण की मूल चेतना होती है। चादरों की उपरोक्त घटना तो एक दृष्टांत भर है...

सेवा त्याग और जीवन को उचित रूप से जीने का क्या भाव है गुरु गोरखनाथजी के शब्दों को गुरुदेव ने सहज भाव से दिया है जिससे समझा जा सके कि समाज में रहकर समाज से परे होकर कैसे अद्वितीय बन सकते हैं। सद्‌गुरुदेव की ओजस्वी वाणी में एक महान कथन -

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

भगवती जगदम्बा सकल विश्व की मातृ स्वरूपा आध्यात्मिक देवी हैं, जो अपने भक्तों और साधकों की उसी प्रकार से रक्षा करती है जिस प्रकार से एक माँ अपने अबोध बालक की रक्षा और पालन करती है। वह छोटा बच्चा तो कुछ भी नहीं जानता, न उसे इस बात का ज्ञान होता है कि माँ का ममत्व क्या होता है, न उसे इस बात की चिन्ता होती है कि माँ कितने कष्ट और दुःख झेल कर उसका पालन पोषण कर रही है और न उसे इस बात की फिक्र होती है कि यदि कोई विपत्ति बाधा या परेशानी आ जाएगी तो माँ को कितना तनाव, कितनी वेदना और कितना दुःख सहन करना पड़ेगा। इसीलिए तो बालक निश्चिंत होता है, इसलिए तो माँ की गोद में निर्भीक होकर वह विश्राम करता है, और माँ सभी दृष्टियों से उस बालक की रक्षा करती है, उसका मार्ग दर्शन करती है, उसका पालन पोषण करती है, और उसके जीवन में आने वाली बाधाओं को, दूर करने में सदैव तत्पर रहती है।

भगवती जगदम्बा का भी ऐसा ही स्वरूप है। वह केवल देवी ही नहीं वह केवल मातृ स्वरूपा ही नहीं, अपितु उसके तो कई नाम, कई स्वरूप, कई चिन्तन कई विचार, कई धारणाएं हैं। वह देवताओं का पुंज हैं क्योंकि भगवती जगदम्बा का तो जन्म हुआ ही नहीं।

जब देवताओं पर विपत्ति आई तब राक्षसों ने देवताओं पर प्रहार किए जब देवताओं के लिए कोई भी आश्रय स्थल नहीं रहा, जब देवताओं ने अनुभव किया कि इन राक्षसों से छुटकारा पाना अत्यंत कठिन है तब समस्त देवताओं के शरीर से तेज पुंज निकला, ब्रह्मा के शरीर से भी, विष्णु और रुद्र के शरीर से भी इन्द्र और वरुण के शरीर से भी। जिनते भी देवता थे उन सभी के शरीर से तेज पुंज निकल कर जो मूर्ति बनी, जो चित्र बना, जो अवतरण हुआ उसे जगदम्बा, कहा गया – जो आठ भुजाओं वाली, जिनके हाथों में शस्त्र, जिनके चेहरे पर अद्‌भुत तेज जो युद्ध में हुंकार करने वाली और जो शेर पर आरूढ़ शत्रुओं का वमन करने में तत्पर निरंतर अग्रसर, होने वाली और देवताओं की सभी प्रकार से रक्षा करने वाली एक जीवन्त मूर्ति देवताओं के सामने प्रकट हुई।

देवताओं ने देखा कि यह स्वरूप तो अपने आपमें अद्‌भुत है, विलक्षण है, इसकी तेजस्विता तो अपने आप समस्त संसार में प्रकाशित हो रही है। इसकी हुंकार से सारा विश्व चलायमान होने लगा है, इसकी आवाज से दैत्यों के हृदय कांपने लगे हैं, जो प्रहार करने में वज्र की तरह समर्थ है। मगर साथ ही साथ मातृ स्वरूपा भी है जो अपने भक्तों की सदैव रक्षा करने में तत्पर रहती है। जो एक साथ ही महाकाली बनकर शत्रुओं का प्रचण्ड दमन करने में समर्थ है, महालक्ष्मी बनकर शिष्यों और साधकों को संपन्नता देने में समर्थ है, माँ सरस्वती बनकर जो मनुष्यों को बुद्धि और चेतना देने में समर्थ है। ऐसी त्रिगुणात्मक स्वरूपा भगवती जगदम्बा का देवता लोग शत् शत् वंदन करने लगे।

भगवती जगदम्बा कोई देवी ही नहीं अपितु, समस्त विश्व की अधिष्ठात्री है जो निन्द्रा रूप में भी विद्यमान है, क्षुधा रूप में भी विद्यमान है, पालन पोषण करने में भी विद्यमान है, बुद्धि की क्षेत्र में भी श्रेष्ठता और अद्वितीयता देने में समर्थ है जिसके सैकड़ों नाम हैं, सैकड़ों स्वरूप हैं, जिसके हाथ में अक्ष, परशु गदा, कलश धनु, दण्ड और विविध आयुध हैं जिनके द्वारा वह शत्रुओं पर प्रहार करती है, आने वाली परेशानियों और तनावों को दूर करने में समर्थ है, जो अपने आपमें ही श्रेष्ठ और अद्वितीय हैं, ऐसी मूर्ति, ऐसे विग्रह को देखकर देवताओं ने हर्ष तो अनुभव किया ही उन्हें यह भी विश्वास हुआ कि आने वाले समय में मानव जाति के कल्याण

के लिए भक्तों और साधकों की समस्याओं को दूर करने के लिए इससे श्रेष्ठ कोई विग्रह नहीं हो सकता।

क्योंकि यह एक मात्र ऐसा विग्रह है जो प्रहार करने में भी समर्थ है, जो उत्पत्ति करने में भी समर्थ है, जो पालन करने में भी समर्थ है। जो शत्रुओं का संहार करने में काल स्वरूप है, तो भक्तों की रक्षा और सहयोग करने में मातृ स्वरूप है। इसकी आराधना इसका चिंतन, इसकी धारणा और इसका विचार अपने आपमें जीवन का एक सौभाग्य है, जीवन की एक पूंजी है।

मार्कण्डेय एक अद्‌भुत और अद्वितीय, ऋषि हुए हैं। उन्होंने अपने मार्कण्डेय पुराण में जगदम्बा के संपूर्ण स्वरूप का चिंतन किया, विचार किया। उनकी उत्पत्ति उनके कार्य और किस प्रकार से भगवती जगदम्बा को प्रसन्न किया जाएं, साधा जाए उनसे सहयोग लेने के लिए प्रयत्न किया जाए इसका विस्तृत विवेचन मार्कण्डेय ने अपने ग्रंथ में किया और उन्होंने स्पष्ट किया कि भगवती जगदम्बा तो भगवान शिव मृत्युंजय का साक्षात विग्रह है, क्योंकि शिव अर्थात् कल्याण वहीं हो सकता है जहां शक्ति है।

शिव और शक्ति का अद्‌भुत समन्वय है। जो मनुष्य कायर है, बुजदिल है, जो हताश परेशान और चिंतित है वह कल्याणमय नहीं बन सकता। वह न तो अपना कल्याण कर सकता है और न समाज, देश और विश्व का कल्याण कर सकता है। यह तभी हो सकता है जब उसमें शक्ति का संचरण हो, जब उसमें निर्भीकता आए जब उसमें प्रहार करने की क्षमता आए। और यह स्थितियां–बलवान होना, क्षमता प्राप्त करना, निर्भीकता होना, प्रहार करना और कल्याणमय होना यह जीवन की पूर्णता है।

इसीलिए इसे शिव और शक्ति का सामुज्य रूप माना गया है। जो शिव भक्त है उन्हें तो शक्ति की साधना करनी ही चाहिए क्योंकि बिना शक्ति के शिव की आराधना हो ही नहीं सकती। और जो शक्ति के उपासक है, उनके लिए तो भगवान शिव आराध्य है ही जो मृत्यु पर विजय प्राप्त करने में जो आने वाली बाधाओं को दूर करने में, जो काल को दूर धकेलने में समर्थ हैं।

इसीलिए शिव और शक्ति का समन्वय उसकी साधना और आराधना जीवन की पूर्णता मानी गई

मार्कण्डेय पुराण में बताया गया कि जो साधक पूर्ण स्वरूप के साथ भगवती जगदम्बा को स्पष्ट कर लेता है, साध लेता है उसकी आराधना करता है उसे अपने हृदय में स्थापित करता है वह निश्चय ही शिव का प्रिय बन जाता है।

ऐसा व्यक्ति त्रैलोक्य विजय प्राप्त करने में भी समर्थ होता है। उसके जीवन में किसी प्रकार का अभाव या परेशानी, चिन्ता या तकलीफ हो ही नहीं सकती। वह निर्भीक होकर विचरण करने में समर्थ होता है।

सैकड़ों देवताओं की साधना या आराधना करने की अपेक्षा मात्र जगदम्बा की साधना करने से भी समस्त देवताओं की साधना सम्पन्न हो जाती है क्योंकि भगवती जगदम्बा तो समस्त देवताओं के तेज स्वरूप का पुंज है। और इसीलिए शास्त्रों में जगदम्बा को श्रेष्ठतम आराध्या माना गया, जीवन की पूर्णता माना गया, जीवन की श्रेष्ठता और अद्वितीयता माना गया।

जो साधक जगदम्बा को छोड़कर अन्य देवताओं की साधनाओं में समय व्यतीत करता है वह वैसा ही है जैसे जड़ में पानी न देकर पत्तों और डालियों को सींचता है। जीवन की पूर्णता और पौधे का लहलहाना तोजड़ में पानी देने से ही संभव है। ठीक इसी प्रकार से जीवन को निर्भीक और निश्चिंत बना देने की कला और क्रिया तो जगदम्बा साधना से ही संभव है। और जो इसकी साधना सीख लेता है, जिसे जगदम्बा को प्रसन्न करने की कला का ज्ञान है उसके जीवन में किसी प्रकार का अभाव रह ही कैसे सकता है।

फिर जगदम्बा की साधना का कहीं कोई निषेध है ही नहीं, चाहे वह शैव हो, चाहे वैष्णव हो, विष्णु की आराधना करने वाला हो, चाहे तांत्रिक हो, चाहे योगी हो, चाहे संन्यासी हो, चाहे, गृहस्थ हो, चाहे किसी भी धर्म को मानने वाला हो, चाहे किसी भी चिंतन या विचार का प्रणेता हो, जगदम्बा की साधना तो सबके लिए सर्वसुलभ है। किसी भी युक्ति से, किसी भी स्थिति में जगदम्बा की साधना सम्पन्न की जा सकती है।

सैकड़ों प्रकार हैं, जगदम्बा की साधना सम्पन्न करने के, मंत्रों के माध्यम से, स्तुति-आराधना के माध्यम से, तंत्र के माध्यम से, योग के माध्यम से, रुद्रायमल के माध्यम से, श्मशान साधना के माध्यम से, वैष्णव साधना के माध्यम से दैविक क्रिया साधना के माध्यम से, अघोर पंथ से, नाथ पंथ

से, और जितने भी पंथ, जितने भी संप्रदाय उन सभी संप्रदायों में भगवती जगदम्बा की साधना का चिंतन है विचार है।

बड़े आश्चर्य की बात है कि एक मात्र जगदम्बा की ही ऐसी साधना है जो प्रत्येक पंथ और प्रत्येक संप्रदाय में विद्यमान है। प्रत्येक प्रकार का व्यक्ति, साधक, संन्यासी, योगी इस प्रकार की साधना को सम्पन्न करने में गौरव अनुभव करता है।

और फिर कलियुग में तो ***कलौ चण्डी विनायकौ***

कलियुग में तो केवल गणपति और जगदम्बा ही शीघ्र सिद्धि देने वाले देवता माने गए हैं। अन्य देवताओं की साधना जहां कठिन है, लंबी है, वहां जगदम्बा की साधना सरल है, सामान्य है स्पष्ट है, जो शीघ्र सिद्धि दायक है, जिसकी साधना करने से हाथों हाथ फल मिलता है। वह चाहे रक्षा करने की साधना हो, वह चाहे धन प्राप्त करने की साधना हो, वह चाहे व्यापार वृद्धि की साधना हो, वह चाहे परिवार की सुरक्षा और परिवार की उन्नति की साधना हो, वह चाहे स्वास्थ्य कामना की साधना हो और चाहें अन्य फल इच्छा की साधना हो। सभी प्रकार की इच्छाओं का परिपालन जगदम्बा की साधना में निहित है।

और साधक जब साधना सम्पन्न करता है तो साधना सम्पन्न होते-होते ही उसको फल अनुभव होने लग जाता है उसका कार्य सम्पन्न हो जाता है। इसीलिए तो कलियुग में जगदम्बा की साधना सर्वश्रेष्ठ साधना कही गई है, इसीलिए तो कलियुग में समस्त साधकों को स्पष्ट किया गया कि जो जगदम्बा साधना नहीं कर सकता या नहीं करता वह अपने आपमें ही नुकसान प्राप्त करता है क्योंकि इस साधना से जीवन की संपूर्णता का बोध स्वत: होने लगता है, क्योंकि इस साधना के माध्यम से साधक वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है जो उसका अभीष्ट लक्ष्य है। चाहे मुकदमें में विजय प्राप्त करनी हो या चाहे आर्थिक उन्नति की इच्छा हो।

यह अलग बात है कि इस साधना को समझना और सीखना आवश्यक है। पर इस साधना में जटिलता नहीं है। विशेष क्रिया कलाप नहीं है। किसी प्रकार की न्यूनता नहीं है। जगदम्बा की साधना तो अत्यंत सरल और सामान्य है जिसे कोई भी बालक या वृद्ध साधक या साधिका, सधवा या विधवा, मजदूर या मालिक कर सकता है चाहे शैव हो, चाहे वैष्णव हो चाहे किसी भी जाति का हो, वर्ण का हो, रंग

का हो जगदम्बा की साधना के द्वार तो सबके लिए खुले हैं।

यह एक ऐसी साधना है जो कम से कम उपकरणों के द्वारा सम्पन्न की जा सकती है। इसमें कोई लम्बा-चौड़ा मंत्र नहीं होता, लम्बी चौड़ी क्रिया कलाप नहीं होती, किसी प्रकार का नुकसान नहीं हो सकता। मार्कण्डेय ने स्पष्ट किया है कि यदि कोई साधक जगदम्बा की साधना सम्पन्न करता है और साधना बीच में ही छूट जाए साधना अधूरी रह जाए अनुष्ठान किसी कारण से पूरा न हो सके या अनुष्ठान में कोई त्रुटि रह जाए तब भी उसे कोई विपरीत प्रभाव देखने को नहीं मिलता, तब भी उस साधक का किसी प्रकार से अहित नहीं होता।

यह अलग बात है कि अगर साधना को बीच में ही छोड़ दिया जाता है तो उसका जितना फल मिलना चाहिए उसका उतना फल न मिले उसका कुछ आंशिक फल ही मिले पर यह स्पष्ट है कि फल अवश्य मिलता है। साधक को किसी प्रकार का विपरीत फल नहीं प्राप्त होता, साधक का अहित नहीं होता।

इसीलिए तो शास्त्रों में जगदम्बा की साधना को जीवन की श्रेष्ठतम साधना मानी गई है। इसीलिए तो मानव जाति के कल्याण के लिए इस साधना को प्राथमिकता दी गई। इसीलिए तो जीवन के सारे अभावों को दूर करने वाली यह साधना बताई गई। इसीलिए तो वेद, उपनिषद, पुराण आदि प्रत्येक ने जगदम्बा की साधना को महत्व दिया है, उन्होंने अनुभव किया, विचार किया कि इस साधना के द्वारा हम अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, समाधान ही नहीं कर सकते उन बाधाओं और संकटों से पीछा छुड़ा सकते हैं। और जीवन को ज्यादा सुगम, ज्यादा सरल, ज्यादा सुखमय बना सकते हैं।

जगदम्बा साधना अपने आपमें ही एक परिपक्व और पूर्ण साधना है वह चाहे नवार्ण मंत्र साधना हो, वह चाहे स्तोत्र साधना हो वह चाहे स्तुति हो और वह चाहे चण्डी प्रयोग हो। श्मशान प्रयोग से भी चण्डी को सिद्ध किया जा सकता है और घर में बैठ कर भी भगवती की साधना सम्पन्न की जा सकती है। दिन को या रात्रि को, सुबह या शाम किसी भी समय जब साधक मनोयोग पूर्वक साधना करने की इच्छा प्रकट करे उस समय इस साधना को किया जा सकता है। यही तो इसकी विशेषता है। इसीलिए इसे जीवन का एक अद्‌भुत प्रयोग कहा गया है। मैंने अपने जीवन में स्वयं अनुभव किया है कि जो कार्य अन्य प्रकार से या अन्य

देवताओं की साधना से सम्पन्न नहीं होता वह भगवती जगदम्बा की साधना से शीघ्र, सहज और सामान्य तरीके से भी सम्पन्न हो जाता है। मैंने कई बार इस साधना के माध्यम से अपनी समस्याओं समाधान किया है और उन स्थितियों को प्राप्त किया है जो अपने आपमें अपराजेय हैं, अप्रतिम हैं, अद्वितीय हैं। जो श्रेष्ठता और उच्चता अन्य साधनाओं के माध्यम से प्राप्त नहीं हो सकती वह इस साधना के द्वारा सहज संभव है, शरीर को किसी भी परिस्थिति में अनुकूल बना लेना, कहीं पर किसी भी प्रकार से विचरण कर लेना, शत्रुओं के बीच भी स्थित प्रज्ञ बने रहना और शरीर के चक्रों को जाग्रत कर लेना, कुण्डलिनी और सहस्रार के रहस्यों को प्राप्त कर लेना, ब्रह्माण्ड में रह कर ब्रह्माण्ड के रहस्यों को ज्ञात कर लेना भी इस साधना के द्वारा संभव है तो भौतिक जीवन की कामनाओं की पूर्ति भी इस साधना के द्वारा सहज संभव है।

चाहे किसी भी प्रकार की इच्छा हो, चाहे किसी भी प्रकार का चिंतन हो, ऐसा हो ही नहीं सकता कि हम इस साधना को सम्पन्न करें, और उसका फल प्राप्त न हो। और इसके साथ-साथ संन्यास जीवन की उच्चता को भी प्राप्त करना और श्रेष्ठतम गुरु को प्राप्त कर लेना इस साधना के द्वारा ही संभव है। गुरु की प्रसन्नता और गुरु की निकटता प्राप्त कर लेना केवल जगदम्बा साधना के द्वारा संभव है। समस्त विद्याओं ज्ञान और साधनाओं में निष्णात हो जाना, उच्चतम भाव भूमि पर स्थापित हो जाना, कंठ में सरस्वती को स्थापित कर हजारों-हजारों, श्लोकों और ग्रंथों को स्मरण कर लेना केवल मात्र जगदम्बा साधना के द्वारा सहज संभव है और साथ ही इस साधना के द्वारा वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है जो हमारा अभीष्ट है। मैं कुछ ऐसी ही साधनाएं स्पष्ट कर रहा हूँ जो प्रत्येक साधक या व्यक्ति के लिए आवश्यक, उपयोगी और अनिवार्य है।

भगवती जगदम्बा की साधना और पूजा अर्चना अपने आपमें एक अनिर्वचनीय जीवन का सोपान है, जब जीवन का सौभाग्य उदय होता है तब साधक भगवती जगदम्बा की साधना, पूजा विधिवत कर पाता है। यह आवश्यक नहीं है कि यह साधना नवरात्रि में ही हो, यह वर्ष में किसी भी दिन किसी भी समय कर सकते हैं, और साल के सारे 365 दिन भगवती जगदम्बा के ही दिन कहे जाते हैं वे चाहे नवरात्रि के दिन हों

और चाहे किसी भी प्रकार का अन्य पर्व, त्यौहार और उत्सव हो।

जीवन में समस्त प्रकार के दुख ताप, कष्ट, पीड़ा, अभाव और शत्रुओं के नाश के लिए भगवती जगदम्बा की साधना से ज्यादा उत्तम और कोई साधना विधि नहीं है। यदि मंत्र जप न भी किया जाए और विधिवत पूजन अर्चन कर दिया जाए तब भी अपने आपमें श्रेष्ठतम उपलब्धि प्राप्त होती है। इसके लिए किसी विशेष मुहूर्त या विशेष समय की भी आवश्यकता नहीं होती। तथ्यों का यदि ध्यान साधक रखे तो ज्यादा अच्छा रहता है। प्रथम तो साधक स्नान करके पीले वस्त्र पहन कर दक्षिण दिशा की ओर मुख करके बैठे। सामने भगवती जगदम्बा का चित्र स्थापित हो। कुछ साधना सामग्री भी हो जिसमें जलपात्र, कुंकुम, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य और घी का दीपक हो। साधक पूर्ण शांत-चित्त से साधना करे। प्रात:काल सूर्योदय से पहले का समय ज्यादा उचित रहता है और रात्रि को यदि साधना की जाए तो रात्रि का दस बजे के बाद समय ज्यादा उचित रहता है। साधक को चाहिए कि पूर्ण क्षमता और भावना के साथ इस साधना को सम्पन्न करें।

जगदम्बा साधना के कई स्वरूप हैं। मैं इनमें से कुछ स्वरूपों की साधना यहां स्पष्ट कर रहा हूँ। एक तो नवार्ण मंत्र साधना है। नवार्ण मंत्र साधना का तात्पर्य अपने जीवन की समस्त आध्यात्मिक इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति करना है, ज्ञान प्राप्त करना, कष्ट में वाग्देवी सरस्वती को स्थापित करना, सहस्रार जाग्रत कर कुण्डलिनी के माध्यम से ब्रह्माण्ड की चेतना को प्राप्त करना यह सभी नवार्ण मंत्र की साधना से सहज संभव है। या फिर ध्यान की गहराइयों में उतरना, सूक्ष्म शरीर और सारे सातों शरीरों को जाग्रत करना, सिद्धाश्रम में प्रवेश प्राप्त करना, यह सब भी नवार्ण मंत्र साधना द्वारा संभव हो सकता है। परंतु आवश्यक है कि साधक पूर्ण श्रद्धा और एकाग्रता से साधना सम्पन्न करें, मंत्र जप पूर्ण करे।

इसके लिए **नवार्ण यंत्र** की आवश्यकता होती है जो अपने आपमें ही सिद्ध हो, चेतना युक्त हो, प्राण प्रतिष्ठित एवं दिव्य हो क्योंकि यंत्र का सीधा संबंध साधक के चित्त पर और उसकी क्रिया पर होता है जिसकी वजह से उसे साधनाओं में सिद्धि प्राप्त होती है। इस नवार्ण मंत्र के नौ अक्षर हैं इसीलिए यह नववर्ण या नवार्ण मंत्र कहा गया।

हकीक माला से या स्फटिक माला से रात्रि को इस
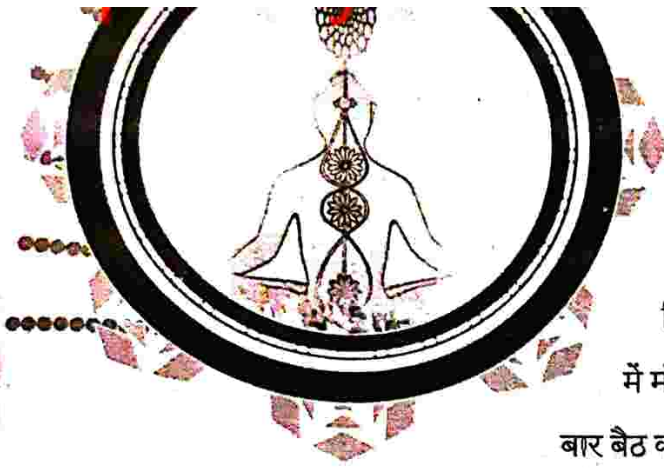
साधना को सम्पन्न करें और नौ लाख मंत्र जप इक्कीस दिन में सम्पन्न कर लें। इसके लिए समय अवधि और मंत्र जप संख्या निश्चित है। अनुष्ठान के रूप में साधना करने से ही तो सिद्धि प्राप्त होती है। इससे साधक स्वयं हिसाब लगा लें कि उसे रोज कितना मंत्र जप सम्पन्न कर सकता है। वह चाहे तो एक ही बैठक में मंत्र जप सम्पन्न कर सकता है और चाहे तो दिन में दो बार या तीन बार बैठ कर भी मंत्र जप सम्पन्न कर सकता है।

उच्च कोटि के योगी और संन्यासी जो ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जानने के लिए प्रेरित होते है। वे नवार्ण यंत्र की साधना को श्रेष्ठता देते हैं। वे चाहे अन्य साधनाएं सम्पन्न करें या नहीं करें नवार्ण साधना तो सम्पन्न करते ही हैं। और यह बात भी निश्चित है कि जब तक नवार्ण सिद्धि प्राप्त नहीं हो जाती तब तक हृदय कमल विकसित नहीं हो सकता, तब तक मूलाधार जाग्रत नहीं हो सकता, तब तक चेतना पुंज स्पष्ट नहीं हो सकता, तब तक कुण्डलिनी जागरण नहीं हो सकता, तब तक ब्रह्माण्ड भेदन नहीं हो सकता, तब तक सातों शरीरों को जाग्रत नहीं किया जा सकता, तब तक सहस्रार भेदन नहीं हो सकता। यह सब कुछ तो नवार्ण साधना के द्वारा ही संभव है क्योंकि इसका प्रत्येक बीज अपने आपमें महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के प्रतीक हैं।

यह मंत्र अपने आपमें अहंकार को समाप्त करने वाला है, यह व्यक्ति को अच्छी प्रवृतियों की ओर अग्रसर करने में सहायक है और मानसिक तनावों को दूर करने में यह मंत्र सर्वोत्तम है, क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति अपने आपको अपने परिवेश को जीवन को, जीवन के रहस्यों को समझ सकता है, आत्मसात कर सकता है। वह इस मंत्र के द्वारा अन्य सभी साधनाओं में सिद्धि प्राप्त कर सकता है और वह सब कुछ अनुभव कर सकता है जो जीवन के लिए आवश्यक है। मात्र जिन्दा रहना या मात्र सांस लेते रहना ही जीवन नहीं है, या खाना, पीना, बच्चे पैदा करना ही जीवन नहीं है अपितु जीवन के बारे में चिंतन करना मनन करना और समझना भी जरूरी है।

इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि जो जीवन में पूर्णता चाहते हैं उन्हें चाहिए कि वे नवार्ण साधना को सम्पन्न करें। यह साधना किसी भी महीने की किसी भी तिथि को सम्पन्न की जा सकती है केवल इसमें नवार्ण यंत्र की आवश्यकता

होती है इसके अलावा किसी भी प्रकार के दीप या अगरबत्ती की अनिवार्यता नहीं होती। आप चाहे तो लगा सकते हैं किन्तु ऐसा अनिवार्य नहीं है। इसमें यह भी नहीं देखा जाता कि साधक किस दिशा की ओर मुख करके बैठा है या किस प्रकार का आसन है। आवश्यकता इस बात की है कि साधक पूर्णता के साथ, श्रद्धा के साथ और पूर्ण एकाग्रता के साथ नवार्ण मंत्र की निश्चित संख्या का जप सम्पन्न कर लें। और यह नवार्ण मंत्र हैं - **ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।** इसमें बिन्दुओं का उच्चरण 'म' का नहीं 'ग' का है, एम नहीं एंग है। यह अपने आपमें छोटा सा मंत्र होते हुए भी अत्यंत तीव्र प्रभाव उत्पादक है, तुरंत असर पैदा करने वाला है और सारे शरीर को चेतना युक्त बनाने में और मन को शुद्ध करने में सक्षम एवं समर्थ है क्योंकि इस मंत्र के द्वारा जीवन को चेतना युक्त बनाया जा सकता है। इस मंत्र के द्वारा जीवन को पूर्णता और श्रेष्ठता और उच्चता की ओर अग्रसर किया जा सकता है। क्योंकि इस मंत्र के द्वारा जहां महालक्ष्मी को प्रसन्न कर अपार धन वैभव प्राप्त किया जा सकता है वहीं महाकाली का आशीर्वाद प्राप्त कर शत्रुओं, चिंताओं, कष्टों एवं समस्याओं से मुक्त हुआ जा सकता है। क्योंकि इस मंत्र के द्वारा ही महासरस्वती को भी सिद्ध कर ज्ञान एवं बुद्धि को प्राप्त किया जा सकता है। और साथ ही साथ भगवती जगदम्बा को प्रसन्न कर उनके साक्षात दर्शन करने के लिए यह मंत्र अद्वितीय एवं सर्वोत्तम है।

यह जरूरी है कि इस साधना को सम्पन्न करने से पूर्व यदि साधक या साधिका किसी योग्य गुरु से नवार्ण दीक्षा प्राप्त कर लेता है तो उत्तम रहता है, या दूसरे शब्दों में कहा जाए तो उसे नवार्ण दीक्षा प्राप्त करनी ही चाहिए क्योंकि इसमें नवार्ण मंत्र अपने आपमें ही साधक के शरीर, मन और आत्मा में स्थापित कर दिया जाता है। और सारा रोम-रोम, शरीर का एक-एक कण नवार्ण मंत्र उच्चरित करने लग जाता है।

यह दीक्षा अपने आपमें जटिल है और किसी सामान्य गुरु के बस की बात नहीं है कि वह इस प्रकार की दीक्षा प्रदान कर सके। यह तो एक तेजस्वी दीक्षा है। एक दिव्य दीक्षा है, एक सर्वश्रेष्ठ दीक्षा है और जो स्वयं समर्थ गुरु हैं, जिन्होंने जगदम्बा साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न कर रखा है, जिन्होंने भगवती जगदम्बा को प्रत्यक्ष प्रकट किया है, जिन्होंने जगदम्बा के पूर्ण बिम्ब को अपने हृदय में जाग्रत कर स्थापित किया है वही इस साधना का

प्रामाणिक ज्ञान प्रदान कर सकता है। यदि साधक को या शिष्य को या किसी भी व्यक्ति को ऐसे समर्थ और क्षमतावान गुरु प्राप्त हो जाएं और चाहे उसने अन्य किसी भी प्रकार की दीक्षा प्राप्त की हो, उसे चाहिए कि उस गुरु से प्रार्थना कर इस प्रकार की दीक्षा को प्राप्त करें। अपने शरीर में नवार्ण मंत्र को स्थापित करें, अपने भीतर भगवती जगदम्बा की चेतना को आत्मसात करें और फिर उनकी बताई हुई विधि के अनुसार नवार्ण मंत्र का जप कर अनुष्ठान सम्पन्न करें। ऐसा करने पर नवार्ण सिद्धि प्राप्त होती ही है।

यदि साधक चाहे या उसकी इच्छा हो तो यह अनुष्ठान सम्पन्न होते होते भगवती जगदम्बा के साक्षात स्वरूप में दर्शन हो जाते हैं। यही तो इस मंत्र की विशेषता है, उच्चता है, दिव्यता है और जीवन में चाहिए ही क्या, क्योंकि हम साधना सम्पन्न करें, और माँ भगवती जगदम्बा हमारे सामने साक्षात जाज्वल्यमान स्वरूप में उपस्थित हो, हम गदगद कंठ, से उनकी स्तुति करें, उनके चरणों में बैठें, उनका वरद हस्त अपने सिर पर अनुभव करें, उनके दर्शन करें, उनका आशीर्वाद प्राप्त करें और अपने जीवन को धन्य करके उस जीवन को पूर्णता दे सकें।

यह सब कुछ इस मंत्र जप और इस अनुष्ठान के द्वारा संभव है। जगदम्बा की साधना का एक दूसरे प्रकार का अनुष्ठान भी है जो समस्त भौतिक इच्छाओं की पूर्ति करने में सहायक है। हमारे जीवन में कई प्रकार की इच्छाएं, चाहे या न चाहें होती ही है - धन की इच्छा व्यापार वृद्धि की इच्छा, नौकरी में प्रमोशन की इच्छा, शरीर को स्वस्थ बनाए रखने की इच्छा, धन की रक्षा, करने की इच्छा, राज्य की तरफ से किसी प्रकार की अड़चन या बाधा न आए इस प्रकार की इच्छा सुखी परिवार या कुटुम्ब की इच्छा, पुत्र प्राप्ति की इच्छा, परीक्षा में सफलता प्राप्त करने की इच्छा, एक मकान बनाने की इच्छा, शीघ्र एवं अनुकूल विवाह सम्पन्न होने की इच्छा, परिवार में प्रसन्नता और शांति की इच्छा ऐसी कई इच्छाएं हो सकती है।

और इन इच्छाओं की पूर्ति के लिए कोई अलग-अलग विधान नहीं है, अलग-अलग मंत्र नहीं है, एक विशिष्ट मंत्र के माध्यम से इन समस्त इच्छाओं की पूर्ति सहज संभव है। यह विधि अपने आपमें गोपनीय और दुर्लभ रही है। उच्चकोटि के एक सिद्धाश्रम के योगी से यह साधना प्राप्त हुई थी जिन्हें जगदम्बा का अभीष्ट ज्ञान और सिद्धि

प्राप्त थी, जो सही अर्थों में जगदम्बा में लीन हो चुके थे, जिनके सामने जगदम्बा प्रत्यक्ष प्रकट होती ही थी, और स्वयं भगवती जगदम्बा ने इस मंत्र विधान और इस अनुष्ठान को स्पष्ट किया था।

इसीलिए तो मैं प्रयोग बताने जा रहा हूँ वह अपने आप में दुर्लभ और अप्रतिम है जिसके माध्यम से हम अपने जीवन की सारी समस्याओं का समाधान कर सकते है, जिनके माध्यम से हम सभी कष्टों का निवारण कर सकते हैं जिसके माध्यम से हम अपने जीवन की सभी इच्छाओं की पूर्ति कर सकते हैं। जिसके माध्यम से हमारे जीवन में जो न्यूनता हो, जो कमी है, जिसकी वजह से हम परेशान हो, जो अभाव बाधा और पीड़ा हो उन सबको इस साधना के द्वारा दूर किया जा सकता है।

एक प्रकार से देखा जाए तो यह मंत्र दो तरीके से सहयोग देता है। रचनात्मक जो हमारी इच्छाओं की पूर्ति करता है, निषेधात्मक जो हमारे अभावों को दूर करता है। किसी भी प्रकार की इच्छा की पूर्ति होना इस साधना की विशेषता है और प्रत्येक साधक या शिष्य या व्यक्ति को इस प्रकार की साधना जीवन में सम्पन्न करनी ही चाहिए।

यदि व्यक्ति नवरात्रि के दिनों में भगवती जगदम्बा की साधना करता है तो यह श्रेष्ठतम होता है। नवरात्रि के सारे दिन पूर्ण पर्व कहे जाते हैं। ये सारे दिन अपने आपमें तेजस्विता युक्त होते हैं और साधक जो इन दिनों में साधना करना चाहता है वह इन्हीं दिवसो पर गुरु से चामुण्डा दीक्षा प्राप्त कर सभी साधनाओं में पूर्णता प्राप्त कर सकता है। चामुण्डा दीक्षा का तात्पर्य है कि अपने आपमें पूर्ण पवित्र और दिव्य बनकर अपने आपको दक्ष बनाते हुए योग्य बनाते हुए उस तेजस्विता युक्त भगवती जगदम्बा की साधना को सम्पन्न करने के लिए अपने आपको प्रेरित करता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि साधक नवरात्रि के एक दिन पूर्व यथा संभव मौन रहकर अपनी शक्ति का संचय करे और उसके बाद सद्गुरु से चामुण्डा दीक्षा प्राप्त करें और यदि सद्गुरु कहीं और हों, शरीर उपस्थित नहीं हों तो फोटो भेजकर उसके माध्यम से दीक्षा प्राप्त करें।

वास्तव में यह सौभाग्य होता है कि व्यक्ति भगवती जगदम्बा के सान्निध्य में उनके चरणों में पूर्ण तेजस्विता युक्त, ऋषि तुल्य जीवन जीते हुए निरंतर

गुरु मंत्र और नवार्ण मंत्र का जप करते हुए अपने शरीर के सभी चक्रों की जागरण क्रिया की ओर अग्रसर होते हुए जगदम्बा साधना सम्पन्न करता है। यह साधना सम्पन्न करना अत्यंत है आहलाद और प्रसन्नता का सोपान है।

जीवन में प्रत्येक प्रकार के रागरंग भोग, यश, मान, पद प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य इनकी इच्छा रहनी ही चाहिए और इन सबकी प्राप्ति केवल और केवल शक्ति साधना के द्वारा संभव है या भगवती जगदम्बा की साधना के द्वारा संभव है।

मार्कण्डेय ने एक अद्वितीय ग्रंथ, मार्कण्डेय पुराण की रचना की जो शिव के ऊपर पूर्ण ग्रंथ है तो शक्ति के ऊपर भी पूर्ण ग्रंथ है। और उनके द्वारा लिखा गया शक्ति का ग्रंथ ही कई वर्षों से मान्य है क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में भगवती जगदम्बा को साक्षात किया, और उनके कई रूपों को साक्षात प्रत्यक्ष करके दिखाया और उन्होंने कहा - **प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।**

तृतीयं चंद्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।
पंचमं स्कंधमातेति षष्ठं कात्यायनी तथा।
सप्तमं सिद्धिदा प्रोक्ता चामुण्डेति चाष्टमं
नवमं काल रात्रीति नवदुर्गा प्रकीर्तिता।।

भगवती जगदम्बा के कई स्वरूप हैं नवदुर्गा भी उनके ही रूप हैं और भगवती जगदम्बा का ध्यान लिखते समय ऋषि ने कहा है कि -

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृत्तां सेवितां सिद्धिकामैः।।

उन्होंने भगवती जगदम्बा से प्रार्थना करते हुए कहा है कि मेरे जीवन की सभी कामनाएं पूर्ण हों और जीवन में कामनाओं का पूर्ण होना आवश्यक है क्योंकि यदि व्यक्ति पैदा हो और अपूर्ण जीवन में रह जाए तो ऐसा व्यक्ति मनुष्य नहीं कहलाता। व्यक्ति अपूर्ण पैदा जरूर होता है। मगर यदि अपनी

इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति न करें, यदि जो जीवन का उल्लास और उमंग है वह प्राप्त नहीं करें, उच्चकोटि का धन, उच्चकोटि की शिक्षा या उच्चकोटि का सौन्दर्य प्राप्त नहीं करें तो ऋषि कहते हैं कि ऐसा व्यक्ति मनुष्य नहीं है। उसने अपने जीवन को संवारा नहीं सजाया नहीं, व्यर्थ ही गंवा दिया। और सभी इच्छाओं की पूर्ति केवल मात्र जगदम्बा साधना से संभव है।

और जीवन में आध्यात्मिकता प्राप्त करनी हो, सिद्धाश्रम पहुंचना हो तो यह भी केवल जगदम्बा साधना द्वारा संभव है। जीवन की अंतिम परिणिती केवल सिद्धाश्रम जाने में है। न कोई स्वर्ग है न नर्क है। स्वर्ग और नर्क दोनों कल्पना की चीजें हैं। वास्तविक जीवन का इनसे कोई संबंध नहीं हमें बहलाने के लिए कि हम गलत रास्ते पर न चले इसलिए नर्क की व्याख्या की गई है। नर्क जैसी कोई चीज नहीं है। जीवन का सार सिद्धाश्रम प्राप्ति है और यह भी इच्छा भगवती साधना द्वारा शीघ्र, सहज संभव है। परंतु आवश्यक है कि व्यक्ति पूर्ण विश्वास के साथ, श्रद्धा के साथ अनुष्ठान करें।

इसलिए जगदम्बा साधना द्वारा न केवल भौतिक उन्नति अपितु आध्यात्मिक उन्नति भी संभव है। जीवन में भौतिकता भी उतनी ही आवश्यक और महत्वपूर्ण है जितनी आध्यात्मिकता। आप चाहे कितने भी विद्वान बन जाएं, कितने भी योग्य बन जाएं, चाहे कितने भी सौन्दर्यवान बन जाएं मगर जब तक धन की पूर्ण प्राप्ति हमारे जीवन में नही हैं तब तक जीवन आगे अग्रसर नहीं हो सकता। गुरुदेव के पास जाने के लिए रेल के टिकट के लिए धन आवश्यक है ही। कोई स्त्री है, अच्छे वस्त्र पहनना चाहती है, तो नहीं पहन सकती बिना धन के। आप तीर्थ यात्रा करना चाहें तो नहीं कर सकते बिना धन के।

अर्थ तो जीवन में महत्वपूर्ण है ही और पूर्ण सम्पन्नता के लिए भी कोई श्रेष्ठतम साधना है जो वह भगवती जगदम्बा की ही साधना है। जीवन में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों आवश्यक है, परंतु ऋषि भी कहते हैं कि मोक्ष या आध्यात्मिकता से पहले अर्थ की आवश्यकता है क्योंकि अर्थ से 80 प्रतिशत काम तो आपके पूर्ण हो जाएंगे। आज का युग ऐसा ही है जहां धन के आधार पर पूरा समाज टिका हुआ है। यह बात हमारे ऋषि जानते थे इसलिए उन्होंने मोक्ष से पहले अर्थ को महत्ता दी और सिर्फ परिश्रम से धन प्राप्त नहीं हो सकता, उतना

धन प्राप्त नहीं हो सकता जितना हम चाहें, आपकी पांच हजार की नौकरी है तो आप पांच हजार ही कमा सकते हैं, थोड़ा और काम किया तो सात हजार रुपये हो जाएंगे, मगर उससे धन का प्रवाह नहीं बन सकता कि जितना खर्च करें, कम नहीं हो, बढ़ता ही रहे। ऐसा जीवन में तभी संभव हो सकता है, जितना चाहे धन प्राप्त हो सकता है, धन का प्रवाह बन सकता है यदि हम पूर्णता के साथ अपने जीवन में जगदम्बा साधना को सम्पन्न कर लें।

और हमारे ऋषियों ने कहा है कि श्रेष्ठ और बुद्धिमान व्यक्ति इस जीवन का पूर्ण आनन्द लेते हैं और इसके बाद सिद्धाश्रम में प्रवेश करके उस अद्वितीय वातावरण का आनन्द लेते हैं जो आध्यात्मिक है। और इन सभी इच्छाओं, उच्चतम कामनाओं को पूर्ण करने का यदि कोई उपाय है तो वह है **जगदम्बा साधना**। और जीवन में सभी रंग हों, स्वास्थ्य भी हो, अच्छा वातावरण हो, शिक्षा हो, पढ़ाई, सुंदर भवन हो, प्रेम हो, सौन्दर्य हो और वह सब कुछ हो जो हम जीवन में चाहें और यही नहीं हम इस जीवन को ही नहीं, अपने आगे के जीवन को भी सुधारें कोई ऐसी क्रिया हो कि जो हम चाहें वह हो जाए यह बहुत बड़ी घटना है। यह विस्फोटकीय घटना है, उपलब्धि है कि हम जो चाहें वह हो जाए।

और इस उपलब्धि का अगर कोई आधार है तो वह है भगवती जगदम्बा साधना। हजारों ग्रंथ में सिद्धाश्रम के बारे में इतना अधिक वर्णन है कि वहां सभी देवता आने के लिए तरसते हैं, वहां अप्सराएं नृत्य करती हैं, वहां सिद्धयोगा झील है, वहां दो हजार साल आयु के योगी हैं, संन्यासी हैं भगवान श्रीकृष्ण वहां है, और इतना अद्वितीय है वह सिद्धाश्रम जहां न बुढ़ापा आ सकती है, न रोग हो सकता है न मृत्यु हो सकती है, कल्पवृक्ष वहां है और कामधेनु वहां है। तो ऐसा अद्वितीय दृश्य भी हम अपने जीवन में देख सके, ऐसा भी संभव है भगवती जगदम्बा की साधना के द्वारा।

यही जीवन की श्रेष्ठता है यही जीवन की पूर्णता है। इस जीवन को भी भोगें, इस शरीर का भी आनन्द लें, और फिर उस जीवन में चले जाएं जो अपने आप अद्वितीय है। और दोनों का, भौतिकता का भी, और सिद्धाश्रम का भी, रास्ता एक ही है जिसे जगदम्बा साधना कहा है। सभी रंग जीवन के हम भोगें। आकस्मिक धन प्राप्ति के कोई तरीका है और

आकस्मिक धन प्राप्ति पाप नहीं है, चोरी करना पाप है, किसी को धोखा देना पाप है लेकिन यदि हम भगवती जगदम्बा से या किसी महाविद्या से कोई चीज प्राप्त करते हैं तो वह पाप नहीं है। हम किसी से छीन नहीं रहे हैं।

जीवन में सिद्धाश्रम प्राप्ति या आकस्मिक धन प्राप्ति या पूर्ण रूप से गुरुत्व को हृदय में स्थापित करना ये उपलब्धि और ये कार्य केवल नवरात्रि में ही संभव है। इसलिए संभव हो सकते हैं क्योंकि नवरात्रि का वातावरण नवरात्रि के दिनों में दिव्यता लिए हुए हैं, अद्वितीय है। आप किसी भी दिन दीवाली नहीं मना सकते कि घर के आगे दिये लगा दें तो लोग आकर कहेंगे पागल है, यह क्या हो रहा है।

आज दिवाली का मुहूर्त ही नहीं तो आप नहीं मना सकते, आप होली भी नहीं मना सकते, क्योंकि होली का दिन एक निश्चित है, एक वातावरण है एक उमंग है। दिवाली का अलग दिन है, रक्षा बंधन का अलग दिन है। ठीक इसी प्रकार से नवरात्री के भी अपने आपमें अलग दिन है और प्रत्येक दिन का अपना एक अलग हिस्सा है।

यदि आपके पास जगदम्बा साधना का ज्ञान है और आप उसको सम्पन्न नहीं करते, नवरात्रि के दिनों में इस साधना को नहीं कर पाते तो वास्तव में ही आपसे अधिक दुर्भाग्यशाली कोई नहीं है और यदि आप जगदम्बा की साधना को पूर्णता के साथ नवरात्रि में सम्पन्न कर लेते हैं तो फिर आपसे अधिक सौभाग्यशाली कोई नहीं है, क्योंकि इस साधना के द्वारा हम सभी इच्छाओं की पूर्ति कर सकते है, हम जीवन में उच्चता और श्रेष्ठता प्राप्त कर सकते हैं।

और आप अपने जीवन में ऐसा कर पाएं, आप जगदम्बा साधना को सम्पन्न कर अपने जीवन को ऊर्ध्वमुखी बना पाएं ऐसा ही मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ, कल्याण कामना करता हूँ।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

लक्ष्मी साधना

लक्ष्मी का वह श्रेष्ठतम रूप जो सौभाग्य और लाभ के रस से सिंचित है जिनके ध्यान मात्र से चेहरे पर ओज और मन में रस संचार होने लगता है। निराशा के काले अंधकार को चीर कर आशा और उमंग की घनघोर वर्षा कर देने वाली है,

रसेश्वर कनकप्रभा लक्ष्मी साधना

साधना का एक रहस्य यह है कि इसमें अचानक छलांग मारकर बड़ी उपलब्धि अर्जित करने की अपेक्षा यदि लघु स्वरूपों और शीघ्र प्रकट होने वाले स्वरूप की साधना व आराधना करें तो जीवन में शीघ्र ही समस्त सफलताएं और अनुकूल स्थितियां निर्मित होने की दशा निर्मित हो जाती है। ठीक यही बाल भगवती महालक्ष्मी के स्वरूप के साथ भी है साधना के प्रथम चरण में ही भगवती महालक्ष्मी का साक्षात दर्शन पाना या उनके द्वारा मनोवांछित वर प्राप्त कर लेना साधक के लिए संभव नहीं है, इसकी अपेक्षा यदि वह देवी के किसी विशिष्ट स्वरूप की साधना करता है तो अपने भौतिक

जीवन की कामनाएं तो शीघ्रता से पूर्ण करता ही है, साथ ही साथ साधनात्मक दृष्टि से भी कुछ पग और आगे बढ़ जाता है।

प्रस्तुत साधना एक ऐसी ही साधना है। समय-समय पर युग दृष्टा ऋषियों और मंत्र सृष्टा चिंतकों ने एक ही साधना के जो विभिन्न रूप ढूंढे, उन्हें अपनी अनुभूति के आधार पर अलग-अलग नामों से संबोधित किया और यह उनके प्राणों का बल होता है कि मंत्रों के प्रभाव से देवी का वही स्वरूप गठित कर उन्हें उपस्थित होने के लिए विवश कर देते हैं।

कनकप्रभा साधना ऐसी ही मंत्रोक्त साधना है जहां पर प्रखर ऋषि और युगदृष्टा महर्षि याज्ञवल्क्य ने महालक्ष्मी को कनक प्रभा रूप से उपस्थित होने की एक विशिष्ट पद्धति ढूंढ निकाली।

एक युग पूर्व युग पुरुष आद्यशंकराचार्य जी ने जिस प्रकार से एक धनहीन विप्र की दरिद्रता से व्यथित होकर भगवती महालक्ष्मी का आवाहन कनकधारा रूप में किया था और देवी से प्रार्थना की थी कि वे अपने नाम के ही अनुकूल अपने प्रभाव से स्वर्ण की धारा जैसी समृद्धता प्रवाहित कर दें, ठीक उसी क्रम में उससे भी अधिक प्राचीन और सरल पद्धति से रची गयी साधना है . . . कनकप्रभा साधना और तथ्य तो यह है कि इसी साधना के आधार पर कनकधारा देवी का चिंतन भगवतपाद ने अपने प्रसिद्ध स्तोत्र में किया है। प्राचीन कनक प्रभा ही उनके द्वारा कनकधारा रूप में विख्यात हुई।

देवी के उस स्वरूप को कनकधारा कहें अथवा कनकप्रभा का सम्बोधन दें तात्पर्य केवल एक ही है कि घर में अथवा यदि संन्यासी हो तो उसके आश्रम में धन का ऐसा प्रवाह आरंभ हो जाए जो स्वर्णवर्षा जैसा हो क्योंकि धन की प्रचुरता से ही संभव है जीवन में प्रसन्नता का आगमन। धन केवल आवश्यकता अनुसार ही उपलब्ध होना जीवन की श्रेष्ठता नहीं है। धन का वास्तविक आनन्द यह है कि धन आवश्यकता से कहीं अधिक उपलब्ध हो, जिससे वर्तमान की सभी समस्याएं तो सुलझे ही, भावी समय के लिए हमारे मन में कोई आशंका या चिंता न रहे, क्योंकि जहां कल की चिंता है वहां निश्चिंतता नहीं और जहां निश्चिंतता नहीं वहां फिर कोई श्रेष्ठ धार्मिक या आध्यात्मिक चिंतन नहीं। नित्य प्रति की दरिद्रता धीरे-धीरे व्यक्ति के अंदर घुलती हुई उसके मन प्राण, आत्मा तक को दरिद्र, हीन और पतित बना देती है। **जीवन की इन्हीं स्थितियों को समाप्त करने की साधना है - कनकप्रभा।**

भगवती महालक्ष्मी की साक्षात उपस्थिति का अर्थ यही होता है कि हमारे जीवन में मधुरता का आरंभ हो, पौरुष और क्षमता का अतिरिक्त प्रभाव हो और यही लक्षण जीवन में आते हैं किसी साधना के माध्यम से या, किसी दैविक शक्ति का प्रभाव शरीर में समाहित हो जाने से। और फिर कनक प्रभा . . . तो साक्षात उपस्थित हो जाने वाला स्वरूप है। अपने चैतन्य स्वरूप से साधक को आश्वस्त कर देने वाला स्वरूप है, जिससे साधक के मन में कोई द्वंद्व न रहे और वह निश्चिंत होकर साधना के मार्ग पर
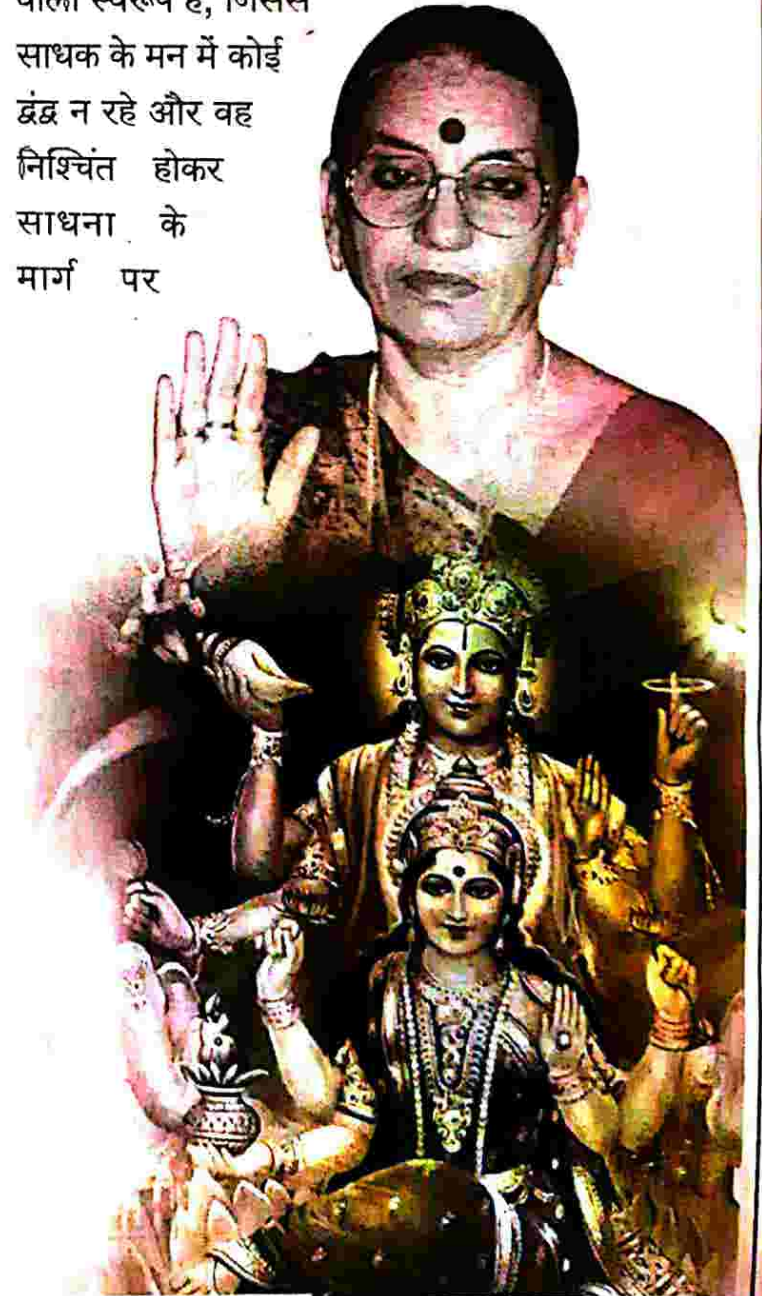
तेजी से गतिशील हो सके।

देवी कनकप्रभा के ध्यान और स्वरूप का वर्णन करते हुए ऋषि ने कहा है – पद्म की मंद आभा के समान वस्त्र धारण किये हुए विशाल चाक्षुषी देवी जिनकी पलकें अधमुंदी जिनके नयनों के छोर कर्णों को स्पर्श करते हुए प्रतीत होते हैं ऐसी सघन केश युक्ता, सुगंधित, पद्मगंधा, पावन गंध से समस्त वातावरण को आप्लावित करती हुई देवी कनक प्रभा अपने शरीर पर धारण किये हुए विविध स्वर्णाभूषणों से वातावरण को जिस प्रकार शोभायमान कर रही है और जिनकी स्वर्णिम आभा से युक्त मुख श्री को देखते ही चित्त उनके चरणों में स्वत: नत हो जाता है उन देवी कनक प्रभा के चरणों में मेरा मस्तक सदा ही अवनत रहे। देवी के उपरोक्त कनक प्रभा स्वरूप की ध्यान और स्तुति से स्पष्ट होता है कि वास्तव में कनक प्रभा भगवती महालक्ष्मी का ही स्वर्णिम और वरदायक स्वरूप है, ऐसे वरदायक स्वरूप की अभ्यर्थना करने की अपेक्षा किसी अन्य स्वरूप की आराधना फिर कहां तक तर्क सम्मत और बुद्धिमत्ता पूर्ण होगी। आगे इसी ध्यान में वर्णित है कि कनक प्रभा देवी के दोनों हाथों में से एक वर मुद्रा एवं दूसरा अभय मुद्रा में अवस्थित है, जिससे स्पष्ट होता है कि उनका यह स्वरूप पूर्ण रूप से अनुग्रहकारी है।

कनक प्रभा देवी तो मूलत: रस सिद्ध योगियों की पारद विज्ञानियों की आराध्या रही हैं क्योंकि इन्हीं की साधना पद्धतियों में छिपा है स्वर्ण निर्माण का रहस्य। स्वर्ण निर्माण जहां पारद विज्ञान के माध्यम से संभव है, जहां रसायन के माध्यम से संभव है, वहीं मांत्रोक्त पद्धति से भी पूर्ण रूप से संभव है, और कहते हैं इस साधना में सफलता मिलने पर देवी कनक प्रभा के इसी मंत्र में निहित वह गुप्त क्रिया भी प्राप्त हो जाती है।

यह तीस दिनों की साधना है यदि यह साधना कार्तिक माह के किसी भी दिन से प्रारंभ कर आगे के तीस दिनों तक नियमित रूप से की जाए तो श्रेष्ठतम माना गया है अन्यथा किसी भी माह के शुक्ल पंचमी से प्रारंभ किया जा सकता है, इसमें कोई दोष नहीं, यह साधना लम्बी अवश्य है किन्तु जटिल नहीं। महत्व केवल इस बात का है कि साधक इस पूरे एक माह में श्रद्धा पूर्वक सरलता और ब्रह्मचर्य से जीवन यापन करें, केवल एक समय ही भोजन करें और दूसरे समय फलाहार अथवा दुग्धाहार लें, भूमि शयन करें और तामसिक विचारों से सर्वथा परे रहे। इसके अतिरिक्त कोई बंधन नहीं है। साधक अपने नित्य प्रति के जीवन को यथावत जी सकता है, व्यवसाय का कार्य कर सकता है, नौकरी पर जा सकता है, यात्राएं कर सकता है तथा भौतिक जीवन के लिए जो कुछ भी आवश्यक है उसे करने में कोई दोष नहीं।

साधना विधान

मंगल, शनि एवं रविवार को छोड़कर जिस दिन भी यह साधना प्रारंभ करें उस दिन साधना कक्ष स्वच्छ और साफ हो, श्वेत ऊनी आसन बिछाएं और एक पात्र में गणपति विग्रह रख उनका पूजन केशर, अक्षत, पुष्प से करें। स्वस्ति पाठ करें –

ॐ श्रीं गणपतये नम: ऋद्धि सिद्धि सहितं मम गृहे महागणपतिं आवाहनं समर्पयामि।
सुमुखश्चैक दन्तश्चत कपिलो गजकर्णक,
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननं,
द्वादशैतानि नामानि य: पठेच्छणुयादपि।
विद्यारम्भे विवाहे य: प्रवेशे निर्गमे तथा,
संग्रामें संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।

इसके उपरांत भूमि पर त्रिकोण बना कर (जो आप केशर अथवा अष्टगंध से बना सकते हैं) इसके ऊपर श्वेत आसन बिछायें और निम्न मंत्र पढ़ते हुए आंतरिक और बाह्य शुद्धि करें –

ॐ अपवित्र: पवित्रो व सर्वास्थां गतोऽपि वा,
य: स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स: बाह्याभ्यारतं शुचि:।

तत्पश्चात मुख शुद्धि –

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा,
ॐ अमृतोपिधानामसि स्वाहा,
ॐ सत्यं यश: श्रीर्मयि श्रीश्रयतां स्वाहा।
(पढ़ते हुए तीन बार जल मुंह में डालें)

पृथ्वी पर हाथ रखकर आसन शोधन करें –

ॐ पृथ्वीत्वया धृता लोकांदेवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवी पवित्रं कुरु चासनम्।।

अब मूल साधना में प्रवृत्त हों। भगवती महालक्ष्मी का **'कनक वर्षिणी यंत्र'** स्थापित करें और प्रार्थना करें कि – मैं भगवती महालक्ष्मी के ही शीघ्र फलदायक स्वरूप कनक प्रभा की साधना में प्रवृत्त हो रहा हूँ, भगवती महालक्ष्मी मुझे यथा शीघ्र सफलता प्रदान करें और ऐसा कहकर पुष्प पंखुड़ियों पर **'पारद शंख'** स्थापित करें यदि आपके पास पहले से कोई पारद शंख हो और उस पर साधना की गई हो तब भी वह पूर्ण फलदायक है।

पारद तो एक ऐसी चैतन्य धातु है, जिससे निर्मित कोई भी विग्रह अपने आपमें श्री युक्त होता ही है और इसी विशेषता से कनक प्रभा की साधना पारद शंख पर निश्चित रूप से फलदायी होती है क्योंकि पारद और स्वर्ण निर्माण का घनिष्ठ संबंध होता ही है।

इस दुर्लभ **पारद शंख** पर अष्टगंध से स्वस्तिक का निर्माण करें, गुलाब की पंखड़िया चढ़ाएं और एक बड़ा दीपक शुद्ध घी का जलाकर भगवती लक्ष्मी व उनके साकार प्रतीक विग्रह रूप में पारद शंख का संयुक्त पूजन करें और प्रार्थना करें।

देवी कनक प्रभा इसी पारद की भांति बद्ध होकर अपने सहोदर तुल्य इस पारद शंख के रूप में मेरे घर में स्थायी निवास करें। भगवती महालक्ष्मी एवं शंख का पूजन सुगंध, कुंकुम, अक्षत, पुष्प, पंचामृत, दुग्ध निर्मित-नैवेद्य, ताम्बूल एवं पुंगी फल (सुपारी) से करें। दक्षिणा रूप में इलायची एवं लौंग समर्पित करें। **लक्ष्मी सिद्धि माला** से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप सम्पन्न करें और मंत्र जप की समाप्ति पर एक बार पुनः कर्पूर आरती से महालक्ष्मी की आरती सम्पन्न कर क्षमस्व परमेश्वरी कहकर स्थान छोड़े। इस साधना में प्रयुक्त होने वाला मंत्र है –

मंत्र

।। ॐ ह्रौं हं ह्रीं कनक प्रभा मम
गृहे आगच्छ स्थापय फट्।।

इस साधना में यह आवश्यक नहीं कि आपने प्रथम दिन जिस समय साधना प्रारंभ की, उसी समय से नित्य प्रति

साधु का तात्पर्य है जो जीवन में साधना कर सके, जो साधना कर सकता है वह अपने जीवन में नीरस नहीं रह सकता, उसका हृदय तो सदैव नवरस भावों से भरा ही रहता है। भावों से भरे हृदय के साथ जीवन जीना एक आनन्द प्रद यात्रा है। लक्ष्मी तो साधना से प्राप्त अवश्य होती है। लेकिन भाव रस जाग्रत हो, प्रेम और उमंग जीवन में हर समय बनी रहे एक रस का सागर लहराता रहे तो व्यक्ति पा जाता है भगवान शिव का रसेश्वर रूप

साधना प्रारंभ करें। लेकिन एक क्रम निश्चित कर सकें तो लाभदायक रहेगा। यदि इन तीस दिनों में घर से बाहर जाना पड़े तब भी इस साधना को निरंतर कर सकते हैं, पारद निर्मित विग्रह को यात्रा में ले जाना शास्त्र समस्त माना गया है। स्त्रियां रजस्वला काल में साधना स्थगित कर शेष दिनों में साधना पूर्ण कर सकती है, इसे व्यवधान नहीं माना जाता।

साधना के आरंभ करने के तीन-चार दिन के बाद से मधुर सुगंध, साधना कक्ष में एक अहसास, वस्त्रों की सरसराहट, कर्पूर की सुगंध; शीतलता जैसे विविध अनुभव भी प्रारंभ हो जाते हैं यदि ऐसे अनुभव प्रारंभ हो तो साधक और सजग हो जाए क्योंकि कनक प्रभा के साधना के मध्य में दर्शन भी हो सकते हैं। परंतु इसे साधना की पूर्णता मान लेना उचित नहीं क्योंकि यह एक निश्चित क्रम है तथा तीस दिन का साधनामय जीवन व्यतीत करना आवश्यक है।

प्रतिदिन इस साधना की समाप्ति पर सस्वर आद्यशंकराचार्य प्रणीत **कनक धारा स्तोत्र** का पाठ करना चाहिए, क्योंकि कनक धारा और कनक प्रभा एक ही देवी के दो विभिन्न ढंग से वर्णन है।

आकस्मिक धन प्राप्ति, कौन व्यक्ति हमारे जीवन में लाभदायक होगा, किस स्रोत से हमें धन मिलेगा, किस व्यापार से रातों रात लाभ हो जायेगा, ऐसी अनेक स्थितियां व्यक्ति को कनक प्रभा देवी के माध्यम से स्पष्ट होने लगती है, आवश्यकता है तो साधक के सतर्क और चौकन्ना रहने की, क्योंकि साधना के पूर्ण होने से पूर्व भी सफलताएं मिलती देखी गयी है।

साधना सामग्री पैकेट – 660/-

विजयं लभस्व दीक्षया -
क्रियमाण विजय दीक्षा से विजय लाभ संभावित है।
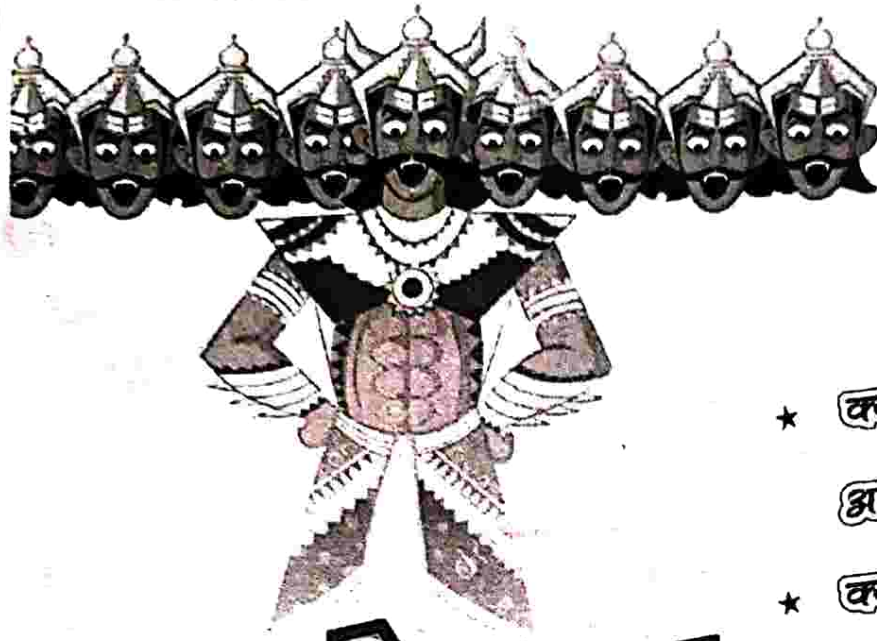
पराजय को विजय में बदलना ही है

* क्या आपके जीवन में बार बार बाधाएं आती ही हैं?
* क्या आपको अपने कार्य में सफलता प्राप्त नहीं हो रही हैं?
* आपके जीवन में शत्रु बढ़ रहे हैं?
* क्या आपके कार्य अधूरे ही रहते हैं?
* परिवार में कलह बढ़ता ही जा रहा है?
* क्या आप अपने जीवन से निराश हो रहे हैं?

विजयोत्सव साधना

आवश्यकता है आपके लिए जीवन की पराजय को जय में बदलने के लिए संकल्प शक्ति के साथ उठ खड़े होने की

मानव जीवन के साथ सबसे बड़ी विडम्बना यही है, कि वह परिस्थितियों का दास है और उसने हर समय अपने-आपको परिस्थितियों के अनुरूप ढालने का प्रयास किया है और जब वह अपने आपको परिस्थितियों के अनुसार ढाल लेता है, तो उसके जीवन में कोई नवीनता नहीं रह जाती, उसका जीवन एक सामान्य गति से चलने वाले साधारण पशु की तरह ही निर्धारित हो जाता है, उसके अपने हाथ में अपने जीवन की लगाम नहीं रहती, वह जो सोचता है, उसके अनुसार कार्य नहीं कर पाता है, जो वह अपने जीवन में करना चाहता है, वह कर नहीं सकता, वह अपने आपको एक बहती हुई नदी की धारा में इस प्रकार से धकेल देता है, कि जिस ओर भी नदी की

धारा ले जायेगी, वही उसका भाग्य है, उसकी नियति है।

लेकिन वास्तव में संसार ने केवल उनको ही सराहा है, जाना है, पूजा है, सम्मान दिया है, जिन्होंने अपने भाग्य का निर्माण स्वयं किया हो तथा विपरीत परिस्थितियों में जूझते हुए भी अपने लक्ष्य का ध्यान रखा और उसकी ओर बढ़ते हुए निरंतर प्रयासरत रहे। व्यक्ति के जीवन में यदि समस्याएं नहीं आयें, तो व्यक्ति के जीवन जीने का सार्थक उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है, **जीवन तो वह होता है, जो वास्तव में जीवन्त हो - बार-बार समस्याएं आयें और व्यक्ति उन समस्याओं का समाधान अपनी शक्ति तथा बुद्धि के द्वारा प्राप्त करते हुए आगे आने वाली नई चुनौतियों पर विजय प्राप्त करने का प्रयास करें।**

व्यक्ति के जीवन में समस्याएं मुख्यतः सांसारिक ही होती हैं। ये समस्याएं उसे इस संसार में अन्य व्यक्तियों द्वारा उत्पन्न की गई परिस्थितियों के फलस्वरूप प्राप्त होती हैं। परिस्थितियों को अपने अनुरूप ढालना ही व्यक्ति की विशेषता कही जाती है और वही व्यक्ति पूर्ण पुरुष बन सकता है, जिसके जीवन में निरंतर साहस का उद्वेग संचारित होता हो, वह व्यक्ति जीवन में निरंतर कुछ नवीन करने का विचार करता रहे, अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपना मार्ग स्वयं बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे।

संसार में व्यक्ति को जीवन तो जीना ही है और जीवन के साथ बाधाएं और कष्ट जुड़ेगे ही। कुछ बाधाएं परिवार द्वारा आरोपित होंगी, जिन्हें जिम्मेदारियां कहा जा सकता है और कुछ बाधाएं जिस प्रकार का भी कार्य कर रहे हैं, उसके द्वारा आयेंगी, क्योंकि किसी भी व्यक्ति के लिये जीवन मार्ग पर फूल बिछे नहीं होते। इस पथ पर पुष्प भी हैं, तो कांटे भी हैं, कंकड़ भी हैं, तो समतल धरती भी है, तो फिर किस प्रकार व्यक्ति अपने आपको किन शक्तियों के माध्यम से ऐसा बना ले, जिससे कि वह अपने कष्टों पर स्वयं विजय प्राप्त कर सके।

विजय का तात्पर्य है, कि जो भी जीवन में कांटे हैं, जो भी जीवन में कंकड़ हैं, जो भी जीवन में न्यूनताएं हैं, जो भी जीवन में शत्रु हैं, उन सब पर पार पाना और उन सबको समाप्त कर देना। यदि जीवन में विजयी बनना है, तो मनुष्य को कुछ ऐसा कार्य करने के लिए निरंतर प्रेरित होना पड़ेगा, जिससे कि उसका जीवन दूसरों से कुछ अलग बन सके।

जीवन में मुख्य समस्याएं जिनके कारण व्यक्ति को पराजय प्राप्त होती है, इसके मूल में तीन प्रकार के ही शत्रु मुख्य हैं, ये शत्रु हैं -

दैहिक अर्थात् शरीर की कृशकायता, शरीर की क्षीण शक्ति, शरीर में रोग, कष्ट।

दूसरा शत्रु हैं, जो कि आपके कार्य में आपकी आलोचना करते हैं, आपको आगे बढ़ने से रोकते हैं और आपकी उन्नति का मार्ग अवरुद्ध करते हैं।

तीसरे प्रकार के शत्रु मानसिक शत्रु होते हैं, जो कि आपके विचारों को जड़ कर देते हैं, आपके उत्साह की गति मंद कर देते हैं, आपकी आंतरिक शक्ति को क्षीण कर देते हैं, जिसके कारण आपके जीवन में कोई भी कार्य करने का उत्साह ही नहीं बचता है।

यदि आपका जीवन मार्ग केवल कण्टकाकीर्ण ही है, और जीवन में शत्रुओं की प्रबलता है, भय ने इस प्रकार से जीवन को घेर लिया है कि किस प्रकार से जीवन व्यतीत किया जाए, वह उपाय ही नहीं मिलता, तो जीवन में निराशा आती है और निराशा व्यक्ति को उसकी आत्मा से तोड़ने का प्रयास करती है, उसे जीवन की निरर्थकता का अनुभव होने लगता है और उसे लगता है कि ऐसा जीवन जीने से क्या लाभ है, जिसमें केवल जीवन को भार समझ कर ढोया जाए, कि उसमें और पशु में कोई अंतर ही न रह जाए।

यदि व्यक्ति प्राण ऊर्जा से संचारित है, यदि व्यक्ति के जीवन में चेतना है, विशेष संस्कार हैं और एक अजस्र
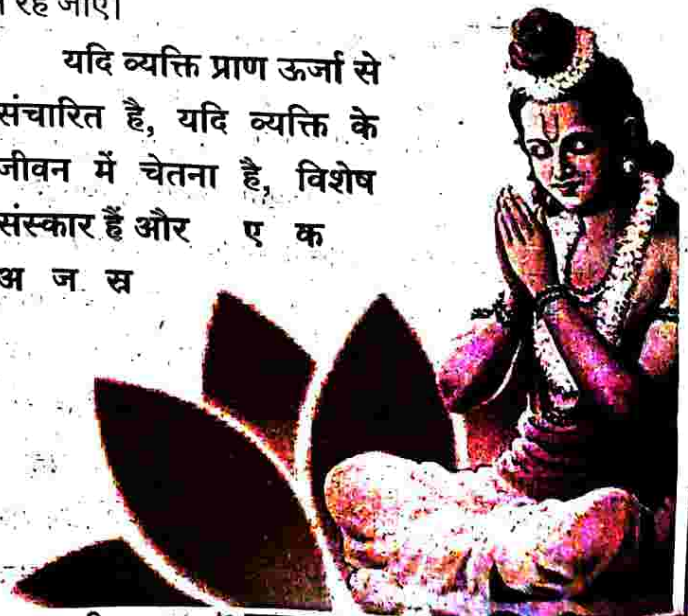
शक्ति का भण्डार जाग्रत है, तो वह व्यक्ति अपने जीवन में किसी भी परिस्थितियों में भी हार नहीं मान सकता, उसे विषम से विषम परिस्थितियों में भी ऐसा ही लगता है कि मैं इस पराजय की स्थिति को विजय की स्थिति में बदल दूंगा और वह प्राणवान ऊर्जा से संचारित होकर अति तीव्र गति से कार्य करता है, अतः वह स्वयं परिस्थितियों का दास न होकर परिस्थितियों को अपना दास बना लेता है और फिर वही व्यक्ति अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार जी सकता है, जीवन की पूर्णता का बोध कर सकता है, जीवन में आनन्द के सभी आयामों को प्राप्त कर सकता है। ऐसा ही व्यक्ति वास्तव में मनुष्य जीवन जीता है।

विजयादशमी विशेष तांत्रोक्त पर्व

सही समय पर सही कार्य किये जाने पर उसका फल निश्चय ही शीघ्र प्राप्त होता है और कार्य भी त्वरित गति से सम्पन्न होता है। प्रत्येक पर्व अपने आपमें एक विशेष रहस्य लिये हुए रहता है और विजयदशमी पर्व वास्तव में एक तांत्रोक्त साधना सिद्धि पर्व है। तंत्र वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कार्य को सही रूप में सम्पन्न किया जाए, सही क्रिया सम्पन्न की जाए।

संन्यासी, यति, अघोरी विजयादशमी पर्व की विशेष रूप से प्रतीक्षा में रहते हैं, क्योंकि इस दिन श्मशान में रहकर अघोर साधनाएं की जा सकती हैं, वाममार्गी तांत्रोक्त साधनाएं की जा सकती हैं, दक्षिणमार्गी सात्विक साधनाएं सम्पन्न की जा सकती हैं और इसी दिन दस महाविद्याओं में प्रमुख बगलामुखी और धूमावती की साधना भी सम्पन्न की जा सकती है।

विजयादशमी केवल एक पर्व नहीं है, यह विजय सिद्धि दिवस है। यह दिवस केवल इसीलिए विख्यात नहीं हुआ, कि इस दिन राम ने रावण पर विजय प्राप्त की थी। राम ने मानव शरीर धारण कर जब अपने जीवन की क्रिया में रावण संहार का पक्ष प्रमुख रखा, तो यह बात विशेष गौर करने लायक है, कि क्यों विजयादशमी के दिन ही राम रावण पर विजय प्राप्त कर सके, क्यों नहीं इसके पहले राम लंका पर पूर्ण विजय प्राप्त कर सके, क्यों इसी दिन राक्षसों का पूर्ण रूप से पतन हुआ? राम के पास हनुमान, लक्ष्मण, सुग्रीव, जामवन्त जैसे बलिष्ठ योद्धा थे, तो रावण के पास भी योद्धाओं की कोई कमी नहीं थी। क्यों ऐसा हुआ, कि इसी दिन राम विजय प्राप्त कर सके?

इस संबंध में विस्तार से विश्वामित्र संहिता में विवरण आया है। विश्वामित्र ने राम को धनुर्विद्या सिखाई थी और उसके साथ ही साथ जीवन के सभी पक्ष उनके सम्मुख प्रस्तुत कर उनके निराकरण का उपाय भी बताया था और राम वास्तव में ही शिष्यता की प्रतिमूर्ति थे।

जब उन्होंने देखा, कि उनकी वानर सेना का संहार हो रहा है और राक्षस सेना प्रभावी हो रही है, तो जिस प्रकार एक शिष्य संकट के समय में अपने गुरु को याद करता है, उनका ध्यान करता है, ठीक उसी प्रकार राम युद्धभूमि में ही आसन लगाकर बैठ गये और उन्होंने अपने गुरु विश्वामित्र का ध्यान कर पूजा की और ध्यान पूजा के उपरांत विश्वामित्र मानस रूप में राम के समक्ष उपस्थित हुए।

श्रीराम ने पूछा - गुरुदेव ! यदि आपकी दी हुई सभी विद्याओं के उपरांत भी मेरी सेना का नाश हो रहा है और मैं और लक्ष्मण मिल कर भी रावण का संहार नहीं कर पा रहे हैं, तो इसमें क्या रहस्य है? क्या मेरी शिक्षा में, शिष्यता में कोई कमी रह गई है अथवा मेरा ज्ञान अधूरा है? मुझे इस समय, इस क्षण क्या क्रिया सम्पन्न करनी चाहिए?

तब विश्वामित्र ने कहा - **तुम केवल अस्त्र-शस्त्रों के माध्यम से तांत्रिक और योगी रावण पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते, क्योंकि इसके नाभि के साथ ही अमृत कलश स्थापित है और आज तुम्हें मैं वह गूढ़ विद्या बताता हूँ, जिसके कारण मैं स्वयं संसार का सर्वाधिक तेजस्वी योद्धा बन सका। यह विद्या केवल धनुर्विद्या नहीं है, मंत्र के माध्यम से और विशेष तंत्र के माध्यम से, जिसकी संरचना मैंने की है, वह क्रिया क्रियमाण विजय साधना तुम्हें सम्पन्न करनी होगी।**

समय को देखते हुए उसी समय विश्वामित्र ने राम को क्रियमाण विजय दीक्षा दी और उन्हें वह साधना सम्पन्न करवाई और विजयी होने का आशीर्वाद दिया और कहा - इस साधना के उपरांत तुम्हें कोई भी व्यक्ति परास्त करने का विचार भी नहीं कर सकता है, तुम मन में जिस पर

विजय प्राप्त करने की इच्छा रखोगे, वह अवश्य पराजित होगा ही।

इतिहास साक्षी है, कि विजयादशमी के दिन रावण के पतन के साथ ही राम के जीवन में पूर्ण विजय का एक नया अध्याय जुड़ा और राम भारतीय संस्कृति के, जनमानस की चेतना के नायक बने।

यह साधना वास्तव में अनूठी और निराली साधना है। जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में पग-पग पर रावण रूपी परिस्थितियां उसकी शत्रु बन कर खड़ी हैं, बार-बार व्यक्ति समाज में आहत होता रहता है, उस स्थिति में साधक को निश्चय ही विश्वामित्र प्रणीत क्रियमाण विजय साधना सम्पन्न करनी चाहिए, जिससे कि वह अपने भीतर की शक्ति के पराक्रम को स्वयं परख सके, स्वयं शक्तिमान होकर विजय प्राप्त कर सके।

साधना विधान

यह केवल रात्रिकालीन साधना है और विजयदशमी के दिन अथवा किसी भी माह में सोमवार की रात्रि को ही सूर्यास्त के एक प्रहर पश्चात दस बजे के आसपास प्रारंभ की जाती है।

साधना के समय व्यक्ति अपनी उन बाधाओं को एक कागज पर लाल स्याही से स्पष्ट रूप से लिख दे, जिस पर वह विजय प्राप्त करना चाहता है।

साधक लाल रंग के वस्त्र पहन कर और लाल रंग के आसन पर बैठ कर ही यह साधना सम्पन्न करें।

इस तांत्रोक्त साधना में किसी के प्रति मारण का भाव नहीं हो, शत्रु को अथवा विपरीत परिस्थितियों को परास्त करने का ही शुद्ध भाव मन में विचार कर यह साधना सम्पन्न करें।

यह साधना कई बार अत्यंत विषम परिस्थितियों में किसी भी दशमी की रात्रि को ही सम्पन्न की जा सकती है।

इस साधना में तीन सामग्रियों की आवश्यकता पड़ती है - **विश्वामित्र प्रणीत विजय यंत्र, त्रैलोक्य विजय माला और ग्यारह क्रियमाण।**

सबसे पहले इस साधना में गुरु पूजन करना अत्यंत आवश्यक है और वह गुरु पूजन तांत्रोक्त हो, तांत्रोक्त विधि से गुरु पूजन सम्पन्न कर इस साधना की सामग्री को अपने सामने रख लें।

(संदर्भ - तांत्रोक्त गुरु पूजन पुस्तक)

ग्यारह मिट्टी के दीपक में तेल भर कर उसे जला दें, प्रत्येक दीपक के आगे सरसों तथा तिल की ढेरी पर एक-एक मंत्रसिद्ध चैतन्य **'क्रियमाण'** स्थापित कर दें।

सर्वप्रथम सिन्दूर, हल्दी द्वारा **'विजय यंत्र'** का पूजन करें और प्रत्येक **'त्रैलोक्य विजय माला'** मंत्र जप के पहले क्रियमाण मुट्ठी में बंद कर उस बाधा को दुहरायें, जो कि आपके जीवन में दाहक बनी हुई है और जिसका आप दहन करना चाहते हैं, फिर मंत्र का जप प्रारंभ करें -

मंत्र

॥ ॐ ऐं ह्रीं विजयायै ह्रीं ऐं फट् ॥

पहली माला मंत्र जप होने के पश्चात् उस क्रियमाण को यंत्र से स्पर्श करा कर दीपक से स्पर्श करायें और अपनी पहली बाधा पर विजय प्राप्त करने की विनती करें। यही क्रिया ग्यारह बार सम्पन्न करनी है, इस प्रकार ग्यारह मंत्र जप करना आवश्यक है।

जब ग्यारह माला मंत्र जप पूर्ण हो जाए, तो सभी क्रियमाणों को लाल कपड़े में बाँध कर अपने मस्तक पर स्पर्श करायें, अपनी भुजाओं पर स्पर्श करायें, अपनी जंघाओं पर स्पर्श करायें, जिससे कि उसमें आवेशित शक्ति का, पूर्ण प्रभाव आपके शरीर में प्रवाहित हो सके।

यह निश्चित है, कि आप स्वयं देखेंगे, कि जिस शत्रु बाधा को आप असाध्य मान रहे थे, वह बाधा आपके द्वारा ही किस प्रकार सरलता से दूर हो रही है, किस प्रकार आपके शत्रु आपसे परास्त हो रहे हैं। जब भी जीवन में आपको कोई आशंका अथवा संकट का आभास हो या जीवन में कभी कोई हताश आये, तो गुरु पूजन कर एक सौ आठ बार मंत्र जप करते ही आपको वह मार्ग मिल जाता है, जिससे कि वह कार्य सरल और सफल हो जाता है। इस युग में विश्वमित्र प्रणीत यह साधना निश्चय ही उस ज्ञान की एक धरोहर है, जो कि हमारी संस्कृति की श्रेष्ठ पहचान है।

साधना सामग्री पैकेट - 660/-

... गुरुदेव तो हर क्षण ही 'भेंट' करने को आतुर रहते हैं अपने शिष्य से, शिष्य में मिलने की चेतना हो या न हो, लेकिन अद्भुत आनंद छलक उठता है गुरु-शिष्य के मध्य जब शिष्य समझने में सक्षम हो जाता है कि वे तो बड़े 'गरवा' (गंभीर) हैं। स्वामी अनुग्रहानंद जी द्वारा लिखित धारावाहिक उपन्यासिका 'सबद गहे सो हंस हमारा' की नवीं कड़ी गुरु के इसी स्वरूप के वर्णन की एक चेष्टा है . . .

'सबद गहे सो हंस हमारा'
उपन्यासिका की नवीं कड़ी

कबिरा गुरु मिल्या

कौतूहल से मैं चीखने-चीखने को ही हो गया था, किन्तु किसी दृढ़ मर्यादा के बंधनों में बद्ध होकर मैं वैसा न कर सका। मैं अपने नेत्रों पर विश्वास नहीं कर पा रहा था। तर्क व्यर्थ होते जाते रहे थे और मेरे ऊपर वही दृश्य हावी होता चला जा रहा था। मैं उस दृश्य में एवं स्वयं में कोई भेद ही नहीं कर पा रहा था। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मैं प्रकृति के भाल पर बने किसी विशाल दर्पण में स्वयं को ही निहार रहा हूँ और इसी प्रकार निहारते निहारते कब मैं आत्ममुग्ध सा होकर समस्त वातावरण को विस्मृत कर बैठा, मुझे इसका ज्ञान नहीं हो सका।

यह विस्मृति अत्यंत आह्लाददायक थी। मुझे इस विस्मृति में ऐसा नहीं लग रहा था कि मेरा कुछ विलीन हो रहा है, वरन समस्त प्रकृति ही मुझे अपने आप में समाहित होती अनुभव हो रही थी। समस्त प्रकृति मेरा अंग बन गयी थी और भेद था तो केवल स्वरूप का। आंतरिक रूप से कोई भी भेद नहीं लग रहा था। वह आनन्द की पराकाष्ठा ही थी और आनन्द के इस आधिक्य के कारण मैं स्वचेतना विस्मृत कर बैठा था। कभी मुझको लगता कि मेरे अंत:स्थल से एक ज्योति (जो किंचित अग्निवर्णा थी) निकल कर मेरे समक्ष आसीन उसी दिव्य मूर्ति में विलीन हो रही थी तो अगले ही क्षण लगता,
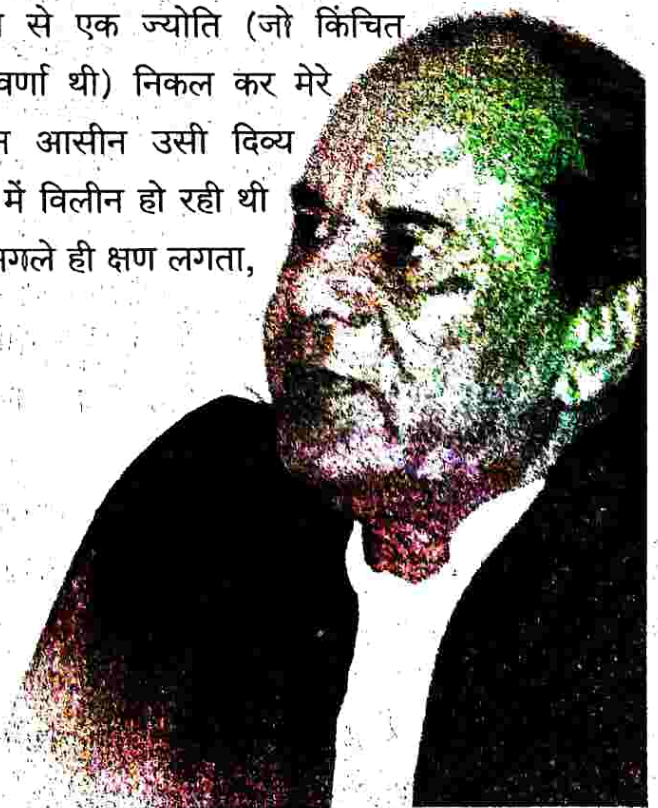
कि उस दिव्य मूर्ति में से कोई निर्मल प्रकाश निकलकर मेरे अंतः स्थल में समाहित हो रहा है।

वह गुरुदेव का ही चैतन्य स्वरूप था, यह तो मुझे कई वर्षों बाद ज्ञात हो सका। मैं तो उसको आत्मस्वरूप ही समझता था। मैं गलत भी नहीं था। यह सत्य है कि व्यक्ति का आत्मस्वरूप 'अंगुष्ठ प्रमाण' ही होता है। अर्थात जिसे इस नश्वर देह में 'जीवित' कहा जा सकता है, वह ज्योति या प्राण अथवा आत्म केवल एक सूक्ष्म ज्योति भर ही होती है, किन्तु उसका गतिशील स्वरूप गुरु मूर्ति होती है। वही गुरुमूर्ति ही तो 'अंगुष्ठ प्रमाण' स्वरूप लेकर प्रत्येक जीव में समाहित रहती है। दीक्षा एवं शिष्यत्व के पालन के द्वारा उसी मूर्ति को ही जाग्रत करना होता है। कोई भी साधक किसी भी व्यक्ति से भिन्न नहीं है। अंतर है तो केवल इसी जाग्रति का। 'आत्म ज्ञान' से यही गुरुत्व जाग्रत हो जाता है।

संस्कृत के एक सुभाषित में वर्णित किया गया है, कि एक योगी की वास्तविक माँ, पिता, बन्धु-बान्धव आदि गुरु होते हैं तथा विभिन्न गुणों अथवा स्थितियों को ही उसका सगा-संबंधी बताया गया है। मुझे उसी अनुसार अनुभव हो रहा था। मैं अपने आप में तृप्त एवं संतुष्ट था। मुझे प्रतीत हो रहा था कि मुझे जो कुछ जानना था, मैंने जान लिया है। मुझे जो कुछ प्राप्त करना था वह मैंने प्राप्त कर लिया है। मैं व्यक्त नहीं कर सकता था किन्तु अनुभव कर रहा था और इन्हीं क्रमों के मध्य मित्रा जी की समाधि भंग हुई। हम दोनों में दृष्टि के मिलने के साथ ही साथ संवाद भी सम्पन्न हो गया।

- "तुमने कुछ अनुभव किया?"
- उनकी मूक दृष्टि मुझसे प्रश्न पूछ रही थी।
- "मैंने सब कुछ अनुभव कर लिया है।"
- मेरी मूक दृष्टि में कृतज्ञता भरी हुई थी।

चित्त की एक दशा ऐसी भी आती है जब वहीं उसके पटल पर प्रश्न उभरते हैं और तत्काल वहीं उत्तर भी उभर आता है। मेरे चित्त में कई प्रश्न शेष रह गए थे जो बार-बार अंतर्मन के किसी अज्ञात पर्दे पर उभर आ रहे थे, फिर भी मुझे आश्वस्ति नहीं हो पा रही थी। मैं प्रत्येक उत्तर 'प्राप्त' होते ही दृष्टि उठा कर मित्रा जी की ओर देखता और मूक दृष्टि से ही पूछना चाहता कि क्या मैं वही समझ रहा हूँ जो वास्तविकता है।

कुछ प्रश्नों में वे भी अपनी सहमति दृष्टिपात के माध्यम से प्रदान करते, तो कहीं वे भी उलझ जाते। सत्य का अंतिम छोर कौन जान सका है? फिर भी हम अपने आधे-अधूरे ज्ञान से ही जो कुछ निर्मित करने का प्रयास करते हैं वही साधक जीवन का आनन्द है। अपने-अपने संस्मरणों को सुनाने में यदा-कदा जो नवीन ज्ञान का बिन्दु छलक उठता है वही तो आह्लाद का मोती होता है - जिसे साधक तत्क्षण हंस की भांति ग्रहण कर लेता है। जो प्रश्न शेष रह जाते वे भी आनन्द की विषय वस्तु होते है, क्योंकि उनकी खोज में एक नयी यात्रा का सूत्रपात जो होता है।

अध्यात्म का मार्ग इसी कारणवश कभी प्राचीन नहीं हो सका है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति उस सत्य का कितना ही रहस्योद्घाटन क्यों न कर दे, वह फिर भी शेष रह ही जाता है। इसी 'शेष' को प्राप्त करने में सदैव नवीन यात्रा का सूत्रपात होता रहता है और जीवन की गति बनी रहती है।

...रात्रि का कितना काल शेष रह गया है, इस बात का कोई ज्ञान नहीं था, न ही यह जानने की आतुरता ही, फिर तो वही जीवन है ही, किन्तु ये अमृतमय घड़ियां सुलभ हो पाएंगी, इसकी कोई भी आश्वस्ति नहीं। वह पवित्र शिला

साधना काल समाप्त हो जाने के बाद इस प्रकार की हो गयी थी ज्यों सूर्य दिन भर अग्निवर्षा करने के उपरांत अपने अस्तकाल में केवल शांत ही होता है, निस्तेज नहीं। शिला का प्रकाश मंद अवश्य हो गया था, पर उसकी प्रखरता में कोई भी कमी नहीं आयी थी। मेरा विचार है कि उस मंत्र जप से शिला का विशेष संबंध था जो मित्रा जी ने सम्पन्न किया था। मैं अपने शरीर में एक विचित्र प्रकार का प्रवाह अतिरिक्त रूप से अनुभव कर रहा था। यह प्रवाह मेरे अंदर संचरित उत्साह की तरंगों से भिन्न था। वर्षों तक साधनाओं में निमग्न रहने के कारण एवं प्रकृति की विरोधी परिस्थितियों को सहते रहने के कारण मुझमें जो जर्जरता और कटुता आ गयी थी वह समाप्त होती लग रही थी। मन में कुछ ऐसा उमड़ रहा था जो मुझे विनम्र एवं समर्पित बनाता जा रहा था।

समर्पण कोई धारणा या वस्तु नहीं होती जो हमारे उच्चरित करते ही शून्य से उत्पन्न हो जाए। मन में जब प्राप्ति का सुख होता है, वह भरा-भरा सा अनुभव करता है तभी वह फल भरी टहनियों की तरह झुक जाता है। रिक्तता से समर्पण नहीं आता, प्रचुरता से आता है और यह प्रचुरता देने की बात केवल गुरुदेव ही जानते हैं।

किसका अंतर्मन किस प्रकार से तृप्त होगा, यह सूक्ष्म भेद उनके अतिरिक्त जान भी कौन सकता है? कोई भोग से संतुष्ट होता है तो कोई योग से। किसी को आह्लाद की अनुभूति यश प्राप्त करके होती है तो किसी को अपनी भावनाएं निवेदित करके। यही कारण है कि गुरु की दृष्टि से भौतिक एवं आध्यात्मिक जगत में भेद की रेखा अत्यंत क्षीण ही होती है।

जब दो सहोदर व्यक्तियों की रुचियों में अंतर होता है, तो इस विशाल जगत में संतुष्टि एवं तृप्ति के कितने अधिक भेद होंगे, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। केवल उदर संबंधी एवं यौन संबंधी संतुष्टियां ही व्यक्ति के जीवन में प्रधान नहीं होती। ये तो भोग के अत्यंत स्थूल रूप है।

भावनाओं का संसार अत्यधिक व्यापक है जिनका ज्ञान संबंधित व्यक्ति को भी नहीं होता। यही हमारी 'अज्ञात अतृप्ति' का रहस्य है।

पूर्व जन्मकृत एवं इह जन्मकृत संस्कारों का जो जाल हमारे प्रारब्ध के साथ बुना होता है और जिसमें अनेक गाठें गुत्थियां पड़ी होती है उसे सुलझाना किसी प्रज्ञा पुरुष की क्षमता की विषय वस्तु ही हो सकती है। इसी कारणवश सद्गुरु की दृष्टि में न तो कोई हेय है न पतित।

यथार्थ चिकित्सक को रोगी से घृणा नहीं होती वरन चिंता होती है कि कैसे वह शीघ्र से शीघ्र अपने सामने उपस्थित रोगी को शांति का, विश्रांति का अनुभव करा दे। यही सद्गुरु व गुरु में भेद है। यही परीक्षण का एक उपाय है। जिस दिन सद्गुरु को भी भेद दृष्टिगोचर होने लग गया उस दिन से इस जगत में केवल पशुवत जीवन यापन ही शेष रह जाएगा। व्यक्ति अपने कर्मों में आबद्ध आता है और तद्नुसार फल भोग करता ही है। यदि यही जीवन का क्रम है तो इसमें गुरु की आवश्यकता ही क्या? **वह सद्गुरु केवल आस्था का एक आधार ही नहीं होगा वरन वही वह उपाय होता है जो जीवन के कर्म जाल को समाप्त कर सकता है।**

. . .मेरे मन में विचारों की अटूट शृंखला प्रारंभ हो
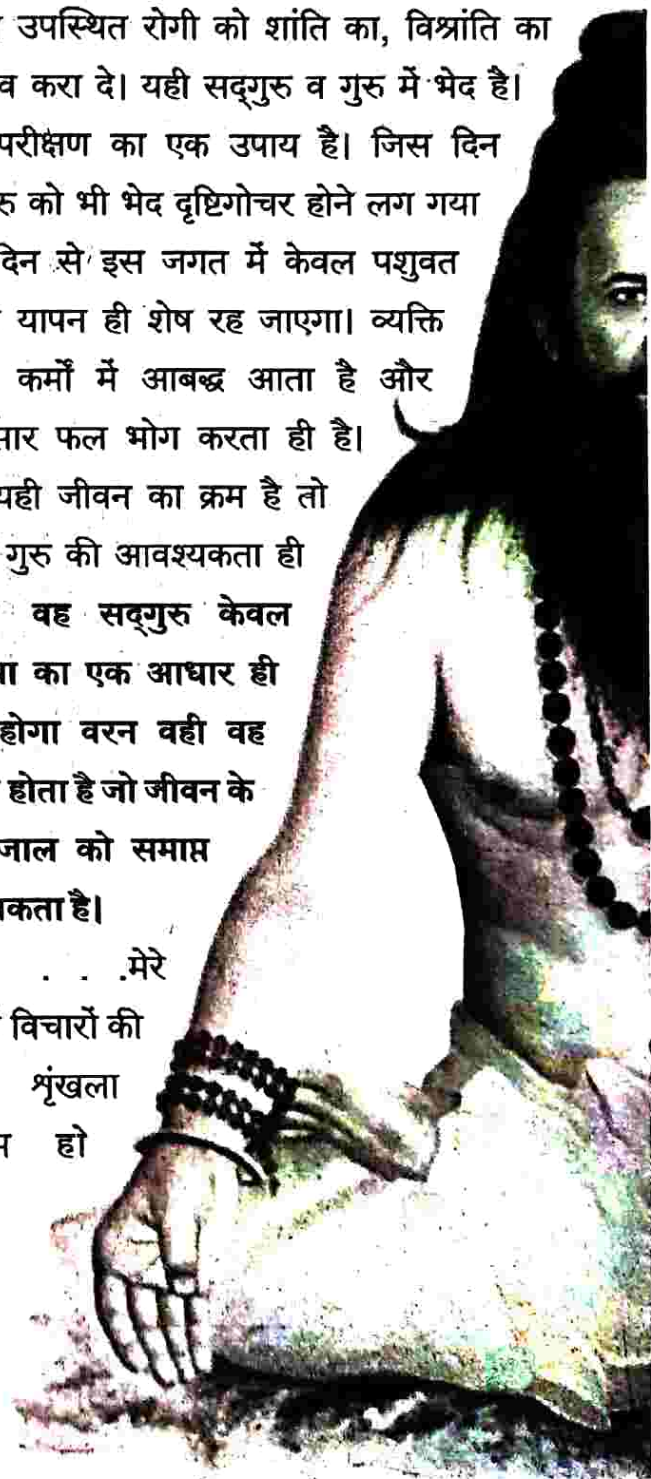
गयी थी। मुझे स्वयं से ही कोई नवीन परिचय होता अनुभव हो रहा था। मेरे मन में पहले तो कभी ऐसी विचार श्रृंखला नहीं प्रारंभ हुई थी - यह बात मैं अनुभव कर रहा था। यद्यपि मेरे हाथ-पाँव नहीं काँपे थे, मुझे किसी जोरदार झटके की भी अनुभूति नहीं हुई थी, लेकिन मुझे लग रहा था, कि मुझे गुरुदेव ने किसी न किसी रूप में दीक्षित किया ही है। मन में सर्वथा नवीन संचरण भी क्या किसी दीक्षा का प्रभाव नहीं है? दीक्षा के तो अनेक प्रकार कहे गए हैं।

कई वर्षों बाद जब मैं विकट बाबा के सम्पर्क में आया तब जान सका, कि किस प्रकार से उस दिन गुरुदेव ने ही मित्रा जी की देह का आश्रय लेकर मुझे आत्मज्ञान दीक्षा दी थी। यद्यपि आज तो मित्रा जी की देह शांत हो चुकी है और इस बात की सत्यता को मैं उनसे ही जानने में असमर्थ हूँ किन्तु इस बात पर विश्वास करता हूँ। मेरे लिए कुछ घण्टों में जगत का स्वरूप बदल चुका था। मैं अब केवल द्रष्टा मात्र ही नहीं वरन प्रकृति का एक अंग बन चुका था। मेरे रोम-रोम में नर्तन हो रहा था और समस्त शरीर मेरे चित्त की ही भांति सूक्ष्म होकर नृत्यरत हो गया था।

'जीवन कहाँ से आया है' और **'मृत्यु के बाद क्या होगा?'** - ये दो प्रश्न प्रत्येक व्यक्ति को पीड़ा देते ही रहते है। क्या योगी और क्या भोगी दोनों ही इन प्रश्नों से आक्रान्त रहते है, किन्तु मुझे इन प्रश्नों के उत्तर कुछ ही समय में स्वत: मिल गए थे। भगवतपाद आद्य शंकराचार्य ने अपने ग्रंथ **'विवेक चूड़ामणि'** में इस स्थिति का अत्यंत सुन्दर निरुपण किया है-

क्व गत केन वां नीतं कृत्र लीन मिदं जगत।
अधुनैव मया दृष्टं नास्ति किं महदद्भुतम्।।

अर्थात ''वह संसार कहाँ चला गया? उसे कौन ले गया? वह कहां लीन हो गया? अहो! कितना आश्चर्य है कि जिस संसार को मैं अभी तक देख रहा था वह कहीं नहीं दिखाई देता।''

व्यक्ति को व्यथित करने वाले प्रश्नों को केवल इसी प्रकार विलीन होकर समझा जा सकता है। योग की पराकाष्ठा विरक्ति में नहीं अपितु सब कुछ आत्मसात कर लेने में ही तो है। योग के माध्यम से व्यक्ति एक ओर सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होते हुए उस पीड़ादायक **'अहं'** से सदैव के लिए मुक्ति प्राप्त कर लेता है जो उसे कभी स्थिर रहने ही नहीं देता। मन की चंचलता का मूल यही अहं ही तो है, तो दूसरी ओर वह विराट की अनुभूति भी करके यह जान लेता है कि वही (साधक) इस विश्व का निर्धारक है। संकल्प उसी से उद्भुत होकर संरचना कर रहे है।

...किंचित अस्पष्ट सी प्रतीत होती ये बातें ही आत्मज्ञान की मनोदशा का कुछ-कुछ परिचय दे सकती हैं। उस स्थिति को आज तक कोई भी यथार्थत: वर्णित नहीं कर सका है। भगवतपाद आद्य शंकराचार्य जैसे उच्चकोटि के व्यक्तित्व एवं आत्मदर्शी उस रहस्य को जब **'चन्द्र स्वरूपं निज चक्षुषैव'** अर्थात चन्द्रमा का प्रकाश जैसे केवल अपने ही नेत्रों का विषय होता है, कह कर मौन हो गए है फिर क्षुद्र साधकों की गणना ही कहाँ? यह तो प्रयास होता है प्रत्येक साधक का कि वह अपने ढंग से कुछ व्यक्त करना चाहता है, क्योंकि 'आनन्द' का धर्म ही है व्यक्त हो जाना। आनन्द आत्मलीनता की स्थिति नहीं होती।

(क्रमश:)

01.10.16 से 10.10.16 तक

नवरात्रि के प्रत्येक दिन साधक प्रातः स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। पूजन स्थान को स्वच्छ कर एक बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर भगवती दुर्गा का चित्र स्थापित करें। चित्र के समक्ष ताम्रपत्र में **जगदम्बा सिद्धि यंत्र** को स्थापित करें तथा यंत्र के ऊपर **नवदुर्गा सिद्धि माला** को स्थापित करें। यंत्र के बायीं ओर चावलों की ढेरी बना कर उस पर **सर्व सिद्धिप्रद गुटिका** को स्थापित करें। पूजन से पूर्व सभी पूजन सामग्री को अपने पास रख लें।

पूजन सामग्री

बाजोट, लाल वस्त्र, अगरबत्ती, दीपक, पुष्प, फल, कलश, मिठाई, पंचामृत, नारियल, वस्त्र, जगदम्बा सिद्धि यंत्र, नवदुर्गा सिद्धि माला, सर्व सिद्धिप्रद गुटिका, तांत्रोक्त नारियल। इसके बाद पूजन आरंभ करें।

पवित्रीकरण

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

इस अभिमंत्रित जल को, दाहिने हाथ की उंगलियों से अपने सम्पूर्ण शरीर पर छिड़के, जिससे आंतरिक और बाह्य शुद्धि हो।

आचमनी

निम्न मंत्रों के उच्चारण के साथ तीन बार जल पीयें-

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।
ॐ अमतापिधानमसि स्वाहा।
ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः
श्रवतां स्वाहा।

दिशा बंधन

बायें हाथ में चावल लेकर दाहिने हाथ से चारों दिशाओं में तथा ऊपर व नीचे मंत्र का उच्चारण करते हुए छिड़के।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे।।

संकल्प

दाहिने हाथ में जल लेकर उसमें कुंकुम, अक्षत और पुष्प मिला कर निम्न मंत्र बोलें –

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद् भगवते महापुरुषस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्वेतवराह कल्पे जम्बूद्वीपे भारत खण्डे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक गोत्रोत्पन्नः सकल सिद्धि प्राप्ति निमित्तं, सुख, सौभाग्य, धन, धान्य प्राप्तये गणपति पूजनं, दुर्गा पूजनं च अहं करिष्ये।

जल भूमि में छोड़ दें।

गणपति पूजन

दोनों हाथ जोड़ कर गणपति का स्मरण करें –

ॐ खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं,
प्रस्यन्दन्मद गन्धलुब्ध मधुप व्यालोल गण्डस्थलम्।।
दन्ताघात विदारितारिरुधिरैः सिन्दूर शोभाकरं,
वन्दे शैलसुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्।।
भो गणपते इह आगच्छ इह तिष्ठ स्थिरो भव।

गणपति के लिए एक पुष्प आसन दें –

गं गणपतये नमः स्नानं समर्पयामि
वस्त्रं समर्पयामि नमः।
तिलकं, अक्षतान्, पुष्पाणि समर्पयामि नमः।।
नैवेद्यं निवेदयामि नमः।।
दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –
ॐ गजाननं भूत गणाधिसेवितं,
कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकं,
नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्।।

श्री गुरु ध्यान

द्विदल कमलमध्ये बद्धसंवित् समुद्रं।
धृतशिवमयगात्रं साधकानुग्रहार्थम्।।
श्रुतिशिरसिविभान्तं बोधमार्तण्डमूर्ति।
शमिततिमिरशोकं श्री गुरुं भावयामि।।
श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः ध्यानं समर्पयामि।

तत्पश्चात् कुंकुम, धूप, पुष्प अक्षत या नैवेद्य अर्पित कर गुरु पूजन सम्पन्न करें।

कलश स्थापन

अपने सामने बाजोट पर स्वच्छ लाल वस्त्र बिछाकर चावल के ढेरी के ऊपर जल से भरा हुआ कलश स्थापित करें। कलश पर स्वस्तिक का चिन्ह बनाकर कुंकुम की चार बिंदियां लगावें। कलश के भीतर एक सुपारी व एक रुपया डालें तथा कलश के ऊपर लाल वस्त्र में नारियल लपेटकर रखें। कलश पर मौली लपेट दें। फिर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागरास्सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगेश्च संहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी सदा।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः।

कलश पर पुष्प चढ़ाकर प्रणाम करें।

इसके बाद भगवती के चित्र पर जल से छींटा देकर पोंछ दें तथा कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करें।

दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वाधा नमोऽस्तुते।
आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिसूदनी।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते संकरप्रिये।

यंत्र पूजन

किसी थाली में **जगदम्बा सिद्धि यंत्र** को स्थापित करे, उसके बाद यंत्र को गंगा जल या शुद्ध जल से स्नान कराएं। दूध, घी, दही, शहद, शक्कर, मिलाकर पंचामृत

बनाएं तथा पंचामृत से यंत्र को स्नान कराएं। पुनः शुद्ध जल से धोकर किसी दूसरे पात्र में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उसमें यंत्र को स्थापित करें भगवती का पूजन करें।

ध्यान

दुर्गे स्मृता हरसि भौतिमशेष जन्तोः।
स्वस्थैः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि।
दारिद्रय दुःख भयहारिणी का त्वदन्या।
सर्वोएकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।

आवाहन

एक पुष्प रखें और निम्न संदर्भ का उच्चारण करें-

ॐ आगच्छेह महादेवि! सर्व सम्पत्प्रदायिनि!।
यावद्व्रतं समाप्येत तावत्वं सन्निधौ भव।।

आसन

पुष्प का आसन देकर निम्न मंत्र बोलें -

अनेक रत्न संयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यं आसनं प्रतिगृह्यताम्।

पाद्य

चरण धोने के लिए दो आचमनी जल चढ़ायें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

गंगदि सर्व तीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

अर्घ्य

आमचनी में जल लेकर उसमें अक्षत और पुष्प मिला लें और भगवती को चढ़ाएं -

निधीनां सर्व रत्नानां त्वमनर्घ्यगुणान्विता।
सिंहोपरिस्थिते देवि! गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते।।

आचमन

तीन बार आचमनी से जल चढ़ावें -

कर्पूरेण सुर्गधेन सुरभि स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं देवि! त्वं प्रतिगृह्यताम्।।

स्नानं

आचमनी से भगवती पर चल चढ़ावें।

मन्दाकिन्याः समानीतै र्हेमांभोरुहवासितैः।
स्नानं कुरुष्य देवेशि! सलिलैश्च सुगन्धिमिः।।

पञ्चामृत स्नान

दूध, दही, घी, शहद और चीनी मिलाकर स्नान करावें -

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

इसके बाद शुद्ध जल से स्नान कराके वस्त्र से पोंछ दें।

वस्त्र

दो वस्त्र भगवती पर चढ़ावें -

पट्टकूलयुगं देवि! कंचुकेन समन्वितम्।
परिधेहि कृपां कृत्वा दुर्गे! दुर्गतिनाशिनि।।

चन्दन

कुंकुम, चन्दन या केशर का तिलक करें -

श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।
विलेपनं च देवेशि! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

अक्षत

भगवती पर चावल चढ़ावें -

अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान्।
गृहाणेमान्महादेवि! देहि मे निर्मलां धियम्।।

माला

इसके बाद सुन्दर फूलों से बनी हुई माला अर्पित करें-

मंदारपारिजातादि पाटली केतकानि च।
जाती चंपक पुष्पाणि गृहाणेमनि शोभने।।

धूप और दीप दिखा करके नैवेद्य अर्पित करें -

अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।।

तीन आचमनी जल आचमन के लिए प्रदान करें तथा फल अर्पित करें। पुनः मुख शुद्धि के लिए आचमन कराएं। लौंग और इलायची से युक्त सुस्वाद पान अर्पित करें।

दक्षिणा

पूजा की पूर्णता के लिए कुछ द्रव्य भगवती को अर्पित करें।

पूजाफलसमृध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि।
स्थपिता तेन मे प्रीता पूर्णान्कुरु मनोरथान्।।

अब निम्न मंत्र का नवदुर्गा सिद्धि माला से निम्न लिखित प्रत्येक मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें -

।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।

।।ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।।

।।ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।।

प्रतिदिन मंत्र जप के पश्चात माँ दुर्गा की आरती एवं गुरु आरती सम्पन्न करें। साधना सम्पन्न होने के उपरान्त समस्त सामग्री को नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - 450/-

दुर्गा जी की आरती

ॐ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी।।1।।
ॐ जय अम्बे गौरी...

मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्जवल से दोऊ नैना, चंद्रवदन नीको।।2।।
ॐ जय अम्बे गौरी...

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।।3।।
ॐ जय अम्बे गौरी...

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःखहारी।।4।।
ॐ जय अम्बे गौरी...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति।।5।।
ॐ जय अम्बे गौरी...

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्र विलोचन नैना निशिदिन मदमाती।।6।।
ॐ जय अम्बे गौरी...

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।।7।।
ॐ जय अम्बे गौरी...

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।8।।
ॐ जय अम्बे गौरी...

चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरव।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरु।।9।।
ॐ जय अम्बे गौरी...

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःखहरता, सुख सम्पति करता।।10।।
ॐ जय अम्बे गौरी...

भुजा आठ अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।।11।।
ॐ जय अम्बे गौरी...

कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योति।।12।।

आयुर्वेद सुधा

अजवायन

अजवायन को कौन नहीं जानता? अजवायन के विषय में कहा जाता है - **एका यमानी शतमन्नपाचिका** अर्थात् अकेली अजवायन ही सौ प्रकार के अन्न पचाने वाली होती है। **भाव प्रकाश निघण्टु में लिखा है -**

यवानी पाचनी रुच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः।
दीपनी तथा तिक्ता पित्तला शुक्र हत्।
वात श्लेष्मोदरानाह गुल्म प्लीह कृमि प्रणुत्।

नाम : संस्कृत - यवानिका। हिन्दी - अजवायन। मराठी - ओवा। गुजराती - अजमो, जवाइन। बंगला - यमानी। तेलुगु - वामु। कन्नड़ - ओमा। तमिल - आमम।

गुण : यह पाचक, रुचिकारक, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, कड़वी, हलकी, अग्नि प्रदीप्त करने वाली, तिक्त, पित्तकारक तथा वीर्य, शूल, वात, कफ, उदर, गुल्म, प्लीहा तथा कृमि - इनका नाश करने वाली है। यह उष्णवीर्य होती है अतः गर्म प्रकृति वालों के लिए हानिकारक होती है। सिर्फ औषधि के रूप में उचित मात्रा के अनुसार लेने पर हानि नहीं करती।

परिचय : इसको सारे भारतवासी जानते है इसलिए परिचय देने की आवश्यकता नहीं। इसकी खेती सारे देश में होती है। एक अलग प्रकार की अजवायन और भी होती है जिसे खुरासानी अजवायन कहते हैं। यहां हम सिर्फ अजवायन के ही विषय के बारे में बात कर रहे हैं।

उपयोग : अजवायन का उपयोग औषधि के रूप में मुख्यतः उदर एवं पाचन से संबंधित विकारों तथा वात व्याधियों को दूर करने में, बहुत गुणकारी होता है। इसमें लाल मिर्च की तेजी, चिरायते की तिक्तता, राई की कटुता तथा हींग और लहसुन की वातनाशक विशेष गुणवत्ता होती है अतः यह गुणों का भण्डार है। यह उदरशूल, गैस, वायु गोला, पेट फूलना, वात प्रकोप आदि व्याधियों को दूर करने के लिए शर्तिया लाभकारी है।

अजवाइन के सत्त को 'अजवायन के फूल' और अंग्रेजी में थायमोल कहते है। प्रसिद्ध औषधियां अमृतधारा, प्राणसुधा आदि जितनी भी उदर विकार, उलटी दस्त, जी मचलाने घबराने और वायु के लिए दवाइयां बनती है सभी में थायमोल के रूप में अजवायन का सत्त मौजूद होता है जो तत्काल अपना चमत्कारी प्रभाव दिखाता है। अब इसके घरेलू प्रयोग दिये जा रहे हैं जो वक्त जरूरत बड़े उपयोगी और लाभदायक सिद्ध होंगे।

(1) अजवायन का बारीक चूर्ण 5 ग्राम और जरा सा सेन्धा नमक जल के साथ फाँक लें। इससे अरुचि दूर होती है।

(2) अजवायन 5 ग्राम, 3 छोटी हरड़ और 1 रत्ती भुनी हींग - इन तीनों को चूर्ण करके जल के साथ फांकने से अजीर्ण दूर होता है।

(3) अजवायन, काली मिर्च और काला नमक समभाग लेकर चूर्ण कर लें। इसे 3 से 5 ग्राम तक की मात्रा में गर्म जल से लेने से मन्दाग्नि नष्ट होती है।

(4) अजवायन जल में पीस कर थोड़ा गर्म करके पेट पर लेप करने तथा अजवायन और काले नमक को अदरक के रस में मिला कर सेवन करने से उदर शूल और अफारा तुरंत नष्ट होता है। एक और भी प्रयोग उपयोगी है - अजवायन 40 ग्राम, काली मिर्च व सेन्धा नमक 20-20 ग्राम, सबका चूर्ण करके रख लें। गर्म जल के साथ 5 ग्राम चूर्ण लेने से पेट का दर्द ठीक हो जाता है। यह वायु गोले की बढ़िया दवा है।

(5) अजवायन 3 ग्राम, बायविडंग 3 ग्राम, कपूर 1 रत्ती

और गुड़ 5 ग्राम इन सबकी एक गोली बना लें। इस गोली को 2-3 बार सेवन करने से पेट की कृमि नष्ट होती है।

(6) केवल अजवायन चूर्ण 5 ग्राम की मात्रा में मठे के साथ लेने से पेट के कृमि नष्ट हो जाते हैं।

(7) अजवायन, हरड़ और सोंठ का चूर्ण गाय के दूध से बने मठे के साथ सेवन करने से आमवात के उपद्रव नष्ट होते हैं।

(8) अजवायन का चूर्ण 5 ग्राम और 1 रत्ती कपूर मिला कर पीस लें और शहद में मिला कर चाट लें। इस प्रयोग से उल्टी बंद हो जाती है।

(9) अजवायन, सोंठ, पीपलामूल, कालीमिर्च, इन्द्र जौ, जीरा, धनिया, काला नमक सब समान भाग लें। धाय के फूल, बेल का गूदा, अनारदाना, अजमोद सब मिला कर पहले चूर्ण से तीन गुना लें, मिश्री छ: गुना लें। सबको मिला कर चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को 5 से 10 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सुबह शाम सेवन करने से अतिसार, संग्रहणी, मन्दाग्नि, अरुचि, वायु गोला, पीनस, खाँसी और उदर शूल में यथेष्ट लाभ होता है।

(10) अजवायन चूर्ण 5 ग्राम और 10 ग्राम गुड़ मिला कर खाने और अजवायन का चूर्ण गेरू में मिला कर शरीर पर मलने से शीतपित्त (पित्ती) में तुरंत लाभ होता है।

(11) नीम्बू के रस में यदि इसे सात बार डुबोकर सूखा लिया जाए तो नपुंसकता के अन्दर लाभ पहुँचता है।

(12) अजवाइन को गरम करके मलमल के कपड़े में पोटली बाँधकर सुंघाने से छीकें आकर जुकाम का वेग कम होता है।

(13) इसके तेल की मालिश करने से जोड़ों के दर्द में लाभ होता है।

(14) अजवाइन को पानी में गाढ़ा पीसकर दिन में दो बार लेप करने से दाद, खाज, घाव में लाभ होता है।

(15) अजवाइन के चूर्ण की तीन ग्राम मात्रा दिन में दो बार गरम दूध से लेने से स्त्रियों का रुका हुआ मासिक खुलकर आता है।

(उपयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

शिष्य धर्म

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी देवताओं की साधना करने की अपेक्षा, गुरु साधना को ही सभी सफलताओं की कुंजी समझता है।

☆ गुरु का कर्त्तव्य है कि बराबर शिष्य पर प्रहार करें और शिष्य के पास एकमात्र विकल्प है कि उस प्रहार को सहन करे। शिष्य में सहन करने की क्षमता नहीं है तो वह शिष्य नहीं बन सकता और गुरु में प्रहार करने की क्षमता नहीं है तो वह गुरु नहीं बन सकता।

★ शिष्य के सामने यदि कोई गुरु पर प्रहार कर लेता है ...शब्दों के माध्यम से या प्रश्न के माध्यम से, और वह चुपचाप सुन ले या यदि गुरु की निन्दा हो रही हो और वह सुन ले तो उससे बड़ा पापी इस संसार में कोई नहीं।

☆ **शिष्य की पूँजी केवल तीन चीजें होती हैं, चौथी अगर शिष्य के पास है तो वह शिष्य नहीं है। शिष्य के पास चौथी होनी ही नहीं चाहिए, उसके पास केवल समर्पण होता है, उसके पास सेवा होती है, उसके पास श्रद्धा होती है।**

★ गुरु जैसा करें वैसा तुम्हें करने की जरूरत नहीं है, गुरु जैसा कहे वैसा करने की जरूरत है। गुरु ऐसा क्यों कर रहा है, तुम उसे अभी समझ नहीं पाओगे।

☆ श्रद्धा के साथ अपने-आपको पूर्णरूप से समर्पित करने की क्रिया का भी भान होना चाहिए, इसलिए नहीं कि तुम्हारे समर्पण करने से गुरु को महानता मिलती है, गुरु की महानता तो उसके ज्ञान से है।

☆ शिष्य में समर्पणता होनी आवश्यक होती है, शिष्य को गुरुत्व प्राप्त करने के लिए समर्पण का होना आवश्यक है...और समर्पण का अर्थ है 'त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेवं समर्पयेत' ''मैं'' कुछ हूँ ही नहीं।

☆ गुरु कहे और शिष्य करे, वह तो मामूली मनुष्य है और गुरु कहे शिष्य करे ही नहीं वह राक्षस है, गुरु नहीं कहे और शिष्य इशारा समझ कर करे, वह देवता है।

☆ **यह गुरु ज्यादा जानता है कि तुम्हें क्या काम सौंपना है इसलिए यह तुम पर निर्भर है कि तुम पादपद्म बनो या विवेकानन्द, यह तुम्हारे हाथ में है, गुरु तो एक जगह खड़ा है।**

☆ जिस क्षण शिष्य के जीवन में तरंग आती है, जिस क्षण उसके जीवन में आनन्द की हिलोर आती है, तो वह निरंतर अग्रसर होता रहता है, क्योंकि लहर रुकती नहीं। पत्थर या लकड़ी एक जगह रुक सकती है, लहर नहीं रुक सकती।

✧ पूरे शरीर में रोम-रोम में गुरु को बसा लेने की जो क्रिया है, गुरु में डूब जाने की जो क्रिया है, वह प्रेम के माध्यम से ही संभव है।

✧ देखना चाहो तो तुम्हारे चारों ओर मैं ही तो बिखरा हूँ। कण-कण में मैं ही तो स्पन्दित हो रहा हूँ, कण-कण में मैं ही तो सुरभित हो रहा हूँ। अपने बगल में खिले उस पुष्प को देखो। क्या उसमें मैं ही नहीं हूं ?

✧ यह बात और है, कि तुम उस लय को देख पाओ या न देख पाओ, उसके कहे गीतों को सुन पाओ या न सुन पाओ, किन्तु इसमें न्यूनता उस पुष्प की नहीं है, पुष्प ने तो अपना कार्य कर दिया, करके विलीन हो गया। यह तो क्षण पकड़ने की बात होती है।

✧ **अध्यात्म का अर्थ स्वयं के उसी सौन्दर्य से परिचित हो जाना है जो सौन्दर्य अपने केवल एक अंश में तुम्हारे समक्ष कहीं पुष्प बनकर खिला है, तो कहीं आकाश में पल-प्रतिपल बदलते रंगों में छिपा है। एक आकाश तो तुम्हारे भी भीतर है वत्स! जाना नहीं इसे तुमने ? वहीं पर तो भादों के घने मेघों की तरह तैर रही हैं अनेक साधना सिद्धियां।**

✧ साथ ही मेरा स्वप्न तो यह भी है कि मेरे शिष्य उस पवित्र भूमि को स्पर्श कर, अपने जीवन को धन्य करें और उसकी चेतना से ओतप्रोत होकर, वहां की स्निग्धता में तरल होकर, वहां की पावनता से पवित्र होकर वहां की ज्योत्स्ना से शुभ्र होकर पुनः इस समाज में लौटें और समाज को स्पष्ट और प्रामाणिक विवरण दे सकें। बता सकें कि बिना भौतिकता को छोड़े हुए भी कैसे जीवन के उस सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।
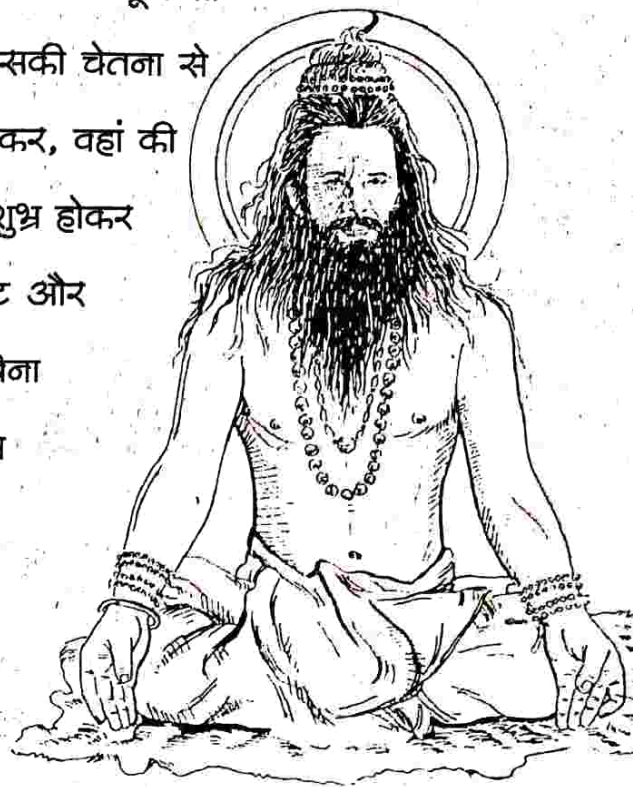
✧ ***कुण्डलिनी जागरण, सहस्त्रार भेदन, इष्ट दर्शन और ब्रह्म से साक्षात्कार करने की सम्पूर्ण प्रक्रिया का नाम ही 'प्रेम' है और जिसने प्रेम को जान लिया उसने सब कुछ पूर्णता के साथ पा लिया।***

✧ प्रेम की पराकाष्ठा प्राप्त करने के लिए असहनीय दर्द, तीव्र वेदना को सहन करना पड़ता है, बहुत तड़फना पड़ता है।

✧ जुदाई तो अपने आप में एक तपस्या है, किसी का इंतजार है, अपने आपमें पूर्ण साधना है। किसी को याद करना, किसी के चिंतन में डूबे रहना, अपने आपमें ईश्वर की साधना है।

✧ **यह तड़प जिन्दगी का सार है, जिन्दगी का आधार है, जीवन की मस्ती है, और इसी पगडण्डी पर चलकर तुम मुझे प्राप्त कर सकते हो।**

महालक्ष्मी साधना एवं पूजा की कई पद्धतियां दी गई हैं, परन्तु लगभग सभी ग्रंथों में इस एक बात को स्वीकार किया है कि विश्वामित्र प्रणीत तांत्रोक्त महालक्ष्मी साधना पूजा पद्धति अपने आपमें अद्वितीय, गोपनीय एवं दुर्लभ है।

यह एक ऐसी साधना पद्धति है, जिसको सम्पन्न करने के लिए उच्चकोटि के साधक हमेशा से लालायित रहे हैं, संन्यासियों ने यह स्वीकार किया है कि विभिन्न साधना पद्धतियों में यह उज्वल रत्न की तरह है, सिद्धाश्रम के योगियों ने भी एक स्वर से यह स्वीकार किया है कि विश्वामित्र ने इस साधना पद्धति को स्पष्ट कर पूरे विश्व पर महान उपकार किया है।

विश्वामित्र सिद्धि

विश्वामित्र निश्चय ही क्रांतिकारी और अद्वितीय महर्षि थे, परन्तु आर्थिक दृष्टि से अत्यंत ही विपन्न और गरीब थे, जिस समय वशिष्ठ आदि अन्य ऋषियों के आश्रम

सम्पन्न और समृद्ध थे, वहीं विश्वामित्र के आश्रम में दरिद्रता घर बनाये बैठी थी।

और यह स्थिति उनके हृदय को बेध गई, उन्होंने मुट्ठी तान कर ऐलान किया कि मैं उस साधना पद्धति को ढूंढ निकालूँगा जिसके द्वारा लक्ष्मी को बरबस मजबूर हो कर मेरे घर में, मेरे आश्रम में आना ही पड़ेगा, स्थायी रूप से निवास करना ही पड़ेगा और जन्म-जन्म के लिये महालक्ष्मी को मुझे सम्पन्नता सौभाग्य और द्रव्य प्रदान करते ही रहना पड़ेगा।

और विश्वामित्र ने तांत्रोक्त सहस्राक्षी महालक्ष्मी साधना पद्धति ढूंढ निकाली जो कि अपने आपमें अद्वितीय है, चाहे भाग्य में दरिद्रता लिखी हो, चाहे कितना ही दुर्भाग्य हो, चाहे घर में सात पीढ़ियों से दरिद्रता ने निवास कर रखा हो, परन्तु इस साधना पद्धति के सम्पन्न करने पर साधक आश्चर्यजनक रूप से सफलता और सम्पन्नता प्राप्त करता है; उसे यह विश्वास हो जाता है कि आज के युग में भी अचूक साधना पद्धतियां हैं, विश्वामित्र ने कहा कि चाहे इन्द्र का वज्र निष्फल हो जाए, परन्तु इस साधना पद्धति का प्रभाव निष्फल नहीं हो सकता; जो साधक इस साधना पद्धति को पूर्णता के साथ सम्पन्न करता है, उसके जीवन में धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य की अभिवृद्धि होती ही रहती है; वह चाहे कमजोर हो, अशक्त हो, निर्धन हो, अशिक्षित हो, परन्तु यदि दृढ़तापूर्वक इस साधना को सम्पन्न कर लेता है . . तो निश्चय ही उसकी दरिद्रता दूर होती ही है।

साधना पूजा समय

यह साधना दीपावली के अवसर पर सम्पन्न की जाती है और एक दिन की साधना है; इस वर्ष दीपावली 30.10.2016 की है, इस दिन स्थिर लग्न काल में यह साधना सम्पन्न करना चाहिए।

पूजा सामग्री

सामान्यत: पूजन में जो सामग्री होती है, वह सामग्री पहले से ही तैयार करनी चाहिए जिसमें - जलपात्र, गंगाजल, दूध, दही, घी, शहद, शक्कर, पंचामृत, चन्दन, केसर, चावल, पुष्प एवं मालाएं, घर में बना हुआ मिष्ठान्न, धूप, दीप, मौली, नारियल, सुपारी, फल और दक्षिणा।

साधना सामग्री पैकेट

(1) सहस्राक्षी मंत्रों से सम्पुटित महालक्ष्मी यंत्र, (2) सहस्राक्षी महालक्ष्मी माला, (3) महालक्ष्मी फल, (4) गोमती चक्र, (5) रोगमुक्ति रुद्राक्ष, (6) शुत्रहंता गुटिका, (7) 31 कमल बीज, (8) महालक्ष्मी चित्र।

पूजा व्यवस्था

दीपावली के दिन पूजा गृह को स्वच्छ करें, द्वार पर कुंकुम से स्वस्तिक बनावे, दरवाजे के दोनों ओर यदि संभव हो तो साधना द्वार को केले के पत्ते लगाकर और पुष्प मालाओं की वन्दनवार से सजायें, उत्तर की ओर मुँह करते हुए सफेद आसन बिछाए और सामने पूजन एवं साधना सामग्री को रख दें।

साधक स्वयं या अपनी पत्नी और परिवार के साथ यह पूजा और साधना करे तो ज्यादा अनुकूल रहेगा।

दीपावली पूजन विधि

सबसे पहले भूमि पर स्वस्तिक बना कर, गंध अक्षत पुष्प से उस स्वस्तिक का पूजन करें।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अखण्ड-मण्डलाकारं विश्व-व्याप्यं व्यवस्थितम्। त्रैलोक्य-मण्डितं येन मण्डलं तत् सदा-शिवम्।।

कलश स्थापन

इसके बाद ''फट्'' शब्द का उच्चारण करते हुए कलश को धो कर उसे स्वस्तिक पर रखें (कलश तांबे, पीतल या मिट्टी का हो सकता है) और उसमें शुद्ध जल भरें, यदि गंगाजल हो तो थोड़ा सा गंगाजल भी डालें -

ब्रह्माण्डोदर-तीर्थानि करे; स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देवः तीर्थं देहि दिवाकर।

आवाहन

फिर इसमें समस्त तीर्थों को आवाहन करें -

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी, जले स्मिन् सन्निधि कुरु।

फिर इस कलश में थोड़े से चावल, सुपारी एवं दक्षिणा डालें और इसमें पुष्प डालकर पांच पीपल के पत्ते बिछा कर उस पर मौली बाँध कर नारियल रखें।

स्नानम्

एक लकड़ी के पट्टे पर पीला वस्त्र बिछाकर पैकेट में प्राप्त साधना सामग्री क्रम से रखें, इसके बाद नारियल नीचे रख कर सारी सामग्री पर उस कलश का जल छिड़कते हुए उसे पवित्र करें।

प्रार्थना

इसके बाद निम्न प्रार्थना करते हुए कि मेरे सभी विघ्न दूर हो, हाथ में चावल ले कर अपने और अपने परिवार के ऊपर घुमाते हुए दसों दिशाओं की ओर फेंक दें।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि-संस्थिता;
ये भूता विघ्न-कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।

फिर पृथ्वी की प्रार्थना करते हुए उसे गन्ध, पुष्प, अक्षत समर्पित करें और आसन पर केसर की बिन्दी लगावे।

भूमि त्वया घृता देवि; त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्।।

फिर सामने एक पात्र में आठ बिन्दियां कुंकुम की लगावे और उन बिन्दियों पर चावलों की ढेरी बनाये तथा प्रत्येक ढेरी पर निम्न स्थापन करें -

वास्तु पुरुषाय नमः।	*रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।*
भद्रकाल्यै नमः।	*पवित्र वज्र भूमे हुं फट् स्वाहा।*
भैरवाय नमः।	*आं आसुरेखे वज्र रेखे हुं फट् स्वाहा।*
द्रां द्वार देवताभ्यो नमः।	*आं आधार शक्त्यै नमः।*

फिर इन सबकी यथोचित गंध, अक्षत, पुष्प से पूजा करे।

अमृतीकरण न्यास

इसके बाद अपनी चोटी को गांठ लगावे और तीन बार दाहिने हाथ में जल ले कर आचमन करें और फिर अपने पूरे शरीर पर हाथ फेरते हुए निम्न उच्चारण करें -

(क) *मं मूल श्रृंगारकत् सुषुम्णा पथैन जीव-शिवं परम-शिव पदे योजयामि स्वाहा।*
(ख) *यं संकोच शरीरं शोषय शोषय स्वाहा।*
(ग) *रं संकोच शरीर दह दह पच पच स्वाहा।*
(घ) *वं परम शिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा।*
(च) *लं शाम्भव शरीरं उत्पादयोत्पादय स्वाहा।*
(छ) *रं हसः सौ हमवतरावतर शिव पदाज्जीवं सुषुम्णा पथेन प्रविश मूल श्रृगांटकमुल्लासो त्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सौ हं स्वाहा।*

यह शरीर का अमृतीकरण न्यास है जिससे कि पूरा शरीर अमृतमय हो जाता है और साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

सामग्री प्राण प्रतिष्ठा

आं ह्रीं क्रों यं रं लं व शं षं सं हों ॐ क्षं सं हंसः आवरण सहिता महालक्ष्मी प्राणः इह प्राणः। आं ह्रीं महालक्ष्मी जीव इह स्थितः। आं ह्रीं महालक्ष्मी सर्वेन्द्रियाणि। आं ह्रीं महालक्ष्मीं वाड् मनश्चक्षु श्रोत्र त्वक् जिह्वा-घ्राण पद प्राण इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठतु स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुये बायें हाथ में केसर से रंगे

हुए चावल लेकर साधना सामग्री पर थोड़े-थोड़े चावल छिड़कते हुए उनकी प्राण प्रतिष्ठा करें।

इसके बाद सभी साधना सामग्री के सामने एक-एक दीपक निम्न प्रकार से उच्चारण करता हुआ स्थापित करें।

श्री महालक्ष्म्यै नम: - दीपं स्थापयामी
सहस्राक्षी मालायै नम: - दीपं स्थापयामी
श्री सिद्ध लक्ष्म्यै फलं नम: - दीपं स्थापयामी
हेम पीठाय नम: - दीपं स्थापयामी
रुदाय नम: - दीपं स्थापयामी
शत्रु नाशाय फट् - दीपं स्थापयामी
ऐं ऐश्वर्य नम: - दीपं स्थापयामी
महालक्ष्मी नम: - दीपं स्थापयामी

इसके बाद इन सभी पदार्थों की जल से, गंगाजल से, पंचामृत से, छींटें डालते हुए स्नान करावे और फिर केसर का तिलक करे, तत्पश्चात उन पर अक्षत चढ़ावे और पुष्प समर्पित करें। **फिर उन सभी दीपकों को प्रज्वलित कर दें।**

गुरु पूजन

इसके बाद इस बाजोट के पीछे गुरु चित्र स्थापित करें और गन्ध, अक्षत, पुष्प से पूजन निम्न मंत्रों से करें।

ऐं सिद्धोघभ्य: परात्पर-गुरूभ्यो नम: श्रीपादुकां पूजयामि नम: तपयामि नम:। ऐं मानवौधेभ्य: अपर गुरूभ्यो। ऐं शिवादि-स्व-गुरू परम्परा श्रीपादुका ऐं पादुकया स्व-गुरू श्रीपादुका पूजयामि।

गणपति पूजन

इसके बाद पुन: अलग से सुपारी पर मौली लपेट कर उन्हें गणपति मान कर एक पात्र में स्वास्तिक का चित्र बनाकर उस पर गणपति को स्थापित करें और उसके सामने नैवेद्य समर्पित करें -

गां गीं गूं गैं गौं ग: गणपतये वर-वरद सर्व जन में वशमानय बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा।

ध्यान

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै: अमृत-चैतन्य मूर्ति कल्पयामि।

यह मंत्र उच्चारण करते हुए भगवती महालक्ष्मी का ध्यान करे और उसके पास में ही एक बिन्दी लगा कर भगवान श्री नारायण को प्रतिष्ठित करे और उन दोनों का पूजन करे, पूजन में गन्ध, अक्षत, पुष्प समर्पित करें।

नैवेद्यम्

इसके बाद भूमि पर कुंकुम से गोल घेरा बना कर उस पर नेवैद्य पात्र रखें।

चित् पात्रे सद्धवि सौख्यं विविधानेक-भक्षणमु निवेदयामि ते देवि। मूल मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तापोशन हस्त प्रक्षालनं मुख-प्रक्षालनं पाद-प्रक्षालन-आचमनीयं-फलं ताम्बूल समर्पयामि:।

आचमनम्

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, ॐ श्री महालक्ष्म्यै नम: आचमनीयं समर्पयामि।।

इसके बाद अपने जीवन की सारी समस्याओं और बाधाओं को समाप्त करने के लिए जमीन पर कुंकुम की तीन बिन्दियां लगावे और थोड़ा-थोड़ा प्रसाद लेकर इन तीन बिन्दियों के सामने रख दें और बलि निवेदन करे -

एहा हि देवी-पुत्र बटुकनाथ कपिल जटा भार भासुर त्रिनेत्र ज्वालामुखी, सर्व विघ्नान नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा।

इसके बाद समस्त ग्रह, समस्त भूत, समस्त पितर, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर आदि को नैवेद्य चढ़ाते हुए, बलिदान नैवेद्य समर्पित करें और हाथ में पुष्प ले कर प्रार्थना करें -

बलिदानेन सन्तुष्टाः क्षमस्त्रं बलि-देवता।
विहरन्तु यथा-सौख्यं यथेष्टा सुदिशासु च।
बटुकाद्याः सुराः सर्वे सर्व-सिद्धि-विधायिः च।
मे शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्च सन्तु सत्तत् प्रसादतः।

क्षेत्रपाल पूजन

इसके बाद एक अलग चावलों की ढेरी बनाकर उस पर दीपक जगावे और क्षेत्रपाल की भावना लाते हुए, कुंकुम, अक्षत, पुष्प से पूजा कर नैवेद्य चढ़ावे -

क्षां क्षीं क्षूं क्षै क्षः हुं स्थान क्षेत्रपाल धूप दीप सहितं बलि गृहण गृहण सर्वान कामान् पूरय पूरय स्वाहा।

दीपम्

इसके बाद उस दीपक के सामने दोनों हाथों में पुष्प लेकर समर्पित करें।

योऽस्मिन क्षेत्रे निवासी च क्षेत्रपालस्य किंकरः।
प्रीतो यं बलिदानेन सर्व रक्षा करोतु मे।।

मंत्र जप

इसके बाद साधक जो लकड़ी के बाजोट पर जो सामग्री स्थापना की है, उसके सामने सहस्राक्षी महालक्ष्मी माला से पाँच माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं महालक्ष्मी आगच्छ आगच्छ नमः

फिर वहीं आसन पर बैठे बैठे ही यज्ञ कुण्ड में पति-पत्नी दोनों शुद्ध घृत में **कमल बीज** मिलाकर **ॐ महालक्ष्म्यै नमः** मंत्र का उच्चारण करते हुए 31 आहुतियां दें।

मंत्र जप एवं हवन के उपरांत गुरु आरती और भगवती लक्ष्मी की आरती करें और आरती के ऊपर हाथ घुमा कर पूरे शरीर को स्पर्श करें।

पुष्पांजलि

इसके बाद हाथ में जल लेकर पुष्पांजली समर्पित करे।

बलिदानेन संतुष्टो बटुकः सर्व सिद्धिवः।
शान्ति करोतु मे नित्यां भूत-वेताल-सेवितः।।

क्षमा प्रार्थना

इसके बाद हाथ में जल लेकर भगवती महालक्ष्मी से क्षमा याचना करते हुए, निम्न मंत्र पढ़ कर जल छोड़े -

ॐ इतः पूर्व प्राण देह धर्माधिकारत्ती जाग्रत स्वप्न सुषुप्त्यवस्थासु कर्मणा वाचा मनसा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृत यदुक्तं तत् सर्व श्री महालक्ष्म्यै नमः समर्पयामि मां मदीयं च सकलं श्री ब्रह्मार्पणमस्तु।

इसके बाद पुनः हाथ पैर धो कर सभी परिवार के साथ प्रसाद ले एवं सुख पूर्वक भोजन करें।

दूसरे दिन सुबह पुनः सबकी दीपक जलाकर महालक्ष्मी आरती करें।

इस प्रकार यह प्रयोग और भगवती महालक्ष्मी पूजन जो संसार की सर्वश्रेष्ठ साधना एवं पूजा पद्धति है जिसे इस वर्ष दीपावली पर्व पर प्रत्येक साधक को सम्पन्न करनी ही चाहिए।

साधना सामग्री- 450/-

यह साधना सामग्री पैकेट निश्चित संख्या में ही तैयार किये गये हैं और गुरुदेव ने कुछ विशिष्ट साधकों को वी.पी.पी. से भिजवा दिये हैं। यह पैकेट छुड़ाने पर गुरुदेव की तरफ से एक वर्ष की सदस्यता उपहारस्वरूप प्रदान की जायेगी। यदि आप भी यह **दीपावली पूजन पैकेट** प्राप्त करना चाहते हैं तो अपना ऑर्डर शीघ्र ही फोन पर हमें लिखा दें या 08890543002 पर एस.एम.एस. कर दें।

दीपावली की रात्रि प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण होती हैं, कुछ लोग लक्ष्मी पूजन कर इस पर्व को मनाते है तो कुछ इस रात्रि को जुआ खेलकर अपने भाग्य को आजमाइश करते हैं और कुछ इस रात्रि को विशेष साधनाएं सम्पन्न कर जीवन में पूर्ण आर्थिक व्यापारिक सफलता प्राप्त करते हैं।

नीचे मैं कुछ ऐसे महत्वपूर्ण गोपनीय प्रयोग पहली बार प्रस्तुत कर रहा हूँ जो कि अपने आप में महत्वपूर्ण हैं अभी तक ये प्रयोग सर्वथा गोपनीय रहे है और किसी पुस्तक में इस प्रकार के प्रयोग दिखाई नहीं दिये क्योंकि इस प्रकार के प्रयोग व्यक्तिगत रूप से ही गुरु द्वारा अपने गृहस्थ शिष्यों को प्राप्त होते रहे हैं। परंतु ये प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण और शीघ्र प्रभावोत्पादक है। मैंने कई गृहस्थ शिष्यों और साधकों से ये प्रयोग सम्पन्न कराये हैं और उन्हें आशातीत सफलता प्राप्त हुई है।

साधकों को चाहिए कि वे इनमें से एक या दो प्रयोग तो अवश्य ही सम्पन्न करे, क्योंकि इस प्रकार का महत्वपूर्ण पर्व पुन: एक साल भर बाद ही प्राप्त होता है। अत: प्रयोगकर्ता को पहले से ही तैयारी कर लेनी चाहिए और इन प्रयोगों को सम्पन्न करना चाहिए।

1. आश्चर्यजनक व्यापार वृद्धि प्रयोग

यह प्रयोग दीपावली की रात्रि को सम्पन्न किया जाता है। इस वर्ष इस प्रयोग के लिए रात्रि को सूर्यास्त से 8 बजकर 53 मिनट तक का समय विशेष महत्वपूर्ण है। यदि इस समय में यह प्रयोग सम्पन्न किया जाए तो निश्चय ही व्यापार वृद्धि में विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है।

सामग्री

जल, पात्र, अगरबत्ती, घी का दीपक, **केसर व्यापार सिद्धि यंत्र एवं शंख माला।**

मंत्र

ॐ ह्रीं धनधान्य समृद्धिं दरिद्रविनाशिनी महालक्ष्मी मम गृहे आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ॐ नम:।

विधि

साधक या प्रयोगकर्ता आसन बिछाकर पूर्व की ओर मुँह कर बैठ जाए, सामने पात्र में **'व्यापार सिद्धि यंत्र'** रख दे, पहले उसे जल से धो ले, फिर पौछकर इस पर केसर का तिलक करे और सामने स्थापित कर उसके सामने दूध का बना प्रसाद रखे और अगरबत्ती तथा घी का दीपक प्रज्वलित करे, फिर **शंख माला** से उपरोक्त मंत्र की पांच मालाएं फेरे -

इसके बाद प्रात:काल होने पर इस यंत्र को अपने घर के पूजा स्थान में, दुकान पर अथवा फैक्ट्री में स्थापित कर दे।

ऐसा करने पर उसके व्यापार में निरंतर उन्नति होती रहती है और जब तक वह यंत्र दुकान में, कार्यालय या

फैक्ट्री में अथवा घर में स्थापित रहेगा तब तक उसे निरंतर सफलता प्राप्त होती रहेगी।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और इस प्रयोग से सैकड़ों लोगों ने आश्चर्यजनक लाभ उठाया है।

साधना सामग्री- 450/-

2. स्थिर लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है और प्रत्येक साधक को यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए। इस प्रयोग को सिद्ध करने पर आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त होती है और उसे जीवन में किसी भी दृष्टि से असफलता या परेशानी नहीं रहती।

सामग्री

स्थिर लक्ष्मी यंत्र, स्थिर लक्ष्मी माला, केसर, जलपात्र, अगरबत्ती, दीपक, लाल वस्त्र।

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं महालक्ष्मी धनदा यक्षिणी कुबेराय मम गृहे स्थिरो ह्रीं ॐ नमः।

इस वर्ष इस प्रयोग को सम्पन्न करने का समय दोपहर को 11.57 से 12.45 मिनट के बीच है। अन्यथा रात्रि में स्थिर लग्न में भी सम्पन्न कर सकते हैं। यह समय इस दृष्टि से अत्यधिक सफलतादायक है।

साधक अपने सामने लाल वस्त्र बिछाकर उस पर **स्थिर लक्ष्मी** यंत्र रख दे। जो कि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो और उस पर केसर से स्वस्तिक बना ले तथा कुंकुम से तिलक कर दे।

ऐसा करने के बाद **स्थिर लक्ष्मी माला** से उपरोक्त मंत्र की 6 मालाएं फेरे, ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है। मंत्र प्रयोग पूरा होने के बाद लाल वस्त्र में यंत्र को बांध कर घर में किसी अच्छे स्थान पर रख दे, जब तक वह यंत्र घर में रहेगा तब तक उसके जीवन में निरंतर उन्नति होती रहेगी।

वास्तव में यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है और इस वर्ष तो एक विशेष योग दीपावली के दिन निर्मित हुआ है। अतः उपरोक्त बताये हुए समय में यदि यह प्रयोग सिद्ध किया जाए तो आर्थिक दृष्टि से विशेष सफलतादायक कहा जा सकता है।

साधना सामग्री-450/-

3. दरिद्रता विनाशक प्रयोग

यह प्रयोग भी दीपावली के दिन ही सम्पन्न करने का विधान है। प्रातः जल्दी उठकर इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए। इस वर्ष ज्योतिष की दृष्टि से प्रातः 10.48 से 12.10 तक का समय इस प्रयोग के लिए विशेष महत्वपूर्ण कहा जा सकता है।

सामग्री

दारिद्रय विनाशक तंत्र फल (मंत्र सिद्ध), **मूंगा माला,** जल पात्र, अगरबत्ती, घी का दीपक।

मंत्र

।। ॐ क्रीं तालिके दरिद्र विनाशिन्यै हुं फट् ।।

विधि

सर्व प्रथम साधक पूर्व की ओर मुँह कर बैठ जाए सामने किसी पात्र में **मंत्र सिद्ध दरिद्रता विनाशक तंत्र फल** रख दे और उस पर केसर से अपना नाम लिख दे। फिर उपरोक्त मंत्र की पांच मालाएं फेरे इसके लिए **मूँगे की माला** का प्रयोग किया जा सकता है।

जब मंत्र जप पूरा हो जाए तब प्रयोगकर्ता स्वयं उस दरिद्रता विनाशक तंत्र फल को दक्षिणा के साथ किसी गरीब या भिखारी को दान में दे दे। कहा जाता है कि ऐसा करने से उस तंत्र फल के साथ ही साथ दरिद्रता भी दान में चली जाती है और उसके घर में भविष्य में किसी प्रकार की दरिद्रता का वास नहीं रहता।

यदि भिखारी नहीं मिले तो प्रयोगकर्ता स्वयं किसी मंदिर में जाकर दक्षिणा के साथ उस तंत्र फल को भेंट कर दें।

इस प्रकार करने से उसके जीवन में यदि कोई ग्रह बाधा या अन्य किसी प्रकार की कोई अशुभ बाधा योग होता है, तो वह समाप्त हो जाता है। उसके घर से दरिद्रता हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण है और प्रत्येक साधक को चाहिए इस दीपावली के अवसर पर इस प्रयोग को अवश्य सम्पन्न करें।

साधना सामग्री- 330/-

4. गृहस्थ सुख प्रयोग

यह भी दीपावली के दिन ही करने का प्रयोग है, गृहस्थ में किसी प्रकार की कोई बाधा या परेशानी हो, पति-पत्नी में मतभेद, तनाव, पुत्र का आज्ञाकारी न होना या पुत्र को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त न होना, घर में संतान न होना या अन्य किसी भी प्रकार की गृहस्थ बाधा हो तो इस प्रयोग से दूर की जा सकती है।

इस वर्ष प्रयोग को सम्पन्न करने का श्रेष्ठ समय दिन को 9 बजकर 30 मिनट से 10 बजकर 48 मिनट तक का समय है, इस अवधि में इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है।

सामग्री

गृहस्थ बाधा निवृति यंत्र, बाधा निवारण माला, दीपक, अगरबत्ती।

मंत्र

ॐ श्रीं मम गृहे तुष्टिं भव कंकावत्यै
शिरो भव फट् स्वाहा।

विधि

साधक ठीक समय पर आसन पर बैठ जाए और मन में यह चिंतन करे कि मैं यह प्रयोग गृहस्थ की सभी बाधाओं को दूर करने के लिए कर रहा हूँ। तत्पश्चात् उपरोक्त माला से उपरोक्त मंत्र की इस अवधि में ही 6 मालाएं फेरे।

जब मंत्र जप पूरा हो जाए तब उस गृहस्थ यंत्र को अपने घर में तिजोरी अथवा अलमारी में किसी डिब्बी में बन्द कर रख दे, जब तक यह यंत्र घर में रहेगा, तब तक उस घर में किसी प्रकार का कलह या गृहस्थ से संबंधित परेशानियां नहीं आयेगी।

वास्तव में यह प्रयोग कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है और साधक को चाहिए कि यह दीपावली के दिन विशेष योग में यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करे, ऐसा प्रयोग सम्पन्न होने से उसके जीवन में सभी प्रकार की उन्नति होगी और वह जीवन में पूर्ण गृहस्थ सुख भोगता हुआ जीवन यापन करने में समर्थ हो पाता है।

वास्तव में यह प्रयोग गोपनीय होने के साथ-साथ महत्वपूर्ण रहा है और कई साधकों तथा गृहस्थ लोगों ने इस प्रयोग से लाभ उठाया है।

साधना सामग्री- 390/-

5. सर्वोन्नति प्रयोग

यह प्रयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। कर्जा उतारने, रकम कहीं रुक गई हो तो उसे प्राप्त करने, व्यापार वृद्धि, नौकरी में प्रमोशन, आर्थिक उन्नति, रोग मुक्ति आदि, सभी कार्यों और उन्नति में यह प्रयोग लाभदायक रहा है।

सामग्री

सर्वकामना सिद्धि यंत्र, रुद्राक्ष माला, जल पात्र, अगरबत्ती, घृत का दीपक।

मंत्र

ॐ महायक्षाय मम सर्वोन्नति सिद्धि
देहि दापय स्वाहा।

विधि

साधक को चाहिए कि वह इस समय में उत्तर की ओर मुँह कर बैठ जाए और सामने दीपक, अगरबत्ती लगा ले, फिर रुद्राक्ष की माला से उपरोक्त मंत्र की तीन मालाएं फेरे।

मंत्र जप पूरा होने पर वह यंत्र अपने घर के पूजा स्थान में रख दे और संभव हो सके तो रोज उसके सामने अगरबत्ती व दीपक लगावे।

ऐसा करने पर उस प्रयोगकर्ता के जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति होती रहती है और उसके रुके हुए कार्य पूरे हो जाते हैं, यदि उसका रुपया कहीं रूक गया हो और वापिस नहीं आ रहा हो तो धन प्राप्त हो जाता है, मुकदमें में सफलता, किरायेदार से मुक्ति और किसी प्रकार के कार्य सिद्धि में यह प्रयोग अत्यधिक अनुकूल और महत्वपूर्ण माना है।

प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह इस विशेष अवसर पर इस प्रयोग को सिद्ध करे जिससे कि वह जीवन में सभी दृष्टियों से उन्नति कर सफलता प्राप्त कर सके।

साधना सामग्री- 450/-

ऊपर मैंने कुछ प्रयोग दिये हैं, जो सर्वथा गोपनीय और विशेष महत्वपूर्ण है, यदि साधक इन प्रयोगों को दीपावली के अवसर पर प्रयोग कर लाभ उठाते हैं तो वास्तव में ही वे जीवन में सभी दृष्टियों से अनुकूलता प्राप्त कर सफलता युक्त बन सकेंगे। ▣

दीक्षा - एक वरदान है मानव को.... और किसी अद्वितीय व्यक्तित्व अथवा सद्गुरु में ही इतनी क्षमता होती है, जो सहजता से इसे प्रदान कर सकते हैं। एक भाग्यशाली व्यक्ति ही श्रेष्ठ गुरु द्वारा दीक्षा प्राप्त कर सुख-सौभाग्य प्राप्त कर सकता है।

समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति का आधार मात्र दीक्षा ही है, जो आज के युग में शीघ्र प्रभावकारी एवं शीघ्र फलदायी है..... और जब तक कामना पूर्ति नहीं है, तब तक जीवन अधूरा ही है।

प्रत्येक मनुष्य का यह स्वप्न होता है, कि वह अल्प समय में ही धनवान बन जाए, उसे अधिक लाभ प्राप्त हो जाए, उसका परिवार समस्त प्रकार की सुख-सुविधाओं का भोग कर सके, एक मधुरता का वातावरण बन सके . . . और धन प्राप्त करना, ऐश्वर्य, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करना अपने-आप में कोई तुच्छता नहीं है और ऐसा सोचना अनुचित भी नहीं है, क्योंकि वह चाहता है, कि मैं अल्प समय में ही सब कुछ प्राप्त कर लूँ।

जीवन में भौतिक अभावों के कारण ही आज समाज में परिपूर्णता दृष्टिगोचर नहीं होती, और शास्त्रों में वर्णित - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों में से भी आज अर्थ को ही सर्वप्रथम महत्त्व दिया जाने लगा है, हर कोई इसे ही प्राप्त करना चाहता है, क्योंकि वह धनपति बनना चाहता है और इसके लिए वह जी तोड़ परिश्रम करता है, इधर-उधर भागता फिरता है, परन्तु उसका परिश्रम सार्थक नहीं हो पाता, इसके लिए वह विभिन्न उपाय टोने-टोटके, मंदिर, गिरिजाघर, गुरुद्वारे आदि में जाकर मन्नतें मांगता है, ईश्वर से प्रार्थना करता है तथा पूजा-आराधना आदि से सम्पन्न करता है, किन्तु फिर भी उसे सफलता नहीं मिल पाती।

> गुरु, शिष्य के विकारों को दूर करने वाला चिकित्सक है। शरीर में चुभे हुए कांटों को तो कोई भी निकाल देगा, किन्तु जीवन में चुभे हुए दरिद्रता रूपी कांटे को तो गुरु रूपी चिकित्सक ही सहस्राक्षी महालक्ष्मी दीक्षा द्वारा निकाल सकते हैं।

अध्यात्म की ओर यदि दृष्टि डालें, तो ज्ञात होता है कि 90 प्रतिशत व्यक्ति ऐसे हैं, जो लक्ष्मी से संबंधित साधनाएं ही करना ज्यादा पसंद करते हैं, जिससे कि वे अपने जीवन में धन-धान्य, ऐश्वर्य, समृद्धि, यश, मान, श्री, वैभव आदि से परिपूर्ण हो इस भौतिक जगत में अपने गृहस्थ जीवन को पूर्णता के साथ संचालित कर सकें।

किन्तु जब आप हर उपाय करके थक जायें, जब आपको लक्ष्मी के विभिन्न स्वरूपों की साधना करने पर भी सफलता नहीं मिल रही हो और आपके प्रयास बार-बार विफल हो रहे हों, तो आपको चाहिए कि आप अल्प समय में ऐसी कोई युक्ति अपनायें, जिससे आप अपनी कामनाओं की पूर्ति कर सकें।

और आज के युग में दीक्षा ही एक मात्र ऐसा संसाधन है, जो मानव जीवन के लिए उपयोगी है।

आज के इस अर्थवादी युग में, जो धनवान हैं, वही पूजनीय हैं, वही सम्माननीय है और जो निर्धन हैं, गरीब हैं, उनका समाज में कोई विशेष स्थान नहीं है, ऐसे में धन के अभाव के कारण व्यक्ति को बहुत सी परेशानियों, समस्याओं, संकटों का सामना प्रतिपल करना पड़ता है, जिसके कारण वह हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है और उसके मन में इस भावना का उदय होना ही, उसका मृत्यु की ओर गतिशील होना है... और तभी आज एक बड़ी संख्या में व्यक्ति ऐसे हैं, जो धनाभाव के कारण मृत्यु तुल्य जीवन जी रहे हैं... क्योंकि उन्हें ऐसा कोई योग्य गुरु मिला ही नहीं, जो उन्हें उनके संकटों से उबार सके, और न ही आजकल ऐसे गुरु सहज सुलभ रह गये हैं, जो इस योग्य हो।

...और ऐसे में एक सामर्थ्यवान गुरु ही व्यक्ति को पूर्णता की ओर गतिशील कर सकते हैं, अन्य नहीं। निर्धनता, बेरोजगारी तथा अन्य दुःख ताप आदि उसके पूर्व जन्मकृत दोषों व पाप कर्मों का ही फल हैं, किन्तु '**सहस्राक्षी महालक्ष्मी दीक्षा**' को प्राप्त कर, इन समस्याओं से मुक्त हुआ जा सकता है।

संसार में जो भी सम्पन्नता है, सभी बाह्य रूप से अर्जित की हुई होती है, इसीलिए उनसे मिलने वाली सफलता संदिग्ध होती है, किन्तु सहस्राक्षी लक्ष्मी दीक्षा द्वारा व्यक्ति के अन्दर निहित त्रिशक्ति क्रिया, ध्यान और इच्छा जाग्रत हो जाती है और उसे स्वयं ही लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होने लगती है।

'सहस्राक्षी दीक्षा' – मस्तक पर पड़ी दुर्भाग्य की लकीरों को मिटा देने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है, जिसे प्राप्त कर व्यक्ति का जीवन सफलता की ओर अग्रसर हो जाता है। इस महत्वपूर्ण दीक्षा को प्राप्त करने के पश्चात् लक्ष्मी का आगमन स्थायी रूप से उस साधक, शिष्य, अथवा व्यक्ति के घर में होता ही है, उस दीक्षा के प्रभाव से शीघ्र ही धनागम के स्रोत स्वतः ही खुलने लग जाते हैं, व्यापार में वृद्धि होने लगती है, साथ ही आकस्मिक रूप से भी धन की प्राप्ति होने लगती है।

सहस्राक्षी महालक्ष्मी, साधक व शिष्य के जीवन के समस्त पूर्व जन्मकृत पाप-दोषों का नाश करने वाली देवी हैं, इन्हें पाप-ताप संहारिणी भी कहा जाता है – जो समस्त पाप दोषों का निवारण कर व्यक्ति के भाग्य को ही परिवर्तित कर देती हैं, फिर उसे जीवन में अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता, क्योंकि ये उसे वैभव, समृद्धि, सम्पन्नता, ऐश्वर्य सभी कुछ तो प्रदान करने में समर्थ हैं।

धन-सम्पदा और वैभव-विलास की अधिष्ठात्री देवी सहस्राक्षी महालक्ष्मी हैं.... इसलिए जीवन में पूर्णता प्राप्ति हेतु इस दीक्षा का सर्वोपरि स्थान है, अतः शास्त्रों आदि में इसका विशेष महत्त्व स्वीकार किया जाता है।
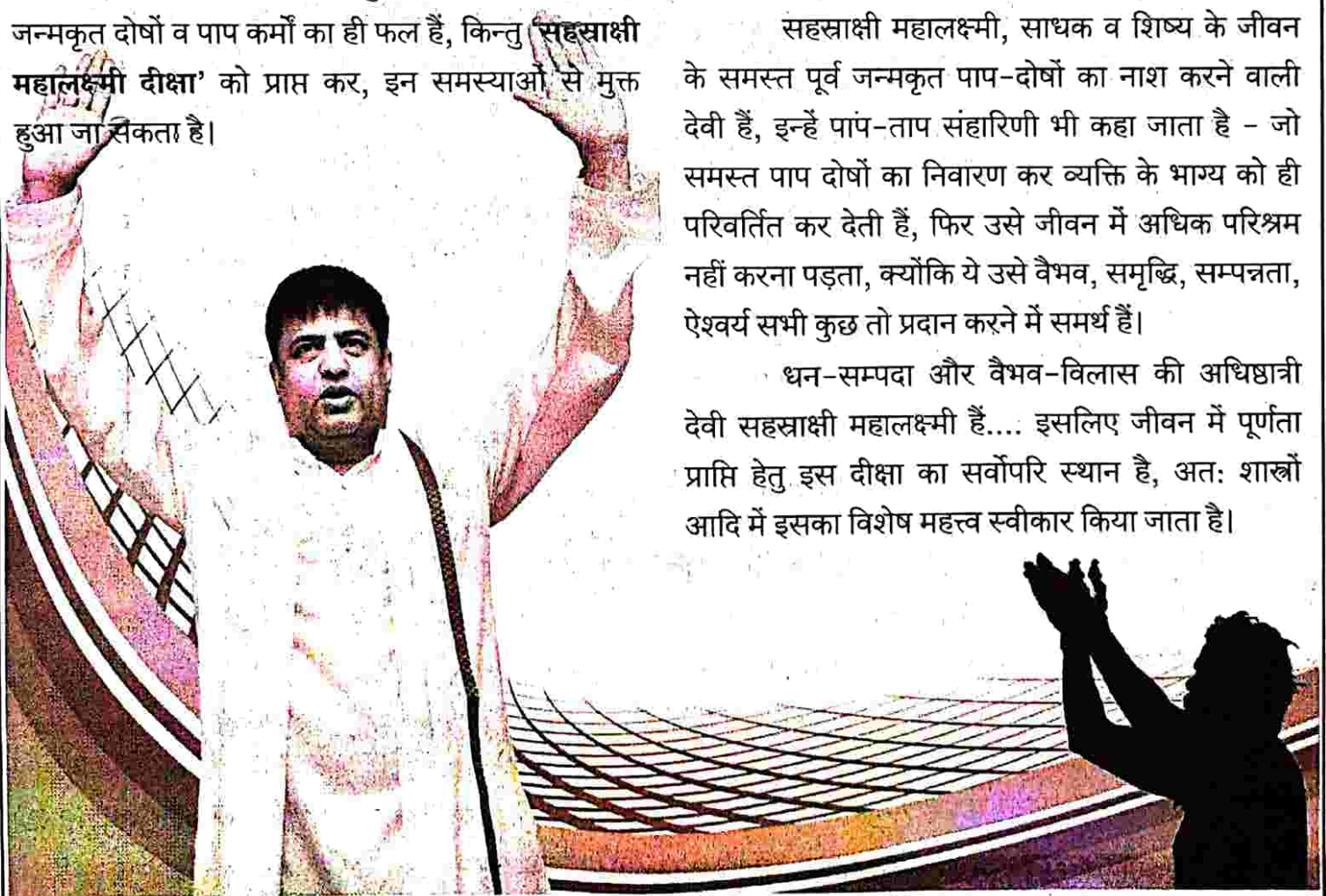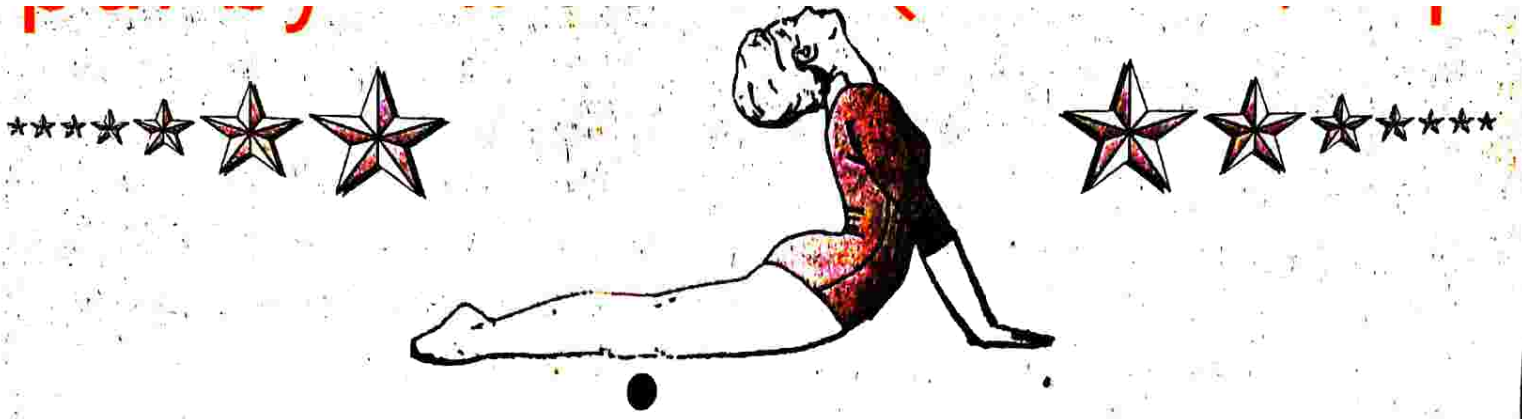
भुजंगासन

इस आसन में शरीर की आकृति फन उठाये हुए भुजंग अर्थात् सर्प जैसी बनती है इसलिए इसको भुजंगासन या सर्पासन कहा जाता है।

ध्यान विशुद्धाख्य चक्र में। श्वास, ऊपर उठते वक्त पूरक और नीचे की ओर जाते समय रेचक।

विधि : प्रात:काल भूमि पर बिछे हुए कम्बल पर पेट के बल लेट जायें। दोनों पैर और पंजे परस्पर मिले हुए रहें। पैरों के अंगूठों को पीछे की ओर खींचें। दोनों हाथ सिर के तरफ लम्बे कर दें। पैरों के अंगूठे, नाभि, छाती, ललाट और हाथ की हथेलियाँ भूमि पर एक सीध में रखें।

अब दोनों हथेलियों को कमर के पास ले जायें। सिर और कमर ऊपर उठाकर जितना हो सके उतना पीछे की ओर मोड़ें। नाभि भूमि से लगी रहे। पूरे शरीर का वजन हाथ के पंजों पर आयेगा। शरीर की स्थिति कमान जैसी बनेगी। मेरुदण्ड के आखिरी भाग पर दबाव केन्द्रित होगा। चित्तवृत्ति को कण्ठ में और दृष्टि को आकाश की तरफ स्थिर रखें।

20 सेकेण्ड तक यह स्थिति रखें। बाद में धीरे-धीरे सिर को नीचे ले आयें। छाती भूमि पर रखें। फिर सिर को भी भूमि से लगने दें। आसन सिद्ध हो जाने के बाद आसन करते समय श्वास भरके कुम्भक करें। आसन छोड़ते समय मूल स्थिति में आने के बाद श्वास को खूब धीरे-धीरे छोड़ें। हर रोज एक साथ 8-10 बार यह आसन करें।

लाभ–घेरंड संहिता में इसका लाभ बताते हुए कहा गया है–**'भुजंगासन से जठराग्नि प्रदीप्त होती है, सर्वरोगों का नाश होता है और कुण्डलिनी जागरण में सहायता मिलती है।'**

मेरुदण्ड के तमाम मनकों को तथा गर्दन के आसपास के वायु स्नायुओं को अधिक शुद्ध रक्त मिलता है। फलत: नाड़ी तन्त्र सचेत बनता है, चिरंजीवी, शक्तिमान एवं सुदृढ़ बनता है। विशेषकर, मस्तिष्क से निकलने वाले ज्ञानतन्तु बलवान बनते हैं। पीठ की हड्डियों में रहने वाली तमाम खराबियाँ दूर होती हैं। पेट के स्नायुओं में खिंचाव आने से वहाँ के अंगों को शक्ति मिलती है। उदरगुहा में दबाव बढ़ने से कब्ज दूर होती है। छाती और पेट का विकास होता है तथा उनके रोग मिट जाते हैं। गर्भाशय विकार रहित अच्छा बनता है। फलत: मासिक स्राव कष्ट रहित होता है। मासिक धर्म सम्बन्धी समस्त शिकायतें दूर होती हैं। भोजन के बाद होने वाला वायु का दर्द नष्ट होता है। शरीर में स्फूर्ति आती है। कफ-पित्तवालों के लिए यह आसन लाभदायी है। भुजंगासन करने से हृदय मजबूत बनता है। मधुप्रमेह और उदर के रोगों से मुक्ति मिलती है। प्रदर, अतिमासिक स्राव तथा अल्प मासिक स्राव जैसे रोग दूर होते हैं।

इस आसन से मेरुदण्ड लचीला बनता है। पीठ में स्थिति इड़ा और पिंगला नाड़ियों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। कुण्डलिनी शक्ति जागृत करने के लिए यह आसन सहायक है। अमाशय की मांसपेशियों का अच्छा विकास होता है। थकान के कारण पीठ में पीड़ा होती हो तो सिर्फ एक बार ही यह आसन करने से पीड़ा दूर होती है। ▣

मतिमन्द

एक कर्मकाण्डी ब्राह्मण किसी सेठ के यहाँ गीता पाठ के लिए जा रहा था। रास्ते में एक नदी पड़ती थी, उसके किनारे पर एक घड़ियाल बैठा मिला। बोला – ''महाराज, पहले मुझे गीता सुनाइए, फिर सेठजी को।''

यह कहते हुए उसने भेंट स्वरूप मोतियों का एक हार ब्राह्मण देवता के सामने रख दिया। फिर क्या था। ब्राह्मण गीता सुनाने लगा। यह क्रम रोज चलने लगा।

आज जब गीता पाठ सम्पूर्ण हुआ, तो घड़ियाल ने ब्राह्मण को मोतियों का एक घड़ा दक्षिणा में दिया और कहा – ''पण्डितजी, कृपा करके अगर आप मुझे त्रिवेणी में छोड़ आएँ तो ऐसे पाँच घड़े आपको और दूँगा।''

ब्राह्मण ने घड़ियाल की बात मान ली और उसे त्रिवेणी पहुँचा दिया।

घड़ियाल ने वायदे के मुताबिक मोतियों के पाँच घड़े दिये। लेकिन जब ब्राह्मण खुशी-खुशी वापस चलने लगा तो उसने देखा कि घड़ियाल उसकी तरफ देखकर व्यंग्य से मुस्कुरा रहा है। इस पर ब्राह्मण ने उससे पूछा, तुम क्यों मुस्कुरा रहे हो तब उस घड़ियाल ने कहा ''आप अवन्तिका में जाकर मनोहर धोबी के गधे से मिलिए। वह आपको इसका मतलब बतलाएगा।''

अवन्तिका पहुँचकर ब्राह्मण गधे से मिला।

गधे ने कहा – ''पूर्व जन्म में मैं राजा का सेवक था। राजा एक बार त्रिवेणी स्नान को गये। त्रिवेणी के दर्शन से राजा इतने आनन्दित हुए कि उन्होंने राजपाट छोड़कर वहीं ईश्वरभजन में बाकी जिन्दगी बिताने का संकल्प कर लिया। मुझ पर महाराज का बड़ा स्नेह था। इसलिए अनुग्रह के साथ बोले – ''इच्छा हो तो तुम भी यही हमारे साथ रहो, तुम्हारी भी उम्र सौ के करीब पहुँच रही है, वर्ना ये हजार स्वर्ण मुद्राएँ लेकर घर लौट जाओ।''

मैं मूढ़ था। धन-वैभव के व्यामोह में लौट आया। तुमने भी यही गलती की। बुढ़ापे में घड़ियाल जैसे क्षुद्र जीव में भी आत्मशान्ति के लिए अपना इंतजाम कर लिया। लेकिन तुम मनुष्य और फिर मनुष्यों में श्रेष्ठ ब्राह्मण होकर भी धन की तृष्णा में अभी तक दर-दर भटक रहे हो। तुम्हारी यह मतिमन्दता देखकर ही घड़ियाल हँसा था।

—प्रस्तुति : राजेश गुप्ता 'निखिल'

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

सितम्बर 2016

11. प्रात: **सूर्य** नमस्कार करने के बाद भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें।
12. **ॐ नम: शिवाय** बोलते हुये **पारद शिवलिंग** में जल चढ़ायें।
13. आज **भुवनेश्वरी साधना** प्रारंभ कर सकते हैं।
14. अपने पूजा स्थान में घी का दीपक जलायें।
15. आज **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** का 108 बार उच्चारण करके जाएं।
16. किसी गरीब असहाय को भोजन करायें।
17. पीपल के पत्ते पर मिठाई रखकर पीपल वृक्ष की जड़ में रख दें।
18. आज प्रात: सबसे पहले गाय को रोटी खिलायें।
19. किसी ब्राह्मण को 2 सिद्धिफल (न्यौछावर 60/-) के साथ अन्न दान करें।
20. आज सुबह **हनुमान गुटिका** (न्यौछावर 90/-) अपने ऊपर से 7 बार घूमाकर कुछ दक्षिणा के साथ दान में दे दें।
21. **निखिल स्तवन** के श्लोक 11 से 20 तक का पाठ करें एवं शिष्योपनिषद सीडी का श्रवण करें।
22. आज **गुरु गुटिका** (न्यौछावर 120/-) धारण करें, साधना में सफलता मिलेगी।
23. आज गुरु पूजन के बाद **ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं** का 21 बार उच्चारण करके जाएं।
24. प्रात: **बगलामुखी गुटिका** (न्यौछावर 150/-) स्थापित करके **ह्लीं** मंत्र का 51 बार उच्चारण करके उसे धारण कर लें शत्रुओं से रक्षा होगी।
25. जून पत्रिका में प्रकाशित सूर्य साधना सम्पन्न करें।
26. **मधुरुपेण रुद्राक्ष** (न्यौछावर 120/-) का पूजन करके धारण करें, फिर एक माह के बाद किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें।
27. आज आप **हनुमान बाहु** (न्यौछावर 90/-) पूजन करके धारण करें, फिर 1 माह बाद जल में विसर्जित कर दें, शत्रु शांत रहेंगे।
28. **भगवान गणपति** को लड्डू का भोग लगाये एवं दुर्वा समर्पित करें।
29. प्रात:काल **दुर्गोपनिषद सीडी** का श्रवण करें।
30. पत्रिका में प्रकाशित **श्राद्ध विधान** के अनुसार साधना करें।

अक्टूबर 2016

1. आज से नवरात्रि प्रारंभ हो रही है - **नवरात्रि साधना** प्रारंभ करें।
2. आज **माँ दुर्गा** की आरती करके जाएं।
3. प्रात: **ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे** की तीन माला मंत्र जप करके जाएं।
4. **माँ दुर्गा** के चरणों में तीन लाल पुष्प चढ़ायें।
5. प्रात: **लक्ष्मी मंत्रों** से आपूरित एक लघु नारियल (न्यौछावर 60/-) पीले चावल पर स्थापित कर **ॐ ह्रीं ॐ** का 5 मिनट तक जप करें, फिर देवी मंदिर में चढ़ायें।
6. **मनोकामना गुटिका** (न्यौछावर 120/-) अपनी इच्छा बोलते हुये माँ दुर्गा के मंदिर में चढ़ा दें।
7. माँ दुर्गा के मंदिर में घी का एक दीपक जलायें।
8. आज **ह्लीं** मंत्र का 108 बार उच्चारण करके जाएं।
9. प्रात: 5 माला **ॐ दुं दुर्गाय नम:** करके जाएं।
10. आज **दुर्गा मंत्र** से हवन करें, आरती करें एवं दूध से बना प्रसाद वितरित करें और कन्याओं को भोजन करायें।

पापांकुशा एकादशी
12.10.16

बालार्कायुततेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं
नानालंकृतिराजमानवपुषं बालोडुराट् शेखराम्।
हस्तैरिक्षुधनु: सृणिं सुमशरं पाशं मुदा बिभ्रतीं
श्री चक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत्।।

पाप विमोचनी त्रिपुर सुन्दरी साधना

साधनाओं में सफलता प्राप्ति का मूल उत्स पुष्ट देह, सचरित्र तथा शांत मानस होता है। इस प्रकार की देह, इस प्रकार का मानस तथा ऐसा ही जीवन प्राप्त करना आज के इस भौतिकवादी युग में अत्यंत ही दुष्कर कार्य हो गया है। व्यक्ति चाहकर भी अपने-आपको पवित्र तथा निर्मल नहीं बना पाता, वह जाने-अनजाने में अनेक कर्म-दोषों से ग्रसित होता ही है।

यह समस्त भूलोक पूरी तरह से कर्म प्रधान है, इस पृथ्वी पर जन्म लेने वाले प्रत्येक जीव को कोई न कोई कर्म करते ही रहना पड़ता है, और यह कर्म करना जीव की विवशता ही कही जा सकती है, उसकी यह विवशता मृत्यु के पश्चात् भी समाप्त नहीं होती।

यों तो कर्मों की विवेचना करना, पाप और पुण्य का सही निर्णय करना अनादिकाल से ही एक दुष्कर कार्य रहा है, फिर भी जनहित की भावनाओं को लेकर कर्मों की संक्षिप्त विवेचना करना आज के युग में अत्यंत ही आवश्यक हो गया है।

प्राय: सामान्य दृष्टि से देखा जाए, तो जीव

जन्म लेते ही कर्म-बन्धनों से जुड़ जाता है, और प्रतिपल नवीन कार्य करना तथा पूर्वजन्मकृत संचित कर्मों के फलों को भोगना जीव की नियति है और यही नहीं अपितु जीव जिस गर्भ से जन्म लेता है, जिस परिवार में जन्म लेता है, उनके कर्मों का परिणाम भी उससे जुड़ा रहता है, जिसे जीव को भोगना ही पड़ता है।

यहां सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि जीव कितने प्रकार के कर्म करता है अथवा वे कर्म, जिनका भोग जीव को भोगना पड़ता है, कितने प्रकार से सम्पन्न होते हैं?

प्रथम वे कर्म होते हैं, जिन्हें जीव स्वयं को प्राप्त पंच भौतिक देह के माध्यम से सम्पन्न करता है तथा भू-लोक के समस्त प्राणी, जिन्हें देखते हैं और उनसे प्रभावित होते हैं, और जिसका परिणाम जीव को निश्चित तथा शीघ्र ही प्राप्त होने वाला होता है, ऐसे कर्म **'दैहिक कर्म'** कहलाते हैं।

दूसरे कर्म वे होते हैं, जिन्हें जीव दैहिक कर्मों के अलावा मानसिक रूप से सम्पन्न करता है। इस प्रकार के कर्म दैहिक कर्मों के साथ-साथ ही सम्पन्न किये जाते हैं। इन कर्मों को ''वैचारिक कर्म'' कहते हैं। इनका परिणाम स्थूल देह के साथ-साथ आत्मा को भी भोगना पड़ता है, यदि इन वैचारिक कर्मों को दैहिक कर्मों से न भी जोड़ा जाए, तो भी जीवात्मा इनके परिणामों से प्रभावित होती ही है।

तीसरे प्रकार के कर्म सर्वथा विचित्र तथा अनोखे होते हैं, विचित्र इसलिए होते हैं, क्योंकि जीव इन कर्मों को न तो देह के माध्यम से सम्पन्न करता है और न ही मानसिक रूप से। इस प्रकार के कर्मों को कोई दूसरा व्यक्ति ही सम्पन्न करता है, जिसका परिणाम भी पहले व्यक्ति अथवा जीव को भोगना ही पड़ता है।

इस प्रकार से यह जीव जगत, यह मनुष्य अनेक प्रकार के कर्म-दोषों से ग्रसित हो जाता है और जब तक यह इन दोषों से, इन त्रिपातों से मुक्ति नहीं पा लेता, इन पर नियंत्रण स्थापित नहीं कर लेता, तब तक वह जीवन में पूर्ण उन्नति, पूर्ण शांति, सुख, वैभव एवं जीवन की सर्वश्रेष्ठ निधि **'ब्रह्मानन्द'** को नहीं प्राप्त कर सकता।

इन त्रितापों पर विजय प्राप्त करने की, इन दोषों को समाप्त करने की एकमात्र सर्वश्रेष्ठ साधना **''त्रिपुर सुन्दरी साधना''** है। यह महाविद्या साधना दस महाविद्याओं में से एक है। महादेवी त्रिपुर सुन्दरी अपने भक्तों के, अपने साधकों के दोषों को दूर करने के लिए प्रति क्षण तत्पर रहती ही है।

त्रिपुर सुन्दरी व्यक्ति के पूर्व संचित कर्मों को तो समाप्त करती ही हैं, साथ ही व्यक्ति के जीवन में चल रहे वर्तमान समय के दुष्कर्म, जो कि व्यक्ति के लिए ज्ञात-अज्ञात हैं, अपनी सूक्ष्म उपस्थिति से उन कर्मों को न करने देने के लिए प्रायः व्यक्ति को विवश करती रहती हैं, और उसे जीवन में निर्मलता, पवित्रता, श्रेष्ठता तथा निष्पाप जीवन प्रदान करने के साथ ही वह सब कुछ प्रदान कर देती है, जिसका कि वह व्यक्ति आकांक्षी है।

महादेवी त्रिपुर सुन्दरी जिस स्वरूप में विद्यमान हैं वह अत्यंत ही गूढ़तम रहस्यों से ओत-प्रोत है। जिस महामुद्रा में वे भगवान शिव की नाभि से निकलते कमलदल पर विराजमान हैं, वे मुद्राएं उनकी कलाओं को प्रदर्शित करती हैं, उनके कार्यों की तथा उनकी अपने भक्तों के प्रति जो भावनाएं हैं, उनका सूक्ष्म विवेचन करती हैं।

सोलह पंखुड़ियां के कमलदल पर पद्मासन मुद्रा में बैठी देवी 'त्रिपुर सुन्दरी' पूर्ण मातृ स्वरूपा हैं तथा सभी पापों एवं दोषों से मुक्त करती हुई अपने
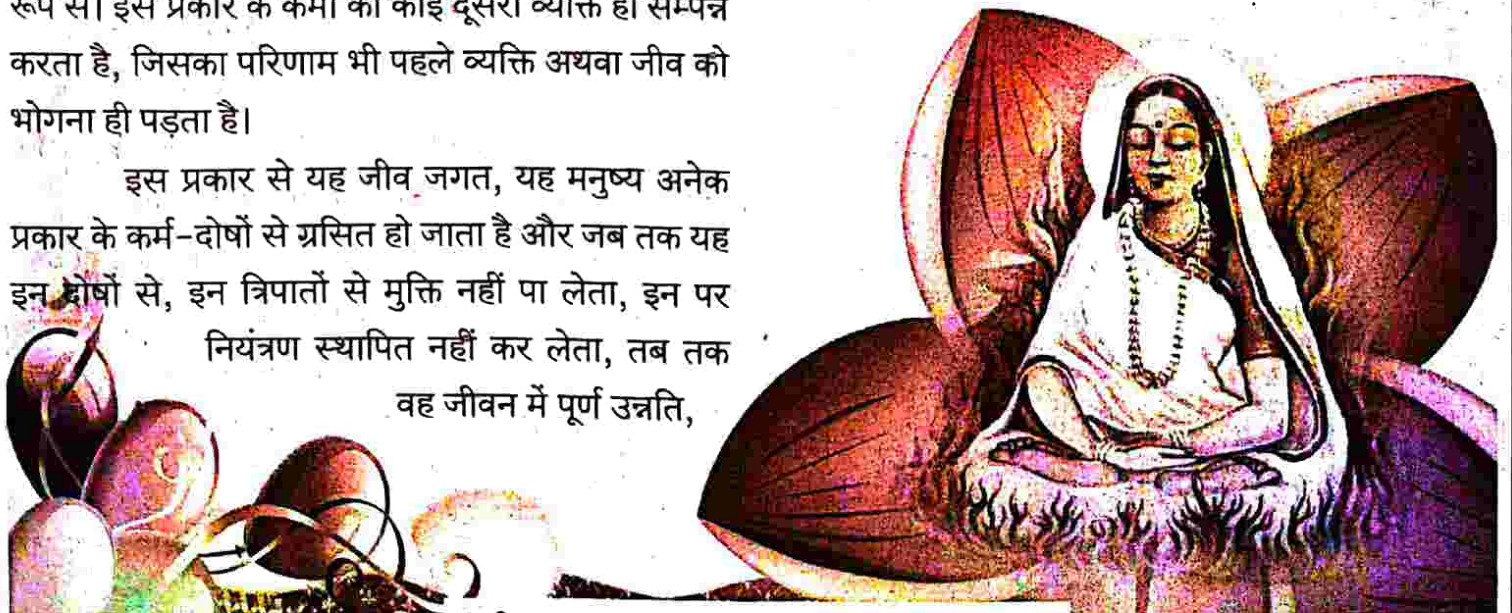
भक्तों तथा साधकों को सोलह कलाओं से पूर्ण करती हैं और उन्हें पूर्ण शिवत्व प्रदान करती हैं।

देवी त्रिपुर सुन्दरी अपने चारों हाथों में क्रमश: माला, अंकुश, धनुष तथा बाण लिए हुए हैं। प्रथम दाएं हाथ में माला धारण कर ये साधकों को साधन-पथ पर अग्रसर होने का संकेत देती हैं, जो व्यक्ति साधना के क्षेत्र में पूर्णता, सफलता तथा श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें तो यह साधना अवश्य ही सिद्ध करनी चाहिए।

ये अपने दूसरे दाएं हाथ में अंकुश धारण कर इस बात को इंगित करती हैं, कि जो व्यक्ति अपने कर्म-दोषों से परेशान हैं, जिनका अपने कर्मों पर, अपने-आप पर नियंत्रण नहीं रहा, ये उन सभी कर्मों पर अपने भक्तों का पूर्ण नियंत्रण प्रदान कर, उन्हें उन्नति के पथ पर गतिशील करती हैं तथा उन्हं जीवन में श्रेष्ठता, भव्यता और आत्म-विश्वास प्रदान करती हैं।

इसके अलावा अपने दोनों बाएं हाथों में धनुष-बाण रखना इस संकेत को स्पष्ट करता है, कि उनके भक्तों के उन्नति के मार्ग में आने वाली प्रत्येक बाधा, प्रत्येक शत्रु चाहे वह बीमारी हो, गरीबी हो या उसकी अशक्तता हो, ये सभी को दूर कर उसे स्वस्थ जीवन प्रदान करती हैं, उसके पंच-विकारों को दूर कर उसे 'पूर्ण पौरुषत्व' प्रदान करती हैं।

एक प्रकार से देखा जाए तो महादेवी त्रिपुर सुन्दरी की साधना एक पुरुष से पुरुषोत्तम बनने की साधना है, नर से नारायण बनने की साधना है, साधना के मार्ग में आने वाले अवरोधों को समाप्त करने की साधना है। साधक इस साधना को सिद्ध कर, अपने जीवन को उन्नति तथा सफलता के पथ पर गतिशील कर जीवन को श्रेष्ठता व दिव्यता प्रदान कर सकता है। इस साधना को सिद्ध करने के पश्चात् दूसरी अन्य साधनाएं सिद्ध करना उसके लिए सहज और सामान्य बात हो जाती है।

साधना विधि

यह साधना एक दिवसीय साधना है, यदि साधक चाहे तो इस साधना को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाकर जीवन में विशेष सफलता व लाभ अर्जित कर सकते हैं। इस साधना को करने का विशेष दिन 12 अक्टूबर को है या फिर साधक सप्ताह के किसी भी शुक्रवार की रात्रि को यह साधना सम्पन्न कर सकता है।

यह रात्रिकालीन साधना है, इसे **रात्रि 9 बजे के बाद** सम्पन्न करना चाहिए। इसमें जिस विशेष सामग्री की आवश्यकता है, वह है - **सर्वार्थ सिद्धि माला, पापघ्नि गुटिका** और भगवती त्रिपुर सुन्दरी चित्र, इसके साथ ही लकड़ी के बाजोट पर बिछाने के लिए **गुलाबी आसन** तथा पहिनने के लिए **गुलाबी धोती**।

साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर पूर्व अथवा उत्तर दिशा में लकड़ी के बाजोट पर गुलाबी आसन बिछा कर, एक ताम्र प्लेट में त्रिकोण रूप में तीन बिन्दियां कुंकुम या केसर से बनाकर, उस त्रिकोण में **'पापघ्नि गुटिका'** स्थापित करें तथा धूप, दीप, पुष्प आदि से उसका पूजन करें, इसके पश्चात चार माला गुरु मंत्र का जप करें और मानसिक रूप से उनसे साधना में पूर्ण सफलता प्राप्ति का आशीर्वाद मांगे।

महादेवी त्रिपुर सुन्दरी का मूल मंत्र प्रारंभ करने से पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प करें, आप जिस उद्देश्य को लेकर यह साधना सम्पन्न करने जा रहे हैं, उस उद्देश्य का उच्चारण कर, तत्पश्चात् **'सर्वार्थ सिद्धि माला'** से 11 माला मंत्र जप सम्पन्न करें।

मंत्र

।। ह्रींकएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ।।

साधना काल में साधक को अपना शरीर पूर्णरूप से हल्का होता प्रतीत होगा तथा उसे ऐसा लगेगा कि उसके मस्तिष्क का कोई बहुत बड़ा दबाव उतर गया है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी। जैसे-जैसे साधक के पाप-दोष समाप्त होते हैं, उसका समस्त शरीर तथा मस्तिष्क किसी अनजाने दबाव से मुक्त होता जाता है, इससे किसी भी प्रकार से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, यह स्थिति अपने-आपमें पूर्णानन्द की स्थिति है।

साधना समाप्ति के पश्चात् साधक 11 दिनों तक साधना सामग्री को अपने पूजा स्थान में रखें तथा 11 दिन के पश्चात् उक्त सभी सामग्री को किसी नदी अथवा तालाब या कुएं में विसर्जित कर, शांत चित्त भाव से घर आ जाएं।

साधना सामग्री- 330/-

प्रेम सिद्धि रुभयोभवेत्

प्रेमी-प्रेमिकाओं के लिए

पूर्ण चुम्बकीय प्रयोग

"कुमुदिनी को अपने चरम विकास के लिए चन्द्रमा के आगमन की अपेक्षा बनी रहती है ...उन नाजुक कलियों की तृषित आँखों को उपवन में वसंत की तलाश रहती ही है ...चकवी की वह करुणा भरी वेदना चकवे को कहीं भी कैसे चैन से रहने दे सकती है ....यह प्रयोग उन प्यासे हृदय के भावों को भरने के लिए, उन्हें आनन्दातिरेक से आप्लावित करने के लिए तथा 'प्रेम' शब्द को सार्थक करने के लिए ही बना है।"

सम्पूर्ण वर्ष के 365 दिनों का शास्त्रीय दृष्टिकोण से अलग-अलग महत्व निर्धारित किया गया है। प्रत्येक दिवस अपने-आपमें अन्यतम उपलब्धियों को समेटे हुए है, यदि हमें उस दिवस विशेष के बारे में जानकारी हो, तो निश्चित रूप से हम इस दिवस विशेष से संबंधित लाभ को प्राप्त करने का प्रयास करते ही है। इन 365 दिनों में केवल मात्र एक दिवस ऐसा आता है, जिसके बारे में शास्त्रों में लिखा गया है, कि उस रात्रि में वसुन्धरा पर अमृत वृष्टि होती है, वह दिवस है - 'शरद पूर्णिमा'।

चन्द्रमा शीतलता का प्रतीक तो होता ही है, किन्तु शरद काल में आने वाली पूर्णिमा को चन्द्रमा की शीतलता पूर्ण अमृत सिक्त हो जाती है, उस दिवस विशेष पर चन्द्रमा से निकलने वाली रश्मियों में कुछ इस प्रकार की विशेषताएं निहित होती हैं, जिनके द्वारा इस पृथ्वी के प्राणियों को बहुत कुछ प्राप्त होता है, यदि वे इस क्रिया के प्रति जागरूक हों तो।

शरद पूर्णिमा के दिन ग्रह नक्षत्रों के संयोग इस प्रकार से निर्मित होते हैं, कि प्राणी के मन में स्वतः ही प्रेम भावना की

प्रबलता हो जाती है, उस समय व्यक्ति को ऐसा एहसास होता है कि आज हृदय बहुत ही आनन्दित है . . .और तब व्यक्ति आंतरिक रूप से आनन्द का अनुभव करता है, तब उसकी एकमात्र भावना यह होती है कि वह अपने आनन्द के क्षणों को अपने प्रिय के साथ व्यतीत करे।

यह भावना प्रकृति प्रेरित है इसी कारण कवियों ने, साहित्यकारों ने, यहां तक कि अध्यात्म वेत्ताओं ने भी शरद पूर्णिमा के महत्त्व को स्वीकार कर अपने-अपने भावानुसार पंक्तिबद्ध करके व्यक्त किया है।

शरद पूर्णिमा के दिन ही भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी प्रियतमा राधा तथा अन्य गोप-गोपिकाओं के साथ रासलीला का आयोजन किया था जिसके माध्यम से उन्होंने समाज के सम्मुख प्रेमी और प्रेमिका का बहुत ही सुन्दर स्वरूप प्रस्तुत किया, उनके उस दिव्य लीलामय स्वरूप को देखकर यह स्पष्ट आभास होता है कि बाह्य रूप से तो प्रेमी-प्रेमिका दो अलग-अलग रूपों में दिखाई देते हैं, किन्तु ध्यान से देखा जाए, तो वे दो होकर भी एक होते हैं, एक-दूसरे में पूर्णतः समाहित, पूर्णतः विसर्जित, तभी तो किसी कवि ने कहा है -

दोउ चकोर, दोउ चन्द्रमा, दोउ अलि, पंकज दोउ।
दोउ चातक, दोउ मेघ प्रिय, दोउ मछरी, जल दोउ।।
आस्रय आलम्बन दोउ, विषयालम्बन दोउ।
प्रेमी-प्रेमास्पद दोउ, तत्सुख-सुखिया दोउ।।
लीला आस्वादन निरत, महाभाव रसराज।
वितरत रस दोह दुहुन कौं, रचि विचित्र सुठि साज।।
सहित विरोधी धर्म-गुन, जुगपंत नित्य अनंत।
वचनातीत अचिन्त्य अति, सुषमामय श्रीमंत।
श्री राधा - माधव - चरन वंदौ बारम्बार।
एक तत्त्व दो तनु धरें, नित-रस-पाराबार।।

प्रेम शब्द तो जब इस सृष्टि का निर्माण हुआ, तब भी सर्वव्याप्त रहा और आज भी सर्वव्याप्त है . ..और आने वाले युगों में भी यह सर्वत्र व्याप्त रहेगा ही। प्रेम के इस महत्त्व को देखते हुए ही विभिन्न ऋषियों-मुनियों ने कुछ ऐसी विशिष्ट साधनाओं का अनुसंधान किया, जिससे मनुष्य के हृदय में प्रेम-भावना दबे नहीं, अपितु अपने पूर्ण स्वरूप के साथ प्रस्फुटित हो सके। निश्चित रूप से हमारे ऋषि-मुनि त्रिकालज्ञ रहे हैं, जिसके कारण उन्होंने यह जान लिया था कि आने वाले समय में व्यक्ति के पास इतना समय नहीं रहेगा, कि वह अधिक-से-अधिक समय, जिससे वह प्रेम करता है, उसके लिए दे सके।

फिर भी मनुष्य है, तो प्रेम हो ही जाता है, किन्तु उसे दुःख तो तब होता है, जब प्रेमी या प्रेमिका अपने प्रिय के मनोभावों को समझ नहीं पाते, ऐसी स्थिति में वह अपने प्रिय को अलग-अलग उपायों से रिझाने का, मान-मनोहार करने का प्रयास करता रहता है और जब वह सफल नहीं हो पाता है, तो आज का मनुष्य हताश-निराश हो जाता है, फिर उसका मन किसी भी कार्य में नहीं लगता है।

ऐसी स्थिति आने ही क्यों दें? जब हमारे पास ऋषि प्रदत्त शरद पूर्णिमा को किया जाने वाला **'चुम्बकत्व प्रयोग'** का विधान उपलब्ध हो। इस प्रयोग को करने के उपरान्त प्रेमी-प्रेमिका एक-दूसरे के बारे में प्रेमयुक्त चिंतन करते हैं तथा पूर्ण आकर्षण के भाव से अनुप्राणित रहते हैं।

प्रेम करना कोई गुनाह नहीं है, यदि दोनों पक्ष पूर्णतः सहमत हों तो ...और जब दोनों पक्ष पूर्णतः सहमत हों, तो यह आवश्यक नहीं, कि उनके परिवार के लोग भी पूर्णतः सहमत हो, कई बाधाएं-परेशानियां प्रेमी-प्रेमिका के बीच दीवार बन कर खड़ी हो जाती हैं। समाज की बात मानकर वे किसी अन्य के साथ विवाह सूत्र में बंध अवश्य जाते हैं, किन्तु बोझ स्वरूप ही अपने जीवन को बिताते रहते हैं, फिर उनके अंदर असमय ही चिड़चिड़ाहट, क्रोध, तनाव उत्पन्न होने लगता है।

इस प्रयोग के माध्यम से जहां प्रेमी-प्रेमिका विवाह-सूत्र में बंध जाते हैं सम्पूर्ण जीवन काल के लिए, वहीं यदि इस प्रयोग को पति-पत्नी में से कोई भी एक सम्पन्न कर लेता है, तो उन दोनों के मध्य से भी तनाव, क्रोध व मतभेद जैसी बातें समाप्त हो जाती हैं और एक-दूसरे के प्रति पूर्ण प्रेम व समर्पण की भावना का भी उदय होता है, जिसके कारण उनका दाम्पतय जीवन अत्यधिक सुखमय, आनन्ददायक, तृप्तिदायक एवं सभी दृष्टियों से पूर्ण एवं सम्पन्नता युक्त हो जाता है।

इस प्रयोग को करने के लिए निम्न उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है -

सामग्री

'सफेद हकीक माला' जो कि शरद पूर्णिमा के विशेष अवसर पर किये जाने वाले प्रयोग के लिए चन्देश तंत्र से अनुप्राणित की जाती है तथा पूर्ण चुम्बकत्व युक्त **'शरद यंत्र'**। इन दोनों सामग्रियों को आप पहले से ही प्राप्त कर लें।

दिवस

15.10.16 शरद पूर्णिमा या अन्य किसी भी सोमवार के दिन आप इस प्रयोग को कर सकते हैं।

समय

रात्रि में 10 बजे के पश्चात् प्रात: 4 बजे तक कभी भी इस प्रयोग को किया जा सकता है, ध्यान रखें, कि इस प्रयोग को करते समय पूर्णकाल तक चन्द्रमा आकाश में ही हो।

विधि

(1) शरद पूर्णिका की रात्रि को स्नान करें।

(2) **श्वेत वस्त्र** धारण करें।

(3) खुली छत पर ऐसी जगह पर बैठें, जहां चन्द्रमा की किरणें आपके शरीर पर पड़ती रहें, यदि ऐसा संभव न हो, तो प्रयोग प्रारंभ करने से पूर्व चन्द्र-दर्शन कर लें और हाथ जोड़ कर उनसे प्रार्थना करें, कि मुझे चुम्बकत्व प्रयोग में पूर्ण सफलता प्रदान करने हेतु सहायक बनें।

(4) साधना कक्ष में पूर्व दिशा की ओर मुँह करके बैठें।

(5) श्वेत आसन का प्रयोग करें।

(6) अपने सामने लकड़ी की एक चौकी पर श्वेत वस्त्र बिछाकर किसी प्लेट में चन्दन से चन्द्रमा की आकृति अंकित कर उस पर **'चुम्बकत्व शरद यंत्र'** की स्थापना करें।

(7) यंत्र के ऊपर **'सफेद हकीक माला'** रख दें तथा दोनों का सफेद पुष्प व अक्षत से लघु पूजन सम्पन्न करें।

(8) इस प्रयोग में किसी प्रकार की धूप-अगरबत्ती की आवश्यकता नहीं है।

(9) सफेद हकीक माला से पहले एक माला गुरु मंत्र का जप करें, फिर निम्न मंत्र की 11 माला जप करें, इसके बाद पुन: एक माला गुरु मंत्र का जप करें।

मंत्र

ॐ श्रीं पूर्ण प्रेमत्व सिद्धिं साधय श्रीं नम:।

(10) मंत्र जप करते समय, यदि आप छत पर साधना कर रहे हैं, तो चन्द्रमा की ओर देखते हुए मंत्र जप करें, यदि आप साधना कक्ष में बैठ कर मंत्र जप कर रहे हैं, तो यंत्र को अपलक दृष्टि से देखते हुए मंत्र जप करें।

(11) मंत्र जप की समाप्ति के पश्चात् दूध से चन्द्रमा को अर्घ्य प्रदान करें, यदि आप साधना कक्ष में इस प्रयोग को कर रहे हैं, तो पहले आप यंत्र पर माला को रख दें, फिर इन दोनों सामग्रियों पर अर्घ्य अर्पित करें।

(12) अर्घ्य देते हुए मूल मंत्र का 5 बार उच्चारण करें।

(13) यदि संभव हो, तो उसी रात्रि को यंत्र तथा माला को नदी में या किसी पवित्र तालाब अथवा सागर में विसर्जित कर दें।

(14) घर लौटने के पश्चात् हाथ-पैर धोकर पूजा कक्ष में जायें तथा **गुरु चित्र** के सामने अत्यंत विनम्र भाव से खड़े होकर पुन: मूल मंत्र का 15 बार उच्चारण कर अपनी इच्छा पूर्ति हेतु गुरुदेव से प्रार्थना करें।

(15) इस दिवस पर सिर्फ दूध से बने आहार को ही ग्रहण करने का विधान है।

(16) रात्रि में भूमि शयन करें।

पूर्ण श्रद्धा भाव से किया गया यह प्रयोग शत-प्रतिशत लाभप्रद होता ही है, ऐसा शास्त्र सम्मत विचार है।
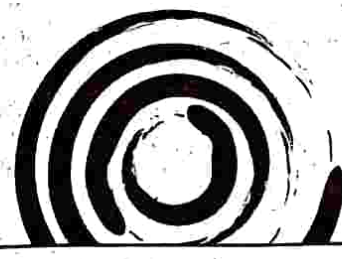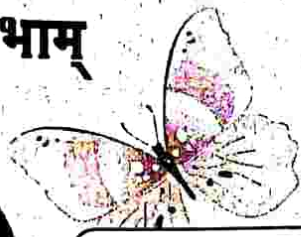
साधाना पैकेट- 450/-

यक्ति के जीवन में ऐसे कार्य भी आ जाते हैं जिनका पूर्ण धिक आवश्यक हो जाता है, और यदि वह कार्य समय पर हो सके तो बहुत सी परेशानियां सामने आ जाती हैं तथा हानि भी हो सकती है, किन्तु इस संकट भरी घड़ियों से निकलने के लिए जब कोई मार्ग नहीं सूझ रहा हो तो....

'भगवती कात्यायनी' का ध्यान करने वाला व्यक्ति मनुष्यों के बीच प्रधान और बलवान होता है।

कात्यायनी, 'दुर्गा' का ही एक स्वरूप है, यह देवी साधक पर प्रसन्न होकर उसे अतुल ऐश्वर्य व धन प्रदान करती है, और साथ ही इस साधना द्वारा खोये हुए व्यक्ति की जानकारी प्राप्त होना भी संभव है। यह अपने आप में एक श्रेष्ठ एवं अद्वितीय साधना है, जिसका ज्ञान आज बहुत से साधकों को है, और उन्होंने इसे सम्पन्न कर इससे विशिष्ट लाभ भी प्राप्त किए हैं।

समय के परिवर्तन और चारों तरफ के वातावरण से बालकों में कुसंस्कार और कुबुद्धि व्याप्त हो जाती है, जिस कारण वे विचार उसे घर से भाग जाने के लिए प्रेरित कर देते हैं, किन्तु 'कात्यायनी साधना' द्वारा उस खोये हुए बालक को पुन: वापिस बुलाया जा सकता है।

यदि किसी कारणवश पूर्वजों द्वारा रखे गए धन का पता नहीं चल पा रहा हो या फिर किसी कारणवश वे समय के अभाव के कारण यह न बता पाए हों कि उन्होंने धन कहां रखा है, तो इस साधना द्वारा साधक उस स्थान का पता लगा सकता है और उस स्थान पर पहुंच कर, उस धन को आसानी से प्राप्त कर सकता है।

इस साधना को सम्पन्न कर साधक पूर्ण ऐश्वर्य युक्त तो बनता ही है, साथ ही उसे श्री, वैभव, सुख-समृद्धि सभी कुछ प्राप्त हो जाता है। फिर उसे जीवन में धन के लिए कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता, फिर किसी भी प्रकार का आर्थिक अभाव उसके जीवन में नहीं रह जाता, अत: आर्थिक दृष्टि से पूर्णता प्राप्त करने की यह श्रेष्ठ साधना है, जिसे सम्पन्न कर साधक को लाभ प्राप्त होता ही है। क्योंकि कात्यायनी कल्प एक तांत्रोक्त साधना है, और तंत्र का अर्थ है शीघ्र फल प्राप्ति। और इस प्रकार इस तांत्रोक्त साधना को श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करने पर साधक को शीघ्र फल प्राप्त होता ही है।

इस साधना के माध्यम से ऐसे वातावरण की सृष्टि

की जा सकती है, जिससे कि खोया हुआ बालक या बालिका असामाजिक तत्वों के जाल से सकुशल बाहर निकल सकता है, और इसके द्वारा ऐसे वातावरण को भी बनाया जा सकता है, जिससे कि वह घर आने पर भी सकुशल रहे, साथ ही वह बालक या बालिका शुद्ध चित्त से माता-पिता की आज्ञा का पालन कर सके, तथा उसका जीवन सुखकर हो सके।

साधक को सर्वप्रथम कात्यायनी के विशेष स्वरूप का ध्यान करके ही साधनात्मक मंत्र-जप प्रारंभ करना चाहिए, ऐसा करने से उसे उस साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त होती ही है, और आर्थिक उन्नति कर वह शीघ्र ही ऋणमुक्त भी हो जाता है, उसके शत्रुओं का दमन होता है और उसे विजय खड्ग की प्राप्ति होती है।

ध्यान

सत्य - पाद - सरोजेनालंकृतोरु - मृगाधिपाम्।
वाम- पादाग्र - दलित - महिषासुर - निर्भराम्।।
सु-प्रसन्नां-सु-वदनां, चारु-चेत्र-त्र्यान्विताम्।
हार- नूपुर- केयूर- जटा- मुकुट- मण्डिताम्।।
विचित्र-पट्ट-वसनामर्द्ध-चन्द्र-विभूषिताम्।
खड्ग-खेटक-वज्राणि, त्रिशूलं विशिखं तथा।।
धारयन्तीं धनुः पाशं, शंखं घण्टां सरोरूहम्।
बाहुभिर्ललितै दैवीं, कोटि-चन्द्र-सम-प्रभाम्।।
समावृतैर्दिविषर्दैवैराकाश संस्थितै-।
स्तूयमानां मोदमानैर्लोक-पालादिभिः सदाः।।

अर्थात् देवी अपने दाएं चरण-कमल से मृगराज को अलंकृत कर बाएं पैर से महिषासुर को विदलित कर रही हैं। वे प्रसन्न-मुखी और सुन्दर तीन नेत्रों से विभूषिता है। हार, नुपूर, केयूर, जटा, मुकुट आदि अलंकारों से अलंकृता हैं। आकर्षक वस्त्र धारण किए हैं और मस्तक पर अर्ध-चन्द्र है। खड्ग, वज्र, त्रिशूल, बाण, धनुष, पाश, शंख, घण्टा और पद्म अपनी सुन्दर भुजाओं में लिए हुए हैं, कोटि चन्द्र के समान प्रभाव वाली है। आकाश में स्थित इन्द्रादि देवगण सदा उन्हें घेरे रहते हैं और लोकपाल गण प्रसन्न मन से सदैव उनकी वन्दना करते हैं और मैं ऐसी देवी को हृदय से प्रणाम करता हुआ इस साधना को प्रारंभ कर रहा हूँ. ऐसा कह कर पूजन प्रारंभ करें।

साधना विधि

नवरात्रि के दिवसों में या किसी भी **नवमी** के दिन साधक इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। प्रातःकाल या रात्रि किसी भी समय साधक अपनी इच्छानुसार इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। इसके लिए विशेष सामग्री की आवश्यकता पड़ती है, जो इस प्रकार है- **'कात्यायनी यंत्र', 'कात्यायनी माला', 'भैरव गुटिका'**। इस सामग्री को पहले से ही मंगवा कर रख लेना चाहिए।

सर्वप्रथम साधक स्नान कर, उत्तराभिमुख हो, पीले वस्त्र धारण कर आसन पर शांत चित्त बैठ जाए और उपरोक्त कात्यायनी देवी के स्वरूप का श्रद्धापूर्वक ध्यान कर पूजन प्रारंभ करे।

सबसे पहले लाल वस्त्र पर बाजोट के ऊपर **'कात्यायनी यंत्र'** और **'भैरव गुटिका'** को स्थापित कर दें तथा **कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य** से उनका पूजन सम्पन्न करे, इसके पश्चात् मौन हो ब्रह्मचारी के समान संयत मन से अपने इष्ट या गुरु का 5 मिनट तक ध्यान करें और फिर तीन बार 'ॐ' की ध्वनि का उच्चारण करें।

इसके पश्चात् साधक को चाहिए, कि यदि वह खोये हुए बालक की प्राप्ति के लिए उस साधना को सम्पन्न कर रहा है, तो उसका नाम लेते हुए जल हाथ में लेकर संकल्प ले, कि मैं अमुक बालक की प्राप्ति के लिए इस मंत्र-जप को सम्पन्न कर रहा हूँ और ऐसा कह कर उस जल को जमीन पर छोड़ दे।

फिर कात्यायनी माला से 11 माला निम्न मंत्र का जप प्रारंभ कर दें -

मंत्र

।। क्रीं कात्यायन्यै क्रीं।।

मंत्र जप सम्पन्न करने के पश्चात् उस माला को गले में धारण कर पूज्य गुरुदेव के चित्र के आगे या टेलीफोन द्वारा उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर, उस माला, यंत्र और गुटिका को पास के किसी कुएं, नदी या तालाब में विसर्जित कर दे।

ध्यान रहे कि माला, गुटिका और यंत्र ये तीनों ही सामग्री चैतन्य एवं मंत्र सिद्ध होनी चाहिए।

साधना सामग्री - 450/-

ज्योतिष
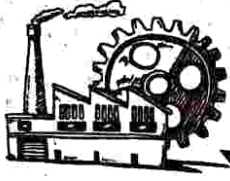
क्या कहती है आपकी

भाग्य रेखा

गतांक से आगे...

भाग्य रेखा क्या कहती है?

1. यदि भाग्य रेखा सीधी तथा स्पष्ट हो और शनि पर्वत से होती हुई सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो, तो व्यक्ति कला के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।
2. यदि यह रेखा लाल रंग की हो तथा मध्यमा उंगली के प्रथम पोर तक पहुँच जाए, तो उस व्यक्ति की दुर्घटना में मृत्यु होती है।
3. यदि यह रेखा हृदय रेखा को काटते समय जंजीर के समान बन जाए, तो उसे प्रेम के क्षेत्र में बदनामी का सामना करना पड़ता है।
4. यदि हृदय रेखा हथेली के मध्य में फीकी या पतली अथवा अस्पष्ट हो, तो व्यक्ति का यौवनकाल दुखमय होता है।
5. यदि व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा के साथ-साथ सहायक रेखाएँ भी हों, तो उसका जीवन अत्यन्त सम्मानित होता है।
6. यदि भाग्य रेखा जंजीरदार अथवा लहरदार हो, तो जीवन में उसे बहुत अधिक दुख भोगना पड़ता है।
7. जिस व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा नहीं होती, उसका जीवन अत्यन्त साधारण और नगण्य सा होता है।
8. यदि भाग्य रेखा प्रारम्भ से ही टेढ़ी-मेढ़ी हो, तो उसका बचपन अत्यन्त कष्टदायक होता है।
9. भाग्य रेखा अपने उद्गम स्थल से प्रारम्भ होकर जिस पर्वत की ओर भी मुड़ती है या शनि पर्वत से उसमें से कोई शाखा निकलकर जिस पर्वत की ओर जाती है, उस पर्वत से सम्बन्धित गुणों का विकास उस व्यक्ति के जीवन में मिलता है।

10. यदि भाग्य रेखा चलते-चलते रुक जाए, तो वह व्यक्ति जीवन में बहुत अधिक तकलीफ उठाता है।
11. हथेली में भाग्य रेखा जिस स्थान में भी गहरी, निर्दोष और अस्पष्ट होती है, जीवन के उस भाग में उसे विशेष लाभ या सुख मिलता है।
12. भाग्य रेखा हथेली में जितनी बार भी टूटती है, जीवन में उतनी ही बार महत्त्वपूर्ण मोड़ आते हैं या कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
13. यदि भाग्य रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर मध्यमा के ऊपर चढ़े, तो वह दुर्भाग्यशाली होता है। जिसकी भाग्य रेखा ऐसी होगी, उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई सुख या आनन्द नहीं मिलेगा।
14. यदि भाग्य रेखा प्रथम मणिबन्ध से भी नीचे हो अर्थात् प्रथम मणिबन्ध से नीचे उसका उद्‌गम स्थल हो, तो उसे जीवन में जरूरत से ज्यादा कष्ट उठाना पड़ता है।
15. यदि भाग्य रेखा के साथ में कोई भी सहायक रेखा हो, तो यह शुभ कहा जाता है। यदि उंगलियाँ लम्बी हों और भाग्य रेखा का प्रारंभ चन्द्र पर्वत से हो, तो ऐसा व्यक्ति प्रसिद्ध तांत्रिक होता है।
16. यदि चन्द्र पर्वत को काटकर भाग्य रेखा आगे बढ़ती हो, तो वह व्यक्ति जीवन में कई बार विदेश यात्रा करता है।
17. यदि भाग्य रेखा के उद्‌गम स्थान पर त्रिकोण का चिह्न हो, तो वह व्यक्ति अपनी ही प्रतिभा से उन्नति करता है।
18. यदि भाग्य से कुछ शाखाएँ निकल कर ऊपर की ओर जा रही हों, तो वह व्यक्ति अपनी ही प्रतिभा से उन्नति करता है।
19. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारंभ हो और मार्ग में कई जगह आड़ी-तिरछी रेखाएँ हों, तो उस व्यक्ति को बुढ़ापे में सफलता मिलती है।
20. यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत पर वृत्ताकार बन जाए, तो उसके जीवन में अत्यधिक परिश्रम के बाद सफलता आती है।
21. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा से प्रारम्भ हो और उसकी शाखाएँ गुरु, सूर्य तथा बुध पर्वत पर जाती हों, तो वह व्यक्ति विश्वविख्यात होता है।
22. यदि भाग्य रेखा के उद्‌गम स्थान पर तीन या चार रेखाएँ निकली हुई हों, तो ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय विदेश में होता है।
23. यदि भाग्य रेखा के उद्‌गम स्थान से एक सहायक रेखा शुक्र पर्वत की ओर जाती हो, तो किसी स्त्री के माध्यम से उसका भाग्योदय होता है।
24. यदि भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा के पास समाप्त हो जाती हो, तो उसे जीवन में बार-बार निराशा का सामना करना पड़ता है।
25. भाग्य रेखा पर जितनी ही आड़ी-तिरछी रेखाएँ होती हैं, वे उसकी प्रगति में बाधक कहलाती हैं।
26. यदि भाग्य रेखा की समाप्ति पर तारे का चिह्न हो, तो उसकी वृद्धावस्था अत्यन्त कष्टमय होती है।
27. यदि भाग्य रेखा और विवाह रेखा परस्पर मिल जाएं, तो उसका गृहस्थ जीवन दु:खमय रहता है।
28. यदि भाग्य रेखा से कोई सहायक रेखा निकलती हो, तो वह भाग्य को प्रबल बनाने में सहायक होती है।
29. यदि भाग्य रेखा के ऊपर या नीचे शाखाएं हों, तो आर्थिक कष्ट उठाना पड़ता है।
30. भाग्य रेखा के अन्त में क्रॉस या जाली हो, तो उसकी क्रूर हत्या होती है।
31. यदि भाग्य रेखा के अन्त में चतुर्भुज हो, तो उस व्यक्ति की धर्म में विशेष आस्था होती है।
32. भाग्य रेखा पर धन का चिह्न शुभ माना गया है।
33. भाग्य रेखा गहरी स्पष्ट और लालिमा लिए हुए होती है, तो व्यक्ति जीवन में शीघ्र ही प्रगति करता है।
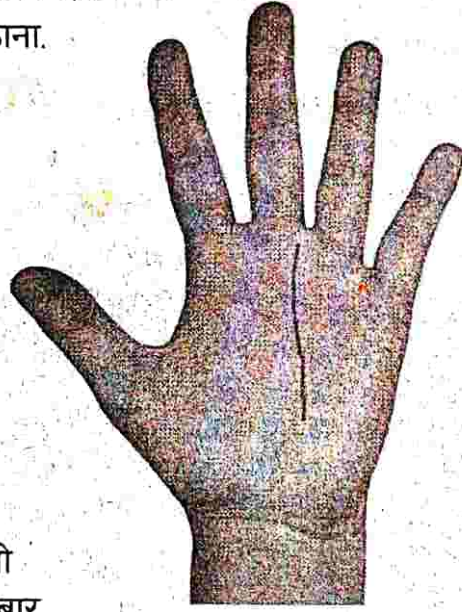
वस्तुत: भाग्य में जीवन का एक महत्वपूर्ण अंश संग्रहित होता है। अत: जिसकी हथेली में भाग्य रेखा प्रबल, स्पष्ट और सुन्दर होती है, वह व्यक्ति अपने भाग्य से शीघ्र उन्नति करता है और समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त करता हुआ पूर्ण भौतिक सुखों का भोग करता है। ▣

मनुष्य मन सदा एक विषय से दूसरे विषय की ओर भागता रहता है, विचारों का यह प्रयास अनवरत चलता ही रहता है, अत: यह बात स्पष्ट है, कि किसी एक विषय पर मन को केन्द्रित करने के लिए मन का अनुशासित होना आवश्यक है।

दिनभर के क्रिया-कल्पों तथा बाह्य जगत से प्राप्त नित्य-निरंतर उत्तेजनाओं से घिरे हुए, विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त मनुष्य जब नींद की अवस्था में पहुंच कर एक विशेष आनन्द का अनुभव करता है, तब उसका अशांत मन अपेक्षाकृत शांत हो जाता है।

ध्यान क्यों आवश्यक है?

यह प्रश्न मनुष्य के मन में उठता ही है। प्राचीन काल से ही हमारे पूर्वजों, ऋषि-मुनियों आदि ने 'ध्यान' करने की प्रक्रिया पर ही अधिक जोर दिया है, इसके पीछे जरूर कोई महत्वपूर्ण अर्थ छिपा होगा, युगों का पुराना चिंतन-अनुभव छिपा होगा, जिसके आधार पर उन्होंने मनुष्य को ध्यान करने का उपदेश दिया, आवश्यकता है उस चिंतन को समझने की।

मनुष्य की विभिन्न प्रकृतियां उसके चरित्र पर इतना अधिक दबाव डालती हैं, कि वह बहुधा खिन्न और अप्रसन्न दिखने लगता है। मनुष्य-मन में व्याप्त द्वन्द्व व विचार उसका एक कदम आगे बढ़ाते हैं, तो दूसरा पीछे, तीसरा कदम दायें, तो चौथा बायें, इस तरह वह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकता और न ही प्रगति कर सकता है, भले ही उसके ये प्रयास अनन्त काल तक चलते रहें, विरोधी इच्छाएं उसे निराशा और असफलता प्रदान कर धराशायी बना देती हैं, ऐसे मनुष्य के लिए यह आवश्यक है, कि अपने भग्नकारी द्वन्द्व को शांत करे तथा एक निश्चित दिशा में प्रगति करने के लिए एकाग्रचित मन से प्रयास प्रारंभ कर दे, तभी वह अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंच सकेगा। जब तक वह ऐसा नहीं करेगा, तब तक वह अपनी शक्ति का अपव्यय ही करेगा और उसके हाथ कुछ भी नहीं लगेगा।

इसलिए मनुष्य को अपने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को समन्वित करने की आवश्यकता है, इसके लिए सर्वप्रथम शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पक्षों में सामञ्जस्य बिठाना अत्यंत आवश्यक है और इस सामञ्जस्य को प्राप्त करने का सरल उपाय है - **'ध्यान'**।

ध्यान के माध्यम से मनुष्य अपने अंतर-बाह्य मन में शांति अनुभव करने लगता है और तब इच्छाओं का परस्पराघाती युद्ध समाप्त हो जाता है, वह अपने पथ से विचलित नहीं होता, क्योंकि वह ज्ञान की दृष्टि से जीवन को समग्र रूप से देखने लग जाता है, ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहता, जहां उसे सफलता प्राप्त न हो, क्योंकि वह एक ऐसी स्थिति को प्राप्त कर लेता है, जहां उसका प्रयास निरर्थक नहीं जाता और न ही उसकी शक्ति का अपव्यय होता है, तब वह अपनी शक्ति को एकत्रित कर पूर्णता से किसी भी कार्य को सम्पन्न कर लेता है।

अधूरे मन से या अशांत मन से किया गया कोई भी कार्य विपथगामी परिणाम ही देता है। शास्त्रानुसार मनुष्य अनन्त और असाधारण शक्तियों का स्वामी है, किन्तु अन्तर्द्वन्द्वों व तनावों से घिरे रहने के कारण मनुष्य अपने शक्ति-भण्डार का केवल एक कण मात्र ही प्रयोग कर पाता है, अत: निराशा अवश्यम्भावी है। जब तक मनुष्य मन की मूल धारणा को नहीं समझ सकेगा, तब तक वह तनाव युक्त ही रहेगा।

'मत्वा सीव्यति स मनुष्यः'

अर्थात् 'मन' धातु से मनुष्य का अर्थ है, जो चिंतन करे, विचार करे या विवेक पूर्वक कार्य करे और मनुष्य तब तक सही अर्थों में मनुष्य कहलाता है, जब वह मन पर अपना नियंत्रण कर पाने में सक्षम हो पाता है।

'धीयते इति ध्यानं'

अर्थात् **'जिससे मन का स्थिरीकरण हो जाय, वह ध्यान है।'** ध्यान के निरंतर अभ्यास से मन को समस्त इन्द्रिय विषयों से हटाया जा सकता है, तब मन पर अंकुश रखने वाली बुद्धि ही यह आदेश देती है, कि वह मस्तिष्क से समस्त विचारों को समाप्त कर केवल एक ही चिंतन-मनन-करे, केवल एक ही बिन्दु पर अपने मन को एकाग्र करे, केवल एक ही सर्वव्यापी सत्ता पर अपना ध्यान केन्द्रित करे।

यह एक सर्वोत्कृष्ट आध्यात्मिक साधना है और इस साधना के निरंतर करते रहने पर एक समय ऐसा आता है, जब मन एक ही विषय का चिंतन करने योग्य बन जाता है, और ऐसा मन शक्ति पुञ्ज बन जाता है।

इस स्थिति को प्राप्त कर लेने के उपरांत व अपने वास्तविक रूप को पहिचान लेने के बाद फिर बाहरी क्रियाकलाओं से, संसार के क्षणिक सुखों व अस्थिर दु:खों से वह विक्षुब्ध नहीं होता, फिर न सम्पन्नता उसे बिगाड़ सकती है और न ही विपत्ति उसे गिरा सकती है। मन, बुद्धि के द्वारा ध्यानावस्था में प्राप्त सत्-चित्-आनन्द का साक्षात्कार जीवन को एक नई दिशा प्रदान करता है। नित्य ध्यानाभ्यास से शुद्ध चेतना में प्रतिष्ठित मन की अंतर्भेदी दृष्टि के सामने से सारे आवरण हट जाते हैं, फिर सभी जटिलताओं से मुक्त होकर मन कभी भी संशय और भय से ग्रस्त नहीं होता।

बिना ध्यान के जीवन दु:खों, बाधाओं, अड़चनों और कठिनाइयों से घिरे होने के कारण तनाव युक्त हो जाता है, इसलिए ध्यान जीवन का उल्लास है, और सही अर्थों में कहा जाए, तो जीवन की पूर्णता है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि ध्यान कैसे किया जाए?

(1) ध्यान के लिए पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठना चाहिए।

(2) गृहस्थ साधकों के लिए कुश या ऊन का आसन अनुकूल माना जाता है।

(3) सबसे पहले साधक को **पूरक, कुम्भक और रेचक** विधि से प्राणायाम करना चाहिए, जिससे मन को एकाग्र किया जा सके।

(4) इसके बाद तीन बार ॐ की ध्वनि का उच्चारण उदात्त-अनुदात्त और स्वर क्रम विधि से करना चाहिए।

(5) अब ध्यान के लिए एक ऐसी अनुकूल शारीरिक मुद्रा अर्थात् आसन, **जिसमें रीढ़ की हड्डी एकदम सीधी हो**, अत: सुखासन, पद्मासन तथा सिद्धासन में से अपनी इच्छानुसार जिस आसन में आप सहजता से बैठ सकें, उसका चयन कर लें।

(6) झुकी हुई रीढ़ की हड्डी स्नायु रचना में बाधक बनती है, जिससे भावों एवं विचारों की तारतम्यता छूट जाती है। यदि मेरुदण्ड सीधा रहता है, तो स्वत: मानसिक समत्व बना रहता है।

(7) आसन पर बैठने के उपरान्त दृष्टि किसी भी एक बिन्दु पर केन्द्रित होनी चाहिए।

(8) इस प्रकार सुखपूर्वक शरीर का तनाव त्याग दें और विचारों के द्वारा स्थूल शरीर में प्रवेश होने की क्रिया करें।

(9) यदि मन बहुत चंचल है, तो इसको स्थिर करने के लिए प्रारंभिक अवस्था में मनोवैज्ञानिक विधि अपनाइये, जिससे मन की बाह्य वृत्तियों के रुकने से आभ्यन्तर प्रवेश की स्थिति उत्पन्न हो सके।

आप आँख बन्द करके यह चिंतन करें, जैसे - आप किसी नदी में, नाव में बैठकर धीरे-धीरे बह रहे हैं, नाव लहरों में हवा के झोंके से तैरती हुई कभी नीचे, कभी ऊपर शांत भाव से अपने गन्तव्य की ओर बह रही है,, उसमें आप बैठे हुए अनन्त जलराशि को, दूर तक दृष्टि जमाये हुए देख रहे हैं। आपकी नाव लहरों के थपेड़ों से कभी इस किनारे, तो कभी उस किनारे और कभी बीच में आपको ले जा रही है, आप दृष्टा भाव से उसमें बैठकर गहरे चिंतन में खोये जा रहे हैं, किसी अज्ञात आह्लाद से भरकर रोमांचित और प्रफुल्लित हो रहे हैं।

10. इसी तरह आप अपने मन को बाह्य विषयों से अलग करने के लिए अनन्य प्राकृतिक चिंतन का सहारा ले सकते हैं जैसे - जंगल में घूमना, पर्वतों की चोटियों पर स्वच्छन्द विचरण या आकाश में वायु मार्ग से उड़ना आदि, इन विधियों द्वारा धीरे-धीरे आपका मन एकाग्र हो जायेगा और उस ध्यान को जिसे हम 'सम्प्रज्ञात' के नाम से जानते हैं, आपका मन उसमें प्रवेश करने लगेगा।

मनुष्य के लिए ध्यान में उतरना या मन को एकाग्र करना उतना ही आवश्यक है, जितना स्थूल शरीर को स्वस्थ रखने के लिए संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। मन को सबल और स्वस्थ चिंतन युक्त बनाने के लिए ध्यान अत्यंत आवश्यक प्रक्रिया है। ◘

Amazing Power of Tantra

Good bye misfortune

The ancient Indian scriptures are full of bewildering feats performed by great Yogis and Avatars. Many seem to be a figment of imagination. But was it so? Or did they really possess astounding powers? And if they did why can't we? To us it might seem unbelievable but it is a fact that Hanuman once flew over the occean to reach Lanka. Lord Krishna did heave up the mighty govardhan mountain to save his people from torrential rains. Vishwamitra did start the creation of another universe altogether. what was behind their wondrous powers?

It was Tantra. Today the word is much feared and unknowingly people confuse Tantra with base rituals for propitiating evil spirits. Tantra is a science of seeking the help of the benefic powers prevalent around us whom we know as gods and goddesses. A knife or a gun could well be misused but real Tantra can never be, for the divine powers would never agree to harm anyone or put into action destructive plans.

Tantra in fact is an all pervading science through which solution to any problem can be had through creative means. Tantra is an art, a medium of linking oneself with nature. It is the name of an organised system through which even the impossible could be achieved without in any way disturbing the natural equilibrium. It is a means of linking to the powers of the soul and making quick and sure progress in life.

One of the most efficacious part of Tantra is Surya vigyan or the science of the Sun. Sun we know is the very basis of life. Astrologically and spiritually sun represents the soul. It denotes fame, fortune, success, power and progress. By linking oneself to its subtle powers one could bring an end to all misfortune in one's life.

Presented here is a wonderful Sadhana based on Surya Vigyan and Tantra. It comes as a wonderful divine boon for those who ever face problems, hurdles and misfortune in their lives. It can be seen in the lives of several people that no matter how hard working, honest and intelligent they are good luck seems to shun them. If such is your case and if nothing seems to work in warding off bad luck and misfortunes and if you face constant hurdles and problems in every task you undertake then this is the Sadhana for you.

It is best to try this Durbhaagya Naashak Sadhana (Sadhana for destroying misfortune) on a **Sunday** early before sunrise. early morning have a bath and wear fresh red clothes. sit on a red mat facing East. Cover a wooden seat with red cloth. Then in a copper plate place **Surya Yantra**, Light a ghee lamp. Offer red flowers, vermilion, rice grains on Yantra. Then take water in the right palm and pledge thus — I (speak your name) am doing this Sadhana for the removal of these problems in my life (specify the problems).

Then left the water flow to the floor.

Next chant four round of Guru Mantra and seek the blessings of Sadgurudev for success in the Sadhana. Always remember that no matter which Sadhana you are trying, without grace of the Guru success can never be attained. And if you have full devotion in the Guru he can assure success even if there creep in inadvertent flaws in your Sadhana. Thereafter chant five rounds of this Mantra with **Durbhaagya Naashak rosary.**

Om Hreem Hreem Kleem Hreem Hreem Om

After the Sadhana take water in a copper tumbler and put rice grains and vermilion in it. Then go out and offer it to the rising sun. The power of the Sadhana combined with the subtle powers of the sun would burn all your misfortunes even as the fire of meditation burns away all one's weaknesses. The same day drop the Yantra and rosary in a river or pond.

Sadhana Articles : 450/-

Wealth Unlimited ✤ Any Amavasya or Sunday

KUBER SADHANA

Kuber is said to be the Lord of all the treasures that are on earth. Not just this he even rules over the riches that lie buried and unclaimed inside the surface of our planet. He is chiefly worshipped and propitiated for quick financial gains, unexpected gain of money through lotteries etc and a prosperous business. Even Lord Vishnnu believes Kuber to be the basis of gain of unlimited wealth and prosperity.

The great Tantra expert Ravan when he wished to convert Lanka into a city of gold sought the help of Kuber. In fact Kuber was the true owner of Lanka and the magnificent city came into existence due to his powers. Kuber was in fact the brother of Ravan, but in his early childhood he took to worship of Lord Brahma through whose grace the became the ruler of all wealth on earth.

All ancient texts encourage the use of kuber Sadhana for the gain of wealth. In fact several texts state that true and lasting prosperity is possible only through the grace of Kuber.

There are three chief gains from Kuber Sadhana. Firstly Kuber is pleased and blesses one with material success and wealth. Secondly the chances of coming into wealth unexpectedly and suddenly through lotteries etc increase. Thirdly no matter how much one spends, money keeps flowing in provided of course one uses the wealth for constructive purposes and not for destructive or antisocial activities.

It might well seem to be a simple and short Sadhana but its effect is simply amazing if one tries it with true belief and faith. One can even try this ritual with one's spouse.

It is best to try this ritual on **Amavasya** day (day preceding the moonless night) **or a Sunday**. Rise early morning well before sunrise. Have a bath and wear clean yellow clothes. Then sit on a yellow mat facing North. Cover a wooden seat with yellow cloth. In a plate draw a Swastik with saffron. On it make a mound of rice grains. On the rice grains place a **Kuber Yantra**. Around the Yantra place **four Mahalakshmi Phals**. Then light a ghee lamp with four wicks.

Take a plate and in it with vermilion draw the undergiven Yantra of numbers. Place it on the right side of the plate containing the Kuber Yantra. Then offer prayers to Lord Ganpati chanting **Om Gam Ganpataye Namah** five times. Thereafter chant one round of Guru Mantra and pray to the Guru for sucess in the Sadhana.

16	1	14	7
6	4	5	3
15	9	2	8
15	11	7	13

Thereafter chant thus meditating on the form of Kuber.

Manuj Baahya Vimaanparishtitim
Garud Ratna Nibham Nidhi Naayakam.
Shiva Sakhaa Mukutaadi Vibhooshitam
Var Gade Dadhatam Bhaj Tundilam.

Then with a **rock crystal (sfatik) rosary** chant 8 rounds of the following secret Mantra—

Om Yakshaay Kuberaay Dhan
Dhaanyaadhipataye Akshaya Nidhi
Samriddhim Me Dehi Daapay Swaahaa.

After this make 108 oblation with ghee in the holy fire (Yagna fire) eacth time chanting the above Mantra. After Sadhana tie all worship articles rosary, Yantra and the four Phals in a yellow cloth and place it in the place where you keep your money or valuables at home. It is said that if one tries this Sadhana on each Amavasya every month for a year then one attains to life long prosperity and affluence.

Sadhana Articles : 450/-

Kamdhenu Sadhana

Any Friday

Wish and you shall have it!

The ancient Indian scriptures speak of a divine cow Kamdhenu, who could provide whatever one wished. Kamdhenu actually means fulfiller of whishes.

The great Rishi Jamadgni had Kamdhenu in his hermitage and daily he used to feed thousand of saints and needy people. Even kings came to him to seek his help in times of need. Rishi Jamadgni had to just wish and the very next moment that thing would materialise.

Can such powers be gained even today?

The powers of Sadhanas never become weak as time passes. What was true in teh ancient times is very much true and opossible even today. What is lacking is a strong will power to perform a Sadhana in its perfect form. If one's determination and concentration are unwavering then one could make many wonderful things to happen even today through Sadhanas.

Recently on a visit to the Himalayas I met Swami Keshavanand who is an ascetic disciple of revered Sadgurudev Paramhans Swami Nikhileshwaranand. He is a wandering saint but when I met him he was putting up in a cave near Badrikashram. I had heard a lot about him from other accomplished disciples of Sadgurudev that he possessed many Siddhis i.e. divine powers gained through Sadhanas. To me he appeared a very simple saint. He wore only a loin cloth and I felt as if I was before an ordinary Sadhak.

His cave was far from the shrine of Badrinath - at least five miles ! I spent the entire day with him and as I was getting ready to return to my hotel near the shrine, the weather took a turn for the worst. It was the worst storm. I had ever witnessed and the rain lashed the rocks as if not water but stones were pelting from the heavens. Swamiji suggested that I stay at the cave that night.

Earlier I had inspected the small cave carefully. Expect for a tumbler of water and a few personal clothers of the Swamiji there had been nothing else. I thought that I would have to go hungry that night and would have to sleep in cold on the cave floor. Swamiji seemed to read my thoughts and after some time he said, "I never eat at night. But I have some food for you. It is there in that corner. Go and have it."

Much curious I proceeded to the indicated nook. Lo and behold there lay a silver platter with various rich dishes served in it. The Puris in it looked as if fresh out of the cooking oil. Instinctively I reached out and touched one. It was hot. I looked with amazement at Swamiji. But he sat there as if nothing out of the ordinary had happened.

I ate the food and it was the best I had ever eaten. But I was now craving to know how the food got there. After much cajoling Swamiji revealed to me that he had accomplished Kamdhenu Sadhana. Later he even materialised a warm bedding for me and it was quite a cosy sleep I had in that cold cave.

Swamiji told me that attaining such powers requiered sustained Sadhana for years but for householders who cannot do tough Sadhanas there is a simpler version of the Sadhana through which one could at least have enough and fulfill all needs-food, clothes, house, vehicles, good education, proper medical facilities and everything which is indispensable in worldly life. Presented here is this very Sadhana which is a wonderful ritual for banishment of poverty and gain of wealth. It should be started from a Friday.

At midnight have a bath and wear fresh white clothes. Sit on a white mat facing North. Cover a wooden seat with white cloth. On it place ***Kamdhenu Yantra*** on a mound of rice grains, flowers on Yantra.

Offer vermillion, rice grains, flowers on Yantra. Then chant Guru Mantra for ten minutes. Next with ***Vadyut rosary*** chant 21 rounds of this Mantra.

Om Kreem Shree Hleem Hreem Om

Do this daily for five days and then drop the rosary and yantra in a river or pond. Very soon favorable results would manifest in the form of a better job, boost in business, unexpected gains and other wonderful opportunities.

Sadhana Articles - 240

आयोजित साधना शिविरों के दृश्य

RNI No. **RAJ/BIL/2010/34546**
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2016-2018

Printing Date : 15-16 August, 2016
Posting Date : 21-22 August, 2016

माह : सितम्बर एवं अक्टूबर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
20-21 सितम्बर
7-8-12 अक्टूबर

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
17-18 सितम्बर
9-15-20 अक्टूबर

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
फोन : 0291-2433623, 2432209
0291-2432010